42

8, IV

त्रैमासिक

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

ग्रीष्माङ्क

वर्ष ८
सं० २००६

संख्या ४
आषाढ़



वार्षिक मूल्य ४। रु०

इस अङ्कका मूल्य १।) रु०

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

❀ विषय-सूची ❀

लेखक वृन्द !

आपका लेखनी-प्रसाद पाकर 'श्रीस्वाध्याय, पुष्ट एवं समृद्ध हो रहा है। हम तथा 'श्रीस्वाध्याय'के पाठक हृदय से आपके कृतज्ञ हैं। आगमी विजयादशमी (ता० १ अक्तूबर १९४९) पर 'श्रीस्वाध्याय' का नौवें वर्षका नववर्षाङ्क, पहले सब विशेषाङ्कोंसे अधिक सुन्दर एवं आकर्षक रूपमें प्रकाशित होरहा है। अतः आप नपना लेख, कविता, कहानी आदि संक्षिप्त हृदयस्पर्शी मौलिक सुन्दर भाषा में श्रावण शु० १५ ता० ८ अगस्त तक कार्यालयमें सम्पादकके पास भेजनेको कृपा करें। इस अवधिके पश्चात् आने वाला कोई भी लेख 'नववर्षाङ्क, में प्रकाशित न हो सकेगा। अधूरे अस्पष्ट और कागजके दोनों ओर लिखे हुए लेख भी प्रकाशित न हो सकेंगे।

विनीत—

सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय'सोलन (शिमला)

—ग्राहकोंको आवश्यक सूचना—

नवम वर्षका "नववर्षाङ्क"

—:o:—

'श्रीस्वाध्याय' ने भारतीय समाज और साहित्यकी अपनी छोटी सी आयुमें ही जो महत्त्वपूर्ण सेवाकी है, उससे समग्र हिन्दी संसार भलीभांति परिचित ही है। अब जगज्जननी महामायाकी असीम अनुकम्पासे आपका यह प्रिय पत्र अपने जीवनके आठ वर्ष पूर्ण कर आगामी आश्विनके अङ्कसे नवम वर्षमें पदार्पण करेगा। यह नववर्षाङ्क पिछले सब अङ्कोंसे बढ़ चढ़ कर अपूर्व सजधजके साथ प्रकाशित हो रहा है। 'श्रीस्वाध्याय' के वर्तमान सभी स्तम्भों और विषयों का समावेश तो इसमें रहेगा ही, साथ ही आगामी वर्ष से अनेक परिवर्द्धन किये जावेंगे, उनमें से कुछ ये होंगे—

आगामी वर्षकी विशेषताएँ

(१) सामुद्रिक (हस्तरेखा) विज्ञान पर गवेषणापूर्ण सचित्र लेख।

(२) ज्योतिषकी प्रारम्भिक शिक्षापद्धति सोदाहरण सरल भाषा में।

(३) पाश्चात्त्य पद्धतिके अनुसार लग्न और राशियोंके प्रत्येक अंशका विस्तृत फल।

(४) फलित ज्योतिष, तेजी मंदी और आयुर्वेदके गुप्त सिद्धप्रयोग।

(इन लेखों से एक साधारण हिन्दी जानने वाला व्यक्ति भी घर बैठे ज्योतिष भलीभांति सीख सकेगा।)

(५) भारतके सुप्रसिद्ध अनुभवी ज्योतिषाचार्योंकी राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि प्रत्येक सामयिक गतिविधि पर अधिकारपूर्ण भविष्य वाणियाँ और व्यापारियोंके लाभार्थ प्रत्येक वस्तुकी तेजी मंदीके अनुभूत चांस, लम्बी लाइनें और दैनिक रुख।

(६) पाठकों के पत्र और प्रश्नोत्तर रूप में विभिन्न विषयोंका शंका समाधान।

(७) भारत के प्रमुख लेखकों और कलाकारोंकी उत्कृष्ट कहानी, कविता आदि कलाकृतियां।

(८) देश विदेश के अनेक सामयिक नयनाभिराम चित्र आदि आदि।

अधिक क्या आगामी नववर्षाङ्क बिल्कुल नए टाइपमें सर्वाङ्ग सुन्दर विशाल रूपमें छप कर विजया दशमी पर पाठकोंके हाथों में होगा। आगामी अङ्कसे भारत-विख्यात विद्वान लेखकों एवं कलाकारोंका स्थायी सहयोग प्राप्त कर लिया गया है।

नववर्षाङ्कके कुछ विद्वान् लेखक—

श्री डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल M. A., PH.D., श्री प्रो० भगवद्दत्त जी B.A. रिसर्चस्कालर, श्री पं० केदारनाथ जी राजज्योतिषी, श्री पं० सूर्यनारायण जी व्यास ज्योतिषाचार्य, महामहोपाध्याय श्री पं० परमेश्वरानन्द जी, श्री पं० दीनानाथ जी शास्त्री सारस्वत, श्री पं० बलदेव जी मिश्र ज्योतिषाचार्य, श्री पं० गंगाप्रसाद जी ज्योतिषाचार्य, श्री अवनीन्द्रकुमार जी विद्यालंकार, श्री प्रो० बी० सी गंगोली, श्री पं० रामबहादुर जी त्रिपाठी साहित्याचार्य, श्री प्रो० बलजिन्नाथजी शास्त्री, श्री पं० भवानीशंकर शास्त्री, साहित्यरत्न, श्री पं०गोपेश कुमार जी ओझा M. A.; श्री उदयशंकर जी भट्ट, श्री देवेन्द्र सत्यार्थी, श्री पं० गणेशदत्त जी, 'इन्द्र' विद्या-वाचस्पति आदि आदि।

वार्षिक मूल्य शीघ्र भेजिये

वर्तमान आठवें वर्षका यह अन्तिम अङ्क है। आपका वार्षिक मूल्य इस अङ्कके साथ समाप्त हो जाता है। अतः आप आगामी नवें वर्ष का वार्षिक मूल्य ४) चार रुपये भाद्रपद शु० १० ता० २ सितम्बर १९४९ तक कार्यालय में मनिआर्डर द्वारा भेज कर वर्ष भरके लिए अपनी सब प्रतियाँ सुरक्षित करा लीजिए। विजयादशमी का प्रथमाङ्क सचित्र विशेषांक के रूप में लगभग १२० पृष्ठ का होगा, इस अङ्क का मूल्य २) और प्रत्येक साधारण अङ्क का मूल्य ।) होगा। परन्तु ता० २ सितम्बर १९४९ तक मूल्य जमा करा देने वाले स्थायी ग्राहकोंको यह विशेषांक और वर्षभरके शेष सब अङ्क ४) में ही प्राप्त हो सकेंगे। मनीआर्डर फार्म इस अङ्क के साथ ही भेजा जा रहा है, अपना नाम और पूरा पता स्पष्ट लिखें।

नये ग्राहक बनाइये

हम अपने श्रीस्वाध्याय-परिवारके प्रत्येक पाठकसे प्रार्थना करते हैं कि वे स्वयं तो अपना मूल्य शीघ्र भिजवा ही दें। साथ ही कम से कम एक नये ग्राहक का मूल्य भी अवश्य भिजवा दें। यदि प्रत्येक सदस्य एक नया ग्राहक बना देंगे तो हम विश्वास दिलाते हैं कि आपकी चिर अभिलाषा तत्काल पूरी कर दी जायेगी, अर्थात् इसी नववर्षाङ्क से—**श्रीस्वाध्याय को मासिक बना दिया जायेगा।**

हमें पूर्ण आशा है कि स्वाध्याय परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने इस परम पुनीत कर्तव्यका पालन कर हमारे इस महान् राष्ट्रहितैषी कार्य में पूरा सहयोग देंगे। केवल एक नया ग्राहक बनाना आपके लिए कोई कठिन कार्य नहीं है। सातसे अधिक ग्राहकोंका मूल्य एक साथ भिजवाने वाले सज्जनों वा एजेण्टों को भरपूर कमीशन दिया जायेगा। पाँच ग्राहक बनाने वाले सज्जन को वर्ष भर तक। 'श्रीस्वाध्याय' बिना मूल्य मिलेगा।

वी० पी० नहीं भेजी जायेगी

जो ग्राहक वी० पी० से श्री स्वाध्याय मँगवायेंगे उन्हें हम विश्वास नहीं दिला सकते कि नववर्षाङ्क ठीक समय पर वी० पी० द्वारा भेजेंगे ही, क्यों कि यदि गतवर्षोंकी भांति इस वर्ष भी 'नववर्षाङ्क' छपनेसे पहिले ही पुराने ग्राहकोंका मूल्य अधिक मात्रामें प्राप्त हो गया तो फिर हम किसी भी ग्राहक को वी० पी० से 'नववर्षाङ्क' न भेज सकेंगे। प्रत्येक ग्राहकोंके पास इस अङ्कमें हम अपना छपा हुआ मनीआर्डर फार्म भेज रहे हैं। वे अपना नाम पता लिखकर शीघ्र मूल्य भेज दें। यदि समय से पूर्व उनका मूल्य न आया तो पीछे उन्हें विशेषांक न मिल सकेगा।

'श्रीस्वाध्याय' के सहायकोंको विशेष लाभ

जो सज्जन कम से कम १०१) भेज कर 'श्रीस्वाध्याय, के सहायक बनेंगे उनकी जन्म-कुण्डली (यदि वे चाहेंगे तो) 'श्रीस्वाध्याय' के किसी भी अङ्कमें प्रकाशित कर किसी एक प्रश्नका शास्त्रीय निर्णय भारतके सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्यों द्वारा कराके उन्हें बहुसम्मत यथार्थ भविष्यफल बताया जायगा। यदि व्यापारी सहायक बनेंगे तो उनकी जन्मकुण्डली के अनुसार अनुकूल वस्तु का एक अनुभूत लाभप्रद चांस बताया जायगा।

पत्रव्यवहार का एक मात्र स्थायी पता—

व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

❀ श्रीः ❀

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—
सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य
श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

त्यागमूर्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज प्रधानमन्त्री स०ध०प्र० सभा पंजाब।
धर्ममार्त्तण्ड राजा साहब श्री० १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी०आई०ई० सोलन।
रावराजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।
श्रीमान् दीवान रुद्रशरणप्रतापसिंहजी ज़मींदार साहब उपरोड़ा स्टेट सी० पी०।

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।
आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी सीताबर्डी, नागपुर।
श्री वेणुभाई एम० रावल पाचोरा (पूर्वखान्देश)।
रावबहादुर धर्मालङ्कार श्री १०५ मान् महाराज प्रभुनाथसिंहजी नरसिंहगढ़।
श्री १०५ महाराज रणदीपसिंहजी साहब नाहन (सिरमौर)।
अचरोलके राजाधिराज श्री १०५ मान् हरिसिंहजी उदयपुर (मेवाड़)।
श्री १०५ मान् राजकुमार मानसिंहजी बार. एट-ला, बनेड़ा (मेवाड़)।
श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार भरतपुर।
श्रीमान् स्व० अक्रियानन्दजी (श्री चुन्नीलालजी) भरतपुर।
श्रीमान् पं० हरिशङ्करजी शास्त्री ज्योतिषरत्न खिड़कियां सी० पी०।
श्रीमान् दानवीर सेठ श्रीगोपालजी मोहता उदयपुर (मेवाड़)।
श्रीमान् सरदार जगजीतसिंहजी ढिल्लों बी० ए०, एल० एल० बी० नाभा।
श्रीमान् कुँवर शिवसिंहजी बी० ए० एल० एल० बी० सेशनजज सोलन।
श्रीमान् लाला शिवप्रसादजी आढती खड़ (पंजाब)।
श्रीमान् ला० बाँकेलाल राजकुमार खड़ (पंजाब)।

सम्पादक और व्यवस्थापक—

ज्यो० मा० ज्यो०र० श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्यायके' सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' के नियम

(१) 'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४) रु० और एक प्रतिका १।) है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्यायसदनकी ओर से प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणा-पूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पते से भेजने चाहिए।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम—

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमास विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहे तो बीच में किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४) न लेकर वर्ष-समाप्ति तक (आषाढ़ तक) के शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अङ्कका मूल्य १।) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मँगानेसे उक्त मूल्य में चार आने अधिक रजिस्ट्री खर्च के बढ़ जायेंगे।

वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मँगवाने में ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है। गत पञ्चमवर्षका 'श्रीष्पाङ्क' और विगत चतुर्थवर्षका 'नववर्षाङ्क' तथा गत सातवेंवर्ष का 'वसन्ताङ्क' अब कार्यालय में नहीं है, अतः इन अङ्कोंके लिए अब कोई सज्जन न लिखें।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होने की तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

★

श्रीस्वाध्यायको—

भारतीय विचक्षणवर्ग किस दृष्टिसे देखता है

दिल्लीका सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय दैनिक 'हिन्दुस्तान' अपने २२ मई १९४९ के अङ्कमें लिखता है—

"........भारतीय संस्कृतिका पोषक यह त्रैमासिक पत्र गत आठ वर्षोंसे देशकी अमूल्य सेवा कर रहा है। इस पत्रके सभी लेख राष्ट्रीयताके भावोंसे ओतप्रोत और अनुशीलनता पूर्ण होते हैं। पत्रके मोक्ष, धर्म, अर्थ, काम और इतिहास पांच स्तम्भ हैं। इन्हीं स्तम्भों द्वारा ऐसा कोई प्राचीन और अर्वाचीन विषय नहीं है जिसके सम्बन्धमें पत्रमें कोई पठनीय सामग्री न मिले। ऐसा जनोपयोगी पत्र मासिक रूपमें निकलना चाहिए जिससे राजनीतिके बवण्डरसे अशान्त संसार कुछ तो आश्वस्त हो।...........'स्वाध्याय' को जनतासे प्रोत्साहन मिलना चाहिए, ताकि वह परमपुनीत भारतीय संस्कृतिका अहर्निश प्रचार करनेमें समर्थ हो।"

× × ×

कलकत्ता विश्वविद्यालयके दर्शन शास्त्रके भूत पू० प्रोफेसर तथा जम्मूकालेज और सनातनधर्म कालेज लाहौरके भू० पू० प्रिन्सिपल वयोवृद्ध विद्वान् श्री रामदासजी भादुरी एम० ए० पी० एच० डी० महोदय लिखते हैं—

"......श्रीस्वाध्यायका गत ५ वर्षोंसे मैं निरन्तर अध्ययन कर रहा हूँ। यह पत्र भारतमें अपने ढङ्गका सम्भवतः अद्वितीय ही है और इसके सम्पादक वर्तमान कालके प्रमुखतम ज्योतिश्शास्त्रियोंमें से हैं। सामान्यतः यह स्वीकार किया जाता है कि ज्योतिविज्ञान हिंदू विचारकोंकी बहुत बड़ी सफलताका प्रतीक है, किन्तु राज्याश्रयके अभावमें उसका क्रमिक ह्रास होता गया है। इसलिए प्रत्येक देश-प्रेमी भारतीयका यह कर्त्तव्य है कि वह इस पत्रको जिसने कि गत आठ वर्षों से देशके बुद्धिजीवी वर्गकी अमूल्य सेवा की है सहयोग दे।..........."

× × ×

आर्यजगत्‌का राजस्थान सुप्रसिद्ध पाक्षिक 'आर्यमार्तण्ड' अपने ७ वें अङ्क (ज्येष्ठ शु० ६ सं० २००६ वि०) में लिखता है—

"........जो प्रौढ़ पाण्डित्यपूर्ण सांस्कृतिके लेख इसमें समय समय पर प्रकाशित होते रहते हैं उनसे यह पत्रिका प्राचीनवाङ्‌मयके प्रचारका उत्तम साधन भी हो गई है।..........परमात्मा करे यह फले फूले और हमारे प्राचीन आर्यगौरवकी धाक सारे विश्व पर बैठानेमें सफल हो।"

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्यायके' सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' के नियम

(१) 'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४) रु० और एक प्रतिका १।) है।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्यायसदनकी ओर से प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणा-पूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पते से भेजने चाहिए।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम—

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमास विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहे तो बीच में किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४) न लेकर वर्ष-समाप्ति तक (आषाढ़ तक) के शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अङ्कका मूल्य १।) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मँगानेसे उक्त मूल्य में चार आने अधिक रजिस्ट्री खर्च के बढ़ जायेंगे।

वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मँगवाने में ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है। गत पञ्चमवर्षका 'ग्रीष्माङ्क' और विगत चतुर्थवर्षका 'नववर्षाङ्क' तथा गत सातवेंवर्ष का 'वसन्ताङ्क' अब कार्यालय में नहीं है, अतः इन अङ्कोंके लिए अब कोई सज्जन न लिखें।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होने की तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

★

श्रीस्वाध्यायको—

भारतीय विचक्षणवर्ग किस दृष्टिसे देखता है

दिल्लीका सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय दैनिक 'हिन्दुस्तान' अपने २२ मई १९४९ के अङ्कमें लिखता है—

"........भारतीय संस्कृतिका पोषक यह त्रैमासिक पत्र गत आठ वर्षोंसे देशकी अमूल्य सेवा कर रहा है। इस पत्रके सभी लेख राष्ट्रीयताके भावोंसे ओतप्रोत और अनुशीलनता पूर्ण होते हैं। पत्रके मोक्ष, धर्म, अर्थ, काम और इतिहास पांच स्तम्भ हैं। इन्हीं स्तम्भों द्वारा ऐसा कोई प्राचीन और अर्वाचीन विषय नहीं है जिसके सम्बन्धमें पत्रमें कोई पठनीय सामग्री न मिले। ऐसा जनोपयोगी पत्र मासिक रूपमें निकलना चाहिए जिससे राजनीतिके बवण्डरसे अशान्त संसार कुछ तो आश्वस्त हो।..........'स्वाध्याय' को जनतासे प्रोत्साहन मिलना चाहिए, ताकि वह परमपुनीत भारतीय संस्कृतिका अहर्निश प्रचार करनेमें समर्थ हो।"

× × ×

कलकत्ता विश्वविद्यालयके दर्शन शास्त्रके भूत पू० प्रोफेसर तथा जम्मूकालेज और सनातनधर्म कालेज लाहौरके भू० पू० प्रिन्सिपल वयोवृद्ध विद्वान् श्री रामदासजी भादुरी एम० ए० पी० एच० डी० महोदय लिखते हैं—

"......श्रीस्वाध्यायका गत ५ वर्षोंसे मैं निरन्तर अध्ययन कर रहा हूँ। यह पत्र भारतमें अपने ढङ्गका सम्भवतः अद्वितीय ही है और इसके सम्पादक वर्तमान कालके प्रमुखतम ज्योतिश्शास्त्रियोंमें से हैं। सामान्यतः यह स्वीकार किया जाता है कि ज्योतिविज्ञान हिन्दू विचारकोंकी बहुत बड़ी सफलताका प्रतीक है, किन्तु राज्याश्रयके अभावमें उसका क्रमिक ह्रास होता गया है। इसलिए प्रत्येक देश-प्रेमी भारतीयका यह कर्त्तव्य है कि वह इस पत्रको जिसने कि गत आठ वर्षों से देशके बुद्धिजीवी वर्गकी अमूल्य सेवा की है सहयोग दे।.........."

× × ×

आर्यजगत्का राजस्थान सुप्रसिद्ध पाक्षिक 'आर्यमार्तण्ड' अपने ७ वें अङ्क (ज्येष्ठ शु० ६ सं० २००६ वि०) में लिखता है—

"........जो प्रौढ़ पाण्डित्यक सांस्कृतिके लेख इसमें समय समय पर प्रकाशित होते रहते हैं उनसे यह पत्रिका प्राचीनवाङ्मयके प्रचारका उत्तम साधन भी हो गई है।.........परमात्मा करे यह फले फूले और हमारे प्राचीन आर्यगौरवकी धाक सारे विश्व पर बैठानेमें सफल हो।"

श्रीस्वाध्यायमें क्या क्या होगा ?

विज्ञ पाठकोंको 'श्रीस्वाध्याय' के उद्देश्य तथा नीति का ज्ञान तो भलीभांति हो ही गया है इसमें जो मोक्ष दि पाँच प्रधान स्तम्भ रक्खे गये हैं—उनके अन्तर्गत किन-किन विषयों पर लेख लिखे जा सकते हैं, इसकी एक संक्षिप्त सूची हम नीचे दे रहे हैं। इस तालिका द्वारा हमारे विद्वान् लेखकोंको विषय चुननेमें सुविधा होगी।

मोक्षस्तम्भमें—

भारतीय दर्शनोंका संक्षिप्त परिचय। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त (शाङ्कर रामानुज निम्बार्क माध्व श्रीकण्ठ भास्कर आदि मतोंका संक्षिप्त सार) शैव (त्रिक प्रत्यभिज्ञा पाशुपत आदि मतोंका संक्षिप्त परिचय) शाक्त (दक्षिण वाम कौल तन्त्र सिद्धान्त त्रैपुर आदि मतों के संक्षिप्त परिचय) पारमार्थिक मोक्ष, व्यावहारिक मोक्ष आदि आदि।

धर्मस्तम्भमें—

वेदोंका स्वाध्याय। राष्ट्रिय शिक्षा। घरेलू शिक्षा। स्त्री शिक्षा। धर्मरहस्य। धर्ममें स्मृतियोंका स्थान। कल्पसूत्र। स्त्रीधन। दत्तक-दाय। दाय-भाग। प्रायश्चित्त विधान। पर्व व्रतोत्सवादि निर्णय। मुहूर्त्तादि निर्णय। पर्व किस प्रकार मनाये जायँ। पर्व और त्यौहारोंका राष्ट्रिय महत्त्व। पर्व मनानेमें धार्मिक दृष्टिसे हानि लाभका विचार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार तात्कालिक शुभाशुभ योग और भविष्य वाणियां। राशिफल। खगोलके ग्रह नक्षत्रादिकों का परिचय।

अर्थस्तम्भमें—

अर्थ शास्त्र। चाणक्यके विचार। घरकी व्यवस्था। पारिवारिक आय व्यय। राष्ट्रको समृद्ध करनेके उपाय। यातायातमें अर्थ प्राप्ति। व्यापार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार महर्घ समर्घ (तेजी मन्दी) विचार। खानोंसे अर्थ प्राप्ति। आर्थिक दृष्टिसे कलाओंका विचार। पर्व और आर्थिक दृष्टि। युद्धसे आर्थिक हानि लाभ। कृषि (धान्य, फल, शाक, भाजी, ईख, कपास आदिके उत्पादनसे अर्थ प्राप्ति आदि आदि।

कामस्तम्भमें—

आयुर्वेद। शरीरके सभी अवयवोंको सुन्दर सुदृढ़ स्वस्थ ओजस्वी बनानेके उपाय। दीर्घजीवी बननेके उपाय। रसोईघर। कलाकौशल। घरकी स्वच्छता और पवित्रता। बच्चोंका पालन पोषण। भृत्योंके साथ व्यवहार। पशुपालन आदि आदि।

इतिहासस्तम्भमें—

इतिहास जाननेके साधन (ताम्रपत्र दानपत्र मुद्रा शिलालेखादि) संस्कृत-साहित्यका इतिहास। भारतीय ग्रन्थ और ग्रन्थकारोंके परिचय। भौगोलिक परिचय, देश की सीमाएँ नदियाँ पर्वत तीर्थ नगर ग्राम आदि। प्राचीनकालमें भूमण्डलके समस्त देश प्रान्त नगरादिकोंके जो नाम और सीमा थी उनके वर्तमान नाम और सीमाका विवेचन। महापुरुषों (दानवीर युद्धवीर धर्मवीर मृत्युवीर शास्त्रार्थवीर विशिष्टविद्वान भगवद्भक्त राष्ट्रभक्त सिद्ध सती ज्ञानी आदि) के जीवन-चरित्र। प्रत्येक वस्तु पर ऐतिहासिक दृष्टिसे विचार।

विशेष—

इसके अतिरिक्त 'श्रीस्वाध्याय' में कुछ सामयिक लेख भी रहेंगे। प्रत्येक अङ्ककी त्रैमासिक अवधिमें जो-जो विशेष पर्व त्योहार या जिन-जिन अवतारों एवं महापुरुषोंकी जयन्तियाँ आयेंगी उन-उन पर विशेष रूपसे प्रकाश डाला जायेगा। आगामी अङ्क (शरदङ्क) के लिए विद्वान् महानुभाव सर्वप्रथम निम्न विषयों पर सुविचारपूर्ण लेख भेजनेकी अवश्य कृपा करें—

विजयादशमी, दशहरा, शरत्पूर्णिमा, श्रीहनुमान्‌जी का संक्षिप्त जीवनचरित्र, दीपावली, अन्नकूट, भ्रातृद्वितीया, वर्ष्टिकाकर्षण (रस्साकशी), गोपाष्टमी, श्रीमहाकालभैरव-जयन्ती, श्रीदत्तजयन्ती, मल्लद्वादशी आदि आदि।

सब लेख श्रावण शु० १५ ता० ८ अगस्त १९४६ तक सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) इस पते पर पहुँचना आवश्यक है।

श्रीस्वाध्याय

[ग्रीष्माङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ [राष्ट्रलोक]

वर्ष ८ | सोलन, आषाढ शु० १० मङ्गलवार सं० २००६ वि० | संख्या ४

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पन्नां लिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥

—अ० वा० आचार्य

कृषकोंके प्रति वेदघोष

युनक्त सीरा वियुगा तनुध्वं कृते योनौ वपतेह बीजम् ।
गिरा च श्रुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्यः पक्वमेयात् ॥
शुन ᳫं सुफाला विकृषन्तु भूमि ᳫं शुनं कीनाशा अभियन्तु वाहैः ।
शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीः कर्तनास्मे ॥

(यजुर्वेद १२ अ० ६८।६९ मं०)

कृषको ! हलोंको बैलोंसे जोड़कर विशाल युगोंको विस्तृत करो। और इस अच्छी प्रकार जुती भूमिमें बीज बोओ। वेद मन्त्रपाठसे अन्न पुष्ट होगा और शीघ्र ही पकने वाला धान्य दात्रीसे कटकर तुम्हारे पास एकत्र होगा।

किसान सुखपूर्वक अच्छे फालोंसे युक्त हलोंसे भूमि जोतें और पुष्ट बैलोंकी जोड़ी सुखसे हल खींचे। वायु और आदित्य जलवृष्टिसे भली भांति भूमिको सींचे। फिर किसान सफल खेती काट कर लावें ॥

सम्पादकीय विचार—

राजतन्त्र और प्रजातन्त्र

कभी समय था जब राजा प्रजाके पवित्र सम्बन्धके साथ राजतन्त्रका अभ्युदय हुआ। आज उसके विपरीत वातावरण है, चारों ओर साम्यवादकी ध्वनि गूँज रही है। कहना न होगा कि जब किसी सामाजिक व्यवस्थाकी जीवनी-शक्ति नष्ट हो जाती है तो उसका स्थान अभिनव शक्तिसे ओतप्रोत कोई दूसरी व्यवस्था ले लेती है और उस प्राचीन पद्धतिको वह समाज ही जिसने उसका कभी आवश्यक समझ निर्माण किया था विनष्ट कर डालता है। राजतन्त्रके विषयमें भी यही बात कही जा सकती है।

राजतन्त्रकी उत्पत्ति कब और कैसे हुई; उसका विकास और पतन क्यों हुआ, यह एक विचारणीय समस्या है। सृष्टिके आदिकालमें मानव अपनी प्रारम्भिक अवस्थामें कालयापन कर रहा था। उसके समक्ष ज्यों ज्यों कठिनाइयाँ उपस्थित हुईं उनके समाधानके लिए नियमोंका जाल बिछता गया। स्वभावतः स्वतन्त्र मानवकी मनचाही स्वतन्त्रताने अशान्ति उत्पन्न कर दी, पर दैवी प्रेरणासे उससे समाजको बचानेके लिए किसी एक व्यक्तिमें इतनी पर्याप्त शक्तिका होना आवश्यक समझा गया, जिससे वह समाज की रक्षा करनेमें समर्थ हो सके।

मनुस्मृतिमें जिससे मानव व्यवस्था शास्त्रका प्रथम पृष्ठ प्रारम्भ होता है, इसी व्यक्तिविशेषको 'राजा' शब्दसे पुकारा गया है।

अराजके हि लोकेऽस्मिन् सर्वतो विद्रुतो भयात्।
रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजत् प्रभुः॥
इन्द्रानिलयमार्काणामग्नेश्च वरुणस्य च।
चन्द्रवित्तेशयोश्चैव मात्रा निर्हृत्य शाश्वतीः॥
यस्मादेषां सुरेन्द्राणां मात्राभ्यो निर्मितो नृपः।
तस्मादभिभवत्येष सर्वभूतानि तेजसा॥

[अर्थात् जब समाज पर नियन्त्रण करने वाली कोई शक्ति नहीं थी, चारों ओर भय तथा सङ्कटका वातावरण था तब उससे बचानेके लिए ईश्वरने राजाको उत्पन्न किया। एक ही व्यक्तिमें वह सारी शक्ति ला दी गई जिससे समाज का भलीभांति नियमन किया जा सके। इन्द्र, वायु, यम, सूर्य, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा तथा कुबेरकी शाश्वत् दैवी शक्तियोंसे सम्पन्न यह राजा अपने तेजसे प्राणीमात्र पर अधिकार रखने एवं शासन करनेमें समर्थ हुआ।]

उपरोक्त आठ दैवी शक्तियोंसे राजाकी उत्पत्ति बता कर स्मृतिकारने इस महत्वपूर्ण रहस्य पर प्रकाश डाला है कि—राजाको इन्द्रकी भांति बुद्धिमान्, वायुकी भांति बलवान् एवं व्यापक, यम जैसा नियामक, सूर्यकी भांति लोककी अविद्या-तमिस्राका विनाश कर ज्ञानालोक फैलाने वाला, अग्निकी भांति तेजस्वी, वरुणकी भांति शीतल एवं रसवर्षासे धराको रसभरी करने वाला, चन्द्रमाकी भांति सर्वप्रिय एव सुन्दर और कुबेर जैसा अक्षय धन भण्डारसे परिपूर्ण होना चाहिए। यहां तक तो राजाका स्वरूप हुआ। उसके सर्व साधारण दुर्लभ कर्तव्य कर्म पर भी एक दृष्टि डालिए—

अग्निपुराणके २२३ वें अध्यायमें राजधर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि—"वह राजा नरकगामी होता है जिसके राज्यमें प्रजा पीड़ित होती है। गोस्वामी श्री तुलसीदासजी ने भी लिखा है—"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवसि नरक अधिकारी।" यदि राजा अपने लोकरक्षण कार्यमें जागरूक है तो उसे यज्ञ और तप

करनेकी भी कोई आवश्यकता नहीं है; अन्यथा उसका सारा यज्ञ तप व्यर्थ है। प्रजाकी सुरक्षितावस्थामें उसके लिए घर ही स्वर्ग है। और यदि प्रजा अरक्षित है तो उसका राज-भवन ही नरक है। राजा, प्रजाके पाप पुण्यके छठवें भाग का अधिकारी होता है अतः उसे पापकर्म रोक कर पुण्या-चरण पर जोर देना चाहिए। प्रजाको शोषण करने वाली सभी शक्तियोंका दमन करते हुए कायस्थोंसे विशेष रूपसे उसको बचाना चाहिए।

इसी राजधर्म प्रकरणमें २२५ वें अध्यायमें कहा गया है कि—"राजाको समय पर तीक्ष्ण एवं मृदु होना चाहिए। राज्यके सात प्रमुख अङ्ग स्वामी, मन्त्री, जनपद, दुर्ग, दण्ड, कोष, मित्र और धर्मज्ञोंकी रक्षा होनी चाहिये। राजाको चतुर्विद्यामें निष्णात, अनाथोंका नाथ, जितेन्द्रिय, एवं स्मितभाषी होना चाहिए। वर्णाश्रमका रक्षक, बगुलेकी भांति धनचिन्तक, सिंहकी भांति पराक्रमी, भेड़िएकी भांति आक्रामक, शश (खरगोश) की भांति गतिमान्, शूकरवत् दृढ़ प्रहारी, मयूरकी भांति विचित्र वेषधारी, अश्वकी भांति दृढ़ भक्तिमान् कोकिल जैसा मधुरभाषी और कौएकी भांति सशङ्क होना चाहिए। इस प्रकार राजाको पशु पक्षियोंके जीवनसे भी शिक्षा लेकर सर्वगुणग्राही बनना चाहिए।

इन सारी बातोंका एकमात्र सारांश यही है—राजा वही कहलानेका अधिकारी हो सकता है जो सर्वगुणग्राही सर्व-शक्तिसम्पन्न एवं जितेन्द्रिय हो। लोकानुरञ्जन ही एकमात्र जिसका कर्तव्य तथा धर्म हो। भारतने उस आदर्श राम-राज्यको देखा है जिसमें न तो कोई अनाथ था और न दीन हीन विधवा। सभी सुखी सम्पन्न एवं सदाचारी थे। प्रजा-नुरञ्जन व्रतका इतनी कठोरतासे राजा द्वारा पालन किया जाता था कि स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामने जनकनन्दिनी पतिव्रता सीता महारानीका तनिक लोकापवादके भयसे ही सहर्ष परित्याग कर दिया था।

जनता जनार्दनकी सेवा तथा सुराज्यके लिए ही तपस्वी सम्राट भरतने चक्रवर्ती साम्राज्यके वैभवको ठुकराकर कठोर संयमके साथ प्रजाके सेवा व्रतको अपनाया था। महाराजा दुष्यन्तने अपने राज्यमें डिण्डिमघोष किया था कि "प्रजा में जिसका जो कोई सगा सम्बन्धी मर जाय वह मुझे ही अपना वह सम्बन्धी समझे।" इस प्रकार वे भी प्रजाको किसी भी दशामें खिन्न एवं दुखी नहीं देखना चाहते थे।

मध्यकालीन हिन्दू राजाओंका इतिहास साक्षी है कि मध्यकालमें प्रजा सर्वथा सुखी थी। धरा धनधान्यसे पूरित थी। सत्य और अस्तेयका इतना प्राबल्य था कि भारतीय अपने घरोंमें ताला नहीं लगाते थे।

परन्तु आज ये सारी बातें कोरी कल्पनाके अतिरिक्त कुछ नहीं जान पड़तीं। समयके फेरसे वे हिन्दु राजा जिनके पूर्वज कभी आदर्श राजा थे आज विलासिता एवं राज्योन्मादसे उन्मत्त हो चले थे। परिणामस्वरूप देशी राज्योंकी प्रजा अपनेको विदेशी राज्यकी प्रजासे भी दीन हीन समझने लगी थी। इस कटु सत्य पर पर्दा नहीं डाला जा सकता कि देशी राज्योंमें आधुनिक यातायातके साधनों शिक्षा तथा अन्य औद्योगिक कल कारखानोंका अत्यधिक अभाव था, साथ ही अनेक भ्रष्टाचार भी फैला हुआ था, अतः विदेशी सत्ताके हटनेके साथ ही देशी राज्योंकी प्रजा का भी स्वतन्त्र सङ्गठन होना स्वभाविक था। और आज तो समस्त देशी राज्य एवं बृटिश भारत (पाकिस्तान छोड़) एक ही तिरङ्गे झण्डेके नीचे है।

इस महनीय एवं विशाल परिवर्तनके पश्चात् भी परि-वर्तनकी गति धीमी नहीं है। राष्ट्रपिता बापूके निर्दिष्ट मार्ग पर चलकर देशने स्वराज्य तो प्राप्त कर लिया है, परन्तु बापूके तथाकथित 'सुराज्य' अथवा 'रामराज्य' से हम कोसों दूर हैं। आज भी किसान और श्रमिकवर्गकी उदर-ज्वाला भर पेट भोजनके अभावमें उनके रक्त और मांस को भस्मभूत कर उन्हें केवल अस्थिचर्मावशेष बना रही है। साधारण वस्त्रके अभावमें हमारी माँ बहनें अपनी लाज भी बचानेमें असमर्थ हैं। परन्तु अभी तक वर्तमान शासन हमारी इन कठिनाइयोंको पूरा करनेमें सफल नहीं हुआ है।

इस अवसरसे लाभ उठाकर साम्यवादी तथा समाज-वादी पार्टी श्रमजीवियों और किसानोंको अपने लाल झण्डेके नीचे सङ्गठन कर रही है। और उन्हें प्रलोभन दे रही है कि "हमारा शासन होने पर न तो कोई भूखा होगा और न नङ्गा। संसारसे पूंजीवाद उठ जायगा और धनी निर्धन का भेद मिट जायगा।" नहीं कहा जासकता कि इस प्रकारके कथनोंमें सत्यांश कितना है। पर भविष्य वर्तमानकी अपेक्षा

सदा सम्मोहक हुआ करता है, अतः उधर जनताका झुकाव कोई नयी बात न होगी।

हमने वर्षों राजतन्त्रको देखा और सुना है। आज स्वराज्य भी देख रहे हैं और साम्यवाद तथा समाजवादके सम्मोहक सपने भी हमारे सम्मुख आ रहे हैं। यदि इन सबका उद्देश्य एक ही है कि राज्यकी प्रजा सर्वथा सुखी रहे, कोई भूखा और नङ्गा न रहे तो राजतन्त्र और इस अभिनव प्रजातन्त्रमें हमें कोई अन्तर मौलिक नहीं दिखाई देता। राजतन्त्रमें राजाओंकी अपने राज्य तथा प्रजासे ममता होती थी, परन्तु प्रजातन्त्रके अधिकारी वर्गको सदा खटका बना रहता है कि कब भी पदच्युत कर दिये जायेंगे। अतः उनकी उसके साथ कोई ममता नहीं होती। हां, इस आशङ्कासे कुछ योग्यता एवं उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करते भी हैं तो अधिकांश अवसरसे लाभ उठाकर अपने स्वार्थ का उल्लू सीधा करते हैं। फलतः आए दिन अनुत्तरदायित्व, अधिकारका दुरुपयोग और अनेक भ्रष्टाचार फैल रहे हैं, परन्तु राजतन्त्रका प्रयोग शताब्दियों यहां सफल प्रमाणित हुआ है। बीचमें उसमें कुछ दोष अवश्य आ गये थे, परन्तु वे केन्द्रीय शक्तिकी निर्बलताके द्योतक थे। हिन्दूशासनकालमें केवल एक ही दोष था कि केन्द्रमें शक्तिका अभाव होनेसे परस्पर वैमनस्य, स्वेच्छाचार बढ़ चला था और अन्तमें भारतीय राजतन्त्र पंगु हो गया, तथा विदेशी राजसत्ताने अपना अधिकार जमा लिया, अन्यथा वह कहीं इन सब तन्त्रों एवं वादोंसे अच्छा ही नहीं सर्वश्रेष्ठ था।

धर्म—सूत्र

[ले०—श्री डा० वासुदेवशरणजी अग्रवाल M. A., Ph. D.]

१. सम्प्रदाय या मतमतान्तरके साथ धर्म शब्दको गड़बड़ाने की भूलसे बचना चाहिए।

२. धर्मपिण्ड और ब्रह्माण्डके धारणात्मक नियमोंकी संज्ञा है

३. धारणाद्धर्मं इत्याहुः धर्मो धारयति प्रजाः। (व्यास)

४. धारणा करने वाले, सृष्टि और जीवनकी विधृति या टेक रूप जो नियम हैं उन्हींकी वैदिक संज्ञा ऋत थी।

५. ऋतका अखण्ड राज्य सृष्टिमें है। ऋतसे कोई बच नहीं सकता, ऋतका कोई उल्लंघन कर नहीं सकता—ऋतं नात्येति कश्चन।

६. ऋतसे ही सामाजिक धर्मोंका जन्म होता है। विश्व का नीति धर्म ऋतमें समाया हुआ है।

७. ऋत या धर्म की प्राप्ति हममें प्रत्येक के लिये कर्त्तव्य प्रयत्न है।

८. धर्म जीवनका स्वयं रक्षक है धर्म स्वयं गुप्त है।

९. धर्म निर्जीव तत्त्व नहीं। धर्म आत्मा या चैतन्यका अनुशासन है। धर्मके द्वारा निरन्तर चैतन्यका ही प्रकाश निकलना चाहिए।

१०. धर्म आत्मानुभवकी वाणी है। भय, लोभ, अहंकार असत्य इनकी तनिक भी छाया धर्म पर पड़े तो धर्म का रूप काला हो जाता है।

११. मनुष्य यदि धर्मका पूरा प्रकाश न कर सके तो इससे धर्म कुंठित नहीं होता। धर्मकी स्थिति कुण्ठा रहित-या बैकुण्ठ है।

१२. धर्माचरण जीवनमें रस डालता है। जड़ पदार्थोंसे मिलने वाले रससे धर्मके जान बूझकर पालन करने का रस ऊपर है।

१३. धर्म जटिल और बोझिल नहीं है। धर्म जीवनको सरल और हलका बनाता है।

१४. धर्म व्यक्तिकी सीमाओंको विश्वके साथ मिलाता है। धर्म व्यक्तित्वकी घेरेबन्दी नहीं करता।

१५. धर्म एक साथ ही स्थितिशील और गतिशील है। धर्ममें ध्रुव भाव भी है, विस्तारभाव भी है।

१६. धर्म-प्राप्तिकी कसौटी मनुष्यका मन है। धर्मके प्रकाश तक पहुँचनेका आवश्यक द्वार इन्द्रियजय है।

१७. जड़की अशक्ति धर्मको विदित है।

१८. धर्म बिना प्रकट हुए नहीं रहता, किन्तु विज्ञापन धर्मको विकृत करने वाला आवरण है। वह धर्मके सत्यभावको हरता है। विज्ञापनके पीछे अहं है, अहं मनुष्यको खण्ड भावमें डालता है। धर्मके लिये अखण्ड चैतन्यकी स्थिति आवश्यक है।

रासलीला का रहस्य

[ले०—श्री प्रो० बलजिन्नाथ पण्डित शास्त्री M. A., M. O. L.]

ब्राह्मण ग्रन्थों का वाक्य है—"परोक्षप्रिया हि देवाः।" वेद में दो प्रकार के शब्द और वाक्य आते हैं। प्रत्यक्षवृत्ति और परोक्षवृत्ति। कहीं कहीं अत्यन्त परोक्षवृत्ति भी हुआ करते हैं। जिन मन्त्रोंका अर्थ व्याकरणकी सहायतासे मनुष्य अनायास ही समझ सकता है, उन्हें हम प्रत्यक्षवृत्ति कहते हैं। परन्तु जिनका अर्थ स्पष्ट न हो उन्हें परोक्षवृत्ति कहा जाता है। देवताओं को वे ही स्तुतियां पसन्द हैं जो परोक्षवृत्ति हों। इस कारण वैदिक कालसे ही ऋषि मुनि देवताओंकी स्तुति रहस्यमयी भाषा में किया करते थे। यहीं से रहस्यवादका आविर्भाव हुआ। आगे चल कर इस का खूब विकास हुआ, पुराणोंके अनेकों कथानक रहस्यवादमय ही हैं। भगवान् कृष्णकी रासलीला भी रहस्यपूर्ण है। रहस्यवाद भरी रचनाको पढते समय आपाततः कुछ अर्थ प्रतीत होता है, परन्तु सूक्ष्म विचार से उसका कोई विशेष अर्थ समझा जाता है। रासलीलाका रहस्य इस लेख में जरा स्पष्ट किया जा रहा है।

रासलीला का सम्बन्ध भागवतधर्म के साथ है। भागवत धर्मके ये मूल सिद्धान्त हैं—यह सारा संसार भगवान् वासुदेव की प्रकृतिका एक खेल है। प्रकृति वासुदेव की ही शक्ति है। इस प्रकृतिके ही बलसे वासुदेव परमेश्वर रूपमें तथा जीव रूपमें प्रकट हो जाता है। परमेश्वर रूपमें संसार पर शासन करता है। स्वयं जीव बन जाता है और स्वयं जीवों पर शासन करता है। पापियोंके बन्धनोंको दृढ़ बनाता जाता है और सज्जनोंके बन्धनोंको ढीला करता जाता है। उनको अपनी भक्ति दे देता है। उस भक्तिके द्वारा वे भगवान् वासुदेव की भावना करते करते अन्त में वासुदेवके ही सदृश बन जाते हैं। जैसे वासुदेव पूर्ण आनन्दघन हैं वैसे ही वे भक्त भी पूर्ण आनन्दघन ही बन जाते हैं। इसी दशाको मुक्ति कहा जाता है। इस प्रकार से जीवोंके बन्धन और मोक्षकी क्रीड़ा करना ही वासुदेवका स्वभाव है। यह बन्ध मोक्ष क्रीड़ा ही भगवान्की रासलीला है। इस क्रीडामें स्वयं भगवान् ही कृष्ण हैं और सभी जीव काय ही गोपियां हैं। भगवान् तो आनन्दघन हैं। उस आनन्द के ही लिए समस्त संसार के समस्त जीव उन्मत्त हो रहे हैं, सभी दिन रात आनन्दघन को ही ढूंढते हैं। भक्त जनों, महापुरुषों और योगियोंकी तो बात ही नहीं, अत्यन्त पापी जीव भी वस्तुतः आनन्दघन भगवान् के लिए उन्मत्त हो रहा है। क्योंकि कोई महापातकी जीव जो कुछ भी पापकर्म करता है वह अपने आनन्द के ही लिए करता है। उस पाप कर्मसे उसे किसी प्रकारसे आनन्दको प्राप्त करने ही की आशा रहती है। तभी वह ऐसा काम करता है। तो उसके समस्त कर्म आनन्दरूप परमेश्वर ही के लिए होते हैं। इस लिए वह महापातकी जीव भी वस्तुतः आनन्दघन भगवान् के प्रेम में उन्मत्त बनी हुई एक गोपी ही है। परन्तु उस गोपीका कर्म ऐसा है कि भगवान् उस से छिपते ही जाते हैं। उसको अपने विरह में तड़पाते हैं और उसे दर्शन तक नहीं देते। यह गोपी एक बिचारी अभागिन गोपी है। सौभाग्यवती गोपी तो वही है जो भगवान्के प्रेम में उन्मत्त तो है, परन्तु इस उन्माद में ऐसा कोई भी कर्म नहीं करती जिससे वासुदेव दूर छिप जाएं। वह भी वासुदेवको ढूंढती अवश्य है पर ढूंढने के लिए सच्चे रास्तेका आसरा लेती है। वह रास्ता है भक्तिका रास्ता। इस रास्तेका आश्रय लेकर उसका सौभाग्य बढ़ता जाता है। दिन प्रतिदिन भगवान् वासुदेव इस गोपीके साथ अधिक-अधिक प्रेम करने लगते हैं। धीरे धीरे भक्तिमें पक्की बनती हुई वह गोपी उस अवस्थाको प्राप्त हो जाती है जहां पर उसे राधिका कहा जाता है। राधिका स्वाधीनभर्तृका है। कृष्ण सदैव उसके पास रहते हैं। ऐसी गोपीको कभी भी भगवान् से विरह नहीं होता। उसके लिए तो सारा संसार ही वासुदेव है। वह अनन्त रूपोंमें वासुदेव के साथ सदैव रास की क्रीड़ा करती ही रहती है।

वासुदेव का स्वभाव है कि क्षण भरके लिए प्रत्येक गोपीके सामने प्रकट होकर छिप जाते हैं। गोपी उनके क्षणिक दर्शनसे उन्मत्त हो जाती है। जीवको इस संसारमें सत्कर्मसे या दुष्कर्मसे जो भी आनन्द का क्षणिक साक्षात्कार हो जाता है वह भगवान का ही क्षणिक दर्शन है। प्राचीन सिद्ध भट्ट नारायण ने कहा भी है—

त्रैलोके यत्र यः कश्चिद् यावान् आनन्द ईक्ष्यते।
स विन्दुर्यस्य तं वन्दे देवमानन्दसागरम् ॥(स्त०चिं०)

भाव यह है "तीनों लोकोंमें भी जो कोई भी आनन्द जहां कहीं भी अनुभवमें आता है वह आनन्दसागर भगवान का ही मानों एक आनन्द बिन्दु है।" इस प्रकार इन क्षणिक समागमों से समस्त जीव रूपी गोपियां आनन्दघन परमेश्वर पर आसक्त हो कर उन्मत्तों की भांति उसे ढूंढ रही हैं। कोई तो सच्चे मार्गसे ढूंढ़ते ढूढते अन्तमें उसे प्राप्त कर ही लेती है और राधिकाकी भांति स्वाधीनभर्तृका बन जाती है; या यों कहिए कि स्वयं राधिका ही बन जाती है। परन्तु कोई सैंकड़ों जन्मों तक उल्टे रास्ते से ही ढूंढ़ती रहती है। उसे क्षणिक समागम ही मिलते रहते हैं। सहस्रों जन्मों तक क्षणिक समागमों के पीछे उन्मत्त होती हुई ठोकरें खाती है। जब उसे भी सीधा मार्ग कभी हाथ आ जाता है तो वह भी क्रमशः राधिका ही बन जाती है। इस प्रकारसे इस बन्धमोक्षकी क्रीड़ामें वासुदेव प्रकट भी हो जाते हैं और छिपते भी हैं। अनुग्रह भी करते हैं और विग्रह भी। गोपियों को हंसाते भी हैं और रुलाते भी। उनसे विप्रलम्भ और सम्भोग के वैचित्र्यसे खेला करते हैं। किसीके साथ अनुकूल तो किसीके साथ दक्षिण, किसीके साथ धूर्त तो किसीके साथ शठ बनते रहते हैं। गोपियोंमेंसे कोई खण्डिता, तो कोई वासकसज्जा, कोई प्रोषितभर्तृका तो कोई अभिसारिका, कोई विप्रलब्धा तो कोई कलहान्तरिता, कोई विरहोत्कण्ठिता तो कोई स्वाधीनभर्तृका भी बनती रहती है। इस प्रकारसे यह रासकी लीला अनादिकालसे चलती आई है और सदैव चलती ही रहेगी।

रासके इस दार्शनिक रहस्यको न समझते हुए लोग पथ-भ्रष्ट हो रहे हैं। भगवान् वासुदेवको भी दूषित करते रहते हैं और भागवतधर्मको भी। अस्तु, भगवानका या धर्मका क्या बिगाड़ सकते हैं। स्वयं अपने आपको तथा अपने भाइयोंको नष्ट कर रहे हैं। सिनेमामें जो दृश्य भगवान वासुदेवके दिखाए जा रहे हैं उनसे तो सारा राष्ट्र ही पतनकी ओर जा रहा है। सभी नर नारी इस प्रकारके व्यवहारसे भगवान् वासुदेवसे दूर ही भागते रहते हैं। यह भी उनके ही रासकी एक लीला है। यदि हम लोग सुधर जाएं और इस बहिर्मुख मार्गको छोड़कर अन्तर्मुख मार्ग का आसरा लें तो हम भगवान् के समीप पहुंचते पहुँचते पूर्ण आनन्दघन ही बन जाएंगे। सब कुछ हमारे सत्प्रयत्न पर निर्भर है।

गीत

[श्री राजारामजी 'पुनीत' साहित्यरत्न]

कौन आकर स्वप्नमें मेरे लिपट जाता हृदयसे ?
जब कि उर मरु-सदृश जलता,
प्यासकी बढ़ती विकलता,
अश्रुकी गंगा बहाता कौन मेरे नेत्रद्वयसे ?
जब कि खाकर विफल-ठोकर
पतित बनता शक्ति खोकर,
कौन आशाकी विजय-वंशी बजा जाता प्रणयसे ?
मैं डिगूँ क्यों कष्ट पाकर ?
त्रास हो क्यों हार खाकर ?
है बना रहता सदा ही, प्रेम-मय नाता विजयसे।
यदि किसीकी चाह होती,
सरल दुर्गम राह होती,
अग्रसर होता सतत मैं, प्रेमसे लड़-लड़ प्रलयसे।
'तुम अमर हो तुम अभय हो,
सत्य—शिव—आनन्द—मय हो'
कौन यह पावन-वचन सस्नेह कह जाता विनयसे ?
कौन आकर स्वप्नमें मेरे लिपट जाता हृदयसे ?

सत्संगके क्षण

(वक्ता—श्रीभाईजी)

विश्वमें भगवत्स्मरण सर्वोपरि है। भगवत्स्मरणमें जो भी सहायक हो, उसको ग्रहण करें, और भगवानकी स्मृति न दिलाने वाली वस्तुओंको जिन्हें ग्रहण किये बिना काम न चल सके, उनको कम से कम ग्रहण करें। घरमें चोर हों और नये चोरोंसे सावधान न रहे तो फिर अन्दरके चोरों और बाहरवालोंका भी बल बढ़ता है। अतः नये काम क्रोधादिको बाहर रक्खें और पुराने जो पड़े हैं, उन्हें मारने का प्रयत्न करें। काम, क्रोध, लोभादि जितने भी प्रकारके दुर्गुण हैं, उन सबको बार-बार मिटानेके लिये प्रयत्न करें, उनका कभी लाड़ न करें। यह अत्यन्त हानिप्रद है। जिनका हृदय स्वच्छ है, जिनकी आंखें राग द्वेष रहित निर्मल वस्तु ही देखती हैं, उनके अतिरिक्त अन्य जन यदि दूसरोंके हितके लिये भी बुराई देखें तो उनकी हानि की आशङ्का रहती है। तमोगुणका सर्वथा नाश शरीर रहते होगा नहीं, पर उसे कमसे कम करनेका और सत्व बढ़ानेका प्रयत्न करें। अपने विचारोंको शुद्ध और पवित्र बनाये रक्खें, और इसके लिए निरन्तर चेष्टा करते रहें।

आंख कान, और जीभ इन तीनों इन्द्रियोंको भगवान् की ओर लगावें। देखना, सुनना और बोलना इन्हींके द्वारा होता है। हम समाचारपत्र पढ़कर किसी विचारसे प्रभावित होकर किसीसे राग और किसीसे द्वेष करने लग जाया करते हैं। पर साधकका वास्तविक लाभ तो इसमें कदापि नहीं। उसेतो प्रयत्न पूर्वक अपने ही आत्म-शोधनका काम करते रहना चाहिए, एक दो दिन नहीं, निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिये। कहा भी है—

तेरे भावे जो करे, भलो बुरो संसार।
'नारायण' तू बैठकर, अपनो भवन बुहार॥

तुम अपना घर स्वच्छ रक्खो। राग, द्वेष पूरित लोगों को उपदेश देनेका अधिकार इसी कारण शास्त्र नहीं देते किसी मत, किसी सम्प्रदायादिके बिना हो ऋषिवर्ग जगत् कल्याण एवं भगवत्प्रीतिके लिये उपदेश दिया करते थे कहनेका तात्पर्य यह है कि बुरे भाव और बुरे विचार हमारे मनमें न आने पावें। ऐसा कोई साहित्य न पढ़ें जिससे मनमें बुरे प्रभाव पड़ते हैं। लोग हमको भले ही कूप-मंडूक भले ही कह डालें पर हमको अपने लिये पूरी सावधानी रखनी चाहिए क्योंकि अन्तका सुख ही प्रधान है। यहां रहना ही कितने दिनके लिये है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि हम अकर्मण्य बन जायें। काम तो पूरी मुस्तैदीसे करते रहना चाहिए, पर इस ढंगसे कि आसक्तिके कारण हम री जान व्यर्थ न मारी जाय, हम अपने भगवानके सामने मुंह दिखाने योग्य न रहें। मनमें पवित्रता लानेके लिए आवश्यक है कि विनोदमें भी अपवित्र चर्चा न करें अपनी बात अपने लिए ही हानिप्रद और लाभदायक हो जाती है। अतः वाणी पर नियन्त्रण तो सावधानीसे रखना चाहिये।

ऐसी बानी बोलिये, अपना आपा खोय।
औरनको शीतल करे, आपहु शीतल होय॥

सत्य, प्रिय, हितकर वाणी उत्तम है—इसके अतिरिक्त स्वाध्याय और भगवत्सम्बन्धी ग्रन्थोंके अवलोकनमें लगे रहें। यह हम सबके लिये कल्याणका मार्ग है। मन प्रसन्न हो, सौम्य मौन हो, पवित्र हो, निगृहीत हो, यह जिसकी स्थिति है, उससे जगत्का बड़ा लाभ होता है। जिसका ओठ नहीं मन सदा हँसता रहता है वह अपना और जगतका हित करता है। काम, क्रोध, द्वेषकी अग्निमें जलनेवालेका मन नहीं हंसता। मन तो सदा उनका हंसता रहता है जो अपने पास परम सौन्दर्यमयी सुखकर मूर्ति देखते रहते हैं। यह स्थिति बड़ी सुन्दर होती है।

मन कैसे हंसे, इसके लिये हमें तो यही जंचता है कि मनको हंसाने वाला कोई निरन्तर साथ रहे। मननशील मन बने, यह प्रयत्न हो, और इसके लिये भगवच्चिन्तन भगवद्भजन अत्यन्त सुन्दर और सुगम है। अनियन्त्रित मन ही अपना शत्रु है, यह न भूलें। मन ही बन्धन और मुक्तिका कारण है। सुख दुख सब मन ही के कारण हैं।

प्रेषक— शिवनाथ दुबे

ज्योतिषका फल क्यों नहीं मिलता ?

[ले०—श्री प० दीनानाथजी शर्मा शास्त्री सारस्वत, विद्यावागीश, विद्याभूषण, विद्यानिधि]

कई लोगोंका यह विचार है कि—'ज्योतिषका पुस्तकों में कहा हुआ ग्रहोंका फल मिलता हुआ नहीं दखता; अतएव वह कल्पनामात्र है।' पर यह विचार ठीक नहीं। इस प्रकार तो आयुर्वेदके ग्रन्थ भी असत्य हो जाएगे; क्योंकि यदि उन्हींके अनुसार वैद्य उपचार करे; तो सफलता मिलती नहीं दीखती। पर जिस प्रकार चिकित्सकगण ग्रन्थोक्त रीतिमें देशकालानुसार कुछ परिवर्तन कर चिकित्सा में सफलता प्राप्त कर लेते हैं; इसी प्रकार फलितमें भी अनुभवकी अत्यन्त आवश्यकता होती है। पुस्तक स्थित ग्रहोंका सामान्य फल भला कैसे मिल सकता है ? जब तक कि—व्याकरणकी भाँत बाध्य-बाधकभाव अथवा उत्सर्ग अपवाद नियम अथवा ग्रहोंके बलाबल पर विचार न किया जाय ?

व्याकरणमें 'इकोयणचि' (६ ११७७) यह सूत्र 'सुध्युपास्यः' में प्रवृत्त होता है। 'श्रीशः' इत्यादिमें तो वैसा निमित्त होने पर भी उक्त सूत्र नहीं लगता; बल्कि—'अकः सवर्णे दीर्घः' (६।१।१०१) यह अपवाद सूत्र ही वहाँ प्रवृत्त होता है। रात्रिमें स्नान करना धर्मशास्त्रोंसे निषिद्ध है; पर चन्द्रग्रहणमें अपवाद रूपसे किया जाता है। अर्थशास्त्रमें विजय की इच्छा वालेको एक समयमें आक्रमण करना पड़ता है, दूसरे समय शत्रुके व्यसनकी प्रतीक्षा करनेके लिए बैठना पड़ता है—यह पूर्वका अपवाद है। 'काम' का सामान्यतया निषिद्ध किया गया है; पर तीसरे पुरुषार्थमें उसे रक्खा गया है। मोक्षशास्त्रमें—

ऋणानि त्रीण्यपाकृत्य मनो मोक्षे निवेशयेत्।

(मनु० ६ ३५)

इस प्रकार तीन ऋणोंका पूर्ण करना—यह सामान्य शास्त्र बताया गया है उसका—

'यदहरेव विरजेत् तदहरेव प्रव्रजेत्'

यह अपवाद है कि जिस दिन वैराग्य हो जाय; उसी दिन संन्यास ले ले। इसी प्रकार फलित ज्योतिषमें भी बलाबल मूलक उत्सर्ग-अपवाद जान लेने चाहिएं; जैसे कि—

केन्द्रगत गुरु सामान्यतया तो शुभ है; पर यदि शत्रु गृहमें हो; तो पूर्वका अपवाद बन जाता है। परन्तु सौम्यग्रह यदि साथ हो; तो फिर कुछ अच्छा बन जाता है। परन्तु क्रूरग्रह यदि साथ हो तो फिर अशुभ होता है। फिर भी यदि उसे मृदु (सौम्य) ग्रह देख रहे हों; तो अच्छा हो जाता है। वही अशुभ ग्रहोंसे देखा हुआ फिर प्रतिकूल हो जाता है; उसमें भी पादार्ध, पादोन तथा पूर्णदृष्टि होने पर फल वैसा होता है। इस प्रकार बीस कक्षाओं वाली उत्सर्गापवाद प्रतिप्रसव आदि परम्पराओंसे फलादेश मिलने की आशा हो सकती है, आपाततः ग्रह सामान्यका फल देखने से भला पूर्णफलका ज्ञान कैसे हो सकता है ? जैसे आजकल आयुर्वेदके वैद्य परिश्रमसे डरते हैं; अतएव उनकी चिकित्सा शीघ्र फल देती हुई नहीं दिखाई पड़ती; वैसे ही गुणज्ञ पुरुषोंका न्यूनतासे ज्योतिषी लोग भी फलितशास्त्रमें अपेक्षित प्रयत्न नहीं करते—इस कारण फलित मिलता हुआ नहीं दीख पड़ता। इसमें फलित ज्योतिषका कोई अपराध नहीं।

श्री स्वा० दयानन्दजी सदृश अविश्वासी व्यक्तिने भी 'शालेतू' में छपाये अपने 'विज्ञापनपत्र' में 'भृगुसंहिता' को को सत्य माना है; उसमें गणित नहीं; किन्तु फलित ही है। इसी फलितको जाननेसे ही ज्योतिषियोंका नाम संस्कृत साहित्यमें 'दैवज्ञ' आया है। 'दैव' पूर्वजन्मके कर्मके फलका ही नाम है, उसके जानने वाला। इससे फलित की सत्यता शास्त्रीय हुई।

कभी-कभी फलित पूर्णतया नहीं मिलता—इसमें एक अन्य भी कारण है, वह यह है कि—फलित ज्योतिष प्रायः लक्षण बताता है, पूरा वृत्त नहीं। उसे तो अपनी बुद्धिसे जानना पड़ता है, उसमें यदि ज्योतिषीकी बुद्धि कुण्ठित हो जाय; तो उसीका यह दोष होगा, फलित ज्योतिषका नहीं। किसी राजाने किसी ज्योतिषीसे पूछा कि—मेरी मुट्ठीमें क्या

है ? ज्योतिषी ने फलित द्वारा विचार कर यह कहा कि—"आपकी मुट्ठीमें स्थित वस्तुका रङ्ग सफेद है, वह गोल है, उसके बीचमें छेद है।" राजा कहने लगा कि ठीक है। फिर पूछा कि वह वस्तु है क्या ? ज्योतिषी प्रतिभाशाली नहीं था; कहने लगा कि चक्कीका पाट। राजा कहने लगा, धिक्! क्या मेरी मुट्ठीमें चक्कीका पाट समा सकता है ? मेरे हाथमें तो मोती है। अब पाठकोंने अनुभव किया होगा कि मोती भी गोल, श्वेत, तथा छिद्रयुक्त है, चक्कीका पाट भी। ज्योतिषने लक्षण तो दिखलाये, उस वस्तुको जाननेके लिए तो ज्योतिषीकी बुद्धि चाहिए। इसमें फलित ज्योतिष का अपराध नहीं। इसी लिए 'न्यायदर्शन' २।१।३६ (३८) सूत्रके भाष्यमें अनुमान करने वालेके विषयमें कहा है—

सोऽयमनुमातुरपराधो, नानुमानस्य,
योऽर्थं विशेषेण अनुमेयम् अर्थम् अविशिष्टार्थ-
दर्शनेन बुभुत्सते।।"

इसी प्रकार वराहमिहिरके विषयमें भी एक जनश्रुति प्रसिद्ध है। उस समय यूनानियोंमें भी फलित ज्योतिषकी पर्याप्त विद्या थी पर वे हिन्दुस्तानके हिन्दुओंको नहीं पढ़ाते थे। इस कारण वराहमिहिरने भी यूनानियोंका वेष धारणकर उनसे उक्त विद्या ली। विद्या समाप्तकर जब वह वहांसे जाने लगा, तब किसी प्रकार उन यूनानियोंको पता चल गया कि यह हिन्दुस्तानी था। वे उसे पकड़ने दौड़े, उसे भी पता लग गया। वह भी एक तेज घोड़े पर सवार होकर दौड़ा। उन्होंने भी पीछा किया। ज्योतिष द्वारा उन्हें मालूम पड़ा कि अमुक दिशामें तथा इतने अन्तरके लगभग वह है। वे चल पड़े। इस प्रकार वराहमिहिरने भी वहाँ ज्योतिष द्वारा देखा कि वे मुझे पकड़नेके लिए चल पड़े हैं। वह आगे भागा। ये लोग जब ज्योतिषसे ज्ञात हुए स्थान पर पहुँचे और वहां वराहमिहिरको न पाया, तो फिर ज्योतिष द्वारा यूनानियोंने उसकी स्थिति जाननेका प्रयत्न किया, जानकर वे वहांसे चल पड़े। वराहमिहिरने सोचा कि यह दौड़धूप कहां तक चलेगी, इनको धोखा देना चाहिए कि जिससे यह लौट जाएँ, यह विचारकर उसने पर्वतबहुल प्रदेशमें बहुतसे पत्थर इकट्ठे किये। उन्हें अपने चारों ओर रख दिया। इधर कांटोंके झाड़झंखाड़को भी अपने चारों ओर रख दिया। वहां कोई नाली जल्दीसे खोदकर उसमें जल भी अपने चारों ओर प्रवाहित कर दिया। स्वयं बीचमें एक गढ़ेमें छिपकर बैठ गया। अब यूनानियोंने ज्योतिष द्वारा देखा कि वराहमिहिर किसी बड़े पहाड़में है। उसके चारों ओर बहुत पत्थर हैं। चारों ओर गहरी खाइयें तथा कांटेदार गहरे जङ्गल हैं। ऐसे स्थानमें अपनी प्राप्ति कठिन जानकर पूर्वसे थके हुए वे वापिस लौट गये। वराहमिहिर भी यह जानकर सुखसे अपने घर पहुँच गया।

कहनेका तात्पर्य यह है कि ज्योतिषविद्या लक्षणमात्र को बताती है, आगे उसमें अपनी प्रतिभाका भी उपयोग करना पड़ता है। जिन पत्थरके टुकड़ोंको वराहमिहिरने इकट्ठा किया था, यूनानियोंने उन्हें अपनी बुद्धि द्वारा पहाड़ समझा, और जलको खाई तथा कांटोंको गहरा जङ्गल समझा। यह उनकी बुद्धिका अपराध हो सकता है। ज्योतिषका दोष इसमें कोई नहीं। अत एव स्पष्ट है कि ज्योतिषीको जहां ज्योतिषविद्याका अभिज्ञ होना चाहिए, वहां पर प्रतिभाशाली तथा अनुभवी भी होना चाहिए। ग्रह और नक्षत्रोंका प्रभाव अवश्य होता है इस पर शास्त्रीय विवेचन फिर किया जायगा। हर्षकी बात है कि—'श्रीस्वाध्याय' के सम्पादक एक अनुभवी तथा देशकालज्ञ ज्योतिषी हैं, अत एव इनका फलित प्रायः सत्य उतरता है। तभी तो इनका 'दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र' शिक्षित जनताको भी प्रभावित करता है। फलितकी सत्यताकी परीक्षाके इच्छुकोंको 'श्रीस्वाध्याय' अवश्य मँगाना चाहिए।

(पृष्ठ १६ का शेष)

शत्रुकी ओरसे षड्यन्त्र रचकर शासनमें गड़बड़ी फैलाने वाला है अतः हमारे राष्ट्रसञ्चालकों को चाहिए कि वे अपने मित्र और शत्रुओंकी ठीक परीक्षा करके मित्रोंका सहयोग प्राप्त करें और शत्रुओंसे सतर्क रहकर राष्ट्रकी नौकाको पार लगाएँ। यह वर्ष उनके लिए अग्निपरीक्षा का होगा। यदि इसमें उन्होंने थोड़ी सी भी असावधानी की तो यह राष्ट्रका दुर्भाग्य होगा। सूर्य बुध शनिकी स्थिति से आशा है कि हमारे सुयोग्य राष्ट्रके प्रधान कर्णधार देश को सभी प्रकारकी आपत्तियोंसे पार ले जानेमें समर्थ होंगे। जनताका भी कर्तव्य है कि वह अपने भारतीय आर्य शासनको सुदृढ बनानेमें पूर्ण सहयोग दे।

सोलन–समाचार

महामहिमामयी श्री श्री मां आनन्दमयीका शुभागमन

यद्यपि प्रतिवर्ष ग्रीष्मकालमें परमभागवत विद्यानुरागी धर्ममार्तण्ड राजर्षि श्री १०५ मान् बघाटनरेशके आतिथ्य भवनमें भारतके किसी-न-किसी वीतराग तपोनिधि महात्मा ब्रह्मर्षि वा विशिष्टविद्वान्के दर्शनका सौभाग्य प्राप्त हो ही जाता है। साथ ही उक्त राजर्षिके राजप्रासादमें ब्रह्मर्षियों के सदुपदेश, यज्ञ, पुराण-प्रवचन और वीतराग महात्माओंके सामूहिक हरिसंकीर्तनयज्ञमें सम्मिलित होनेका सौभाग्य भी सोलनकी प्रजाको प्राप्त होता रहता है। तथापि इस वर्ष आषाढमासके नवरात्र स्थानीय अन्तर्मुखी धार्मिक जनताके लिए विशेष आनन्ददायी सिद्ध होंगे। आषाढ शु० १ सोमवार ता० २७ जूनसे राजर्षि (श्री सोलन-नरेश) के भवन (श्रीआनन्दमयी–आश्रममें) मां श्री आनन्दमयी तथा तपोनिधि वीतराग महात्माओंके तत्त्वावधानमें श्रीमद्भागवतका नवाह पारायणयज्ञ प्रारम्भ हो रहा है। भारतकी सुप्रसिद्ध योगीश्वरी महामहिमामयी श्री श्री मां आनन्दमयीजी आषाढ कृष्ण ६ ता० २० जूनको सोलन पधार गई हैं। आपके साथ युक्तप्रान्तके प्रख्यात वीतराग महात्मा श्री १०८ हरिबाबाजी महाराज तथा अन्य कई महात्मा एवं भक्तगण भी पधारे हैं। काशीके सुप्रसिद्ध सन्तशिरोमणि श्री १०८ स्वामी त्रिवेणीपुरीजी महाराज और श्री १०८ स्वामी स्वरूपानन्दजी महाराज भी इस यज्ञकी शोभा बढ़ा रहे हैं। श्री १०८ स्वामी अखण्डानन्दजी आदि और भी अनेक महात्मा एवं विशिष्ट सज्जन इस यज्ञमें सम्मिलित होंगे। श्रीमद्भागवतका पारायण और प्रवचन बङ्गदेशीय सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री अग्निष्वात्तजी कर रहे हैं, सुना जाता है कि १४ वर्षकी आयुमें ही आपको चारों वेद सस्वर कण्ठस्थ थे, अस्तु।

इस समय सोलन तीर्थधाम–सा बना हुआ है। आशा है श्रीमाताजी और महात्मागण श्रावण तक सोलनमें विराज कर धार्मिक जनताको अपने उपदेशामृत से तृप्त करेंगे।

शुभ-विवाह

'श्रीस्वाध्याय' के परमहितैषी और सम्मान्य सहायक श्रीमान् कुँ० शिवसिंहजी B. A; L.L. B. सेशन जज महोदयकी सुपुत्री आयुष्मती अ० सौ० **श्री. कुं० इन्दुमती** का शुभ विवाह संस्कार ज्येष्ठ शु० ८ शनिवार ता० ४ जून १९४९ को जयडवाल (होशियारपुर) के सुप्रसिद्ध रईस स्व० रायसाहब श्री चौधरी अच्छरसिंहजीके ज्येष्ठ सुपुत्र श्रीमान् **चौ० गगनसिंहजी** के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ। श्रीस्वाध्याय-परिवारकी ओरसे हार्दिक बधाईके साथ प्रभुसे मङ्गल कामना है कि यह नवदम्पति सदा सतत सुख सम्पत्ति समृद्धिसे संयुक्त होकर फलती फूलती रहे।

सेवायोगी आश्रमका उद्घाटन

ज्येष्ठ शु० ५ बुधवार ता० १ जूनको सोलनमें धर्ममार्तण्ड राजर्षि श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर बघाट-नरेश महोदयके करकमलों द्वारा सेवायोगी आश्रम (धर्मार्थ औषधालय) का भव्य उद्घाटन हुआ। नगरके सभी गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। उक्त आश्रमका प्रधानकार्यालय बराड़ा (अम्बाला) में है। इसके संस्थापक तथा प्रधान संचालक सुप्रसिद्ध डा० श्री मनोहर योगीजी हैं। आप एक वयोवृद्ध सिद्ध हस्त चिकित्सक हैं। आपके ही सुपुत्र श्री शिवनाथजी योगी आयुर्वेदशास्त्रीने हिमाचल प्रदेशकी जनताको लाभ पहुँचानेके लिए उक्त औषधालयका उद्घाटन कराया है। शाखाकार्यालयके अध्यक्ष श्री रामनाथजी वैद्य हैं। इन दोनों वैद्यबन्धुओंमें अपने पिताके समान सेवा व्रतके सभी गुण पाये जाते हैं। सुना जाता है कि अत्यल्प समयमें ही अपनी योग्यता और सेवा द्वारा आपने स्थानीय जनतामें समादरका स्थान प्राप्त कर लिया है। इस आश्रममें रोगियोंसे किसी प्रकारकी फीस वा औषधियोंका मूल्य नहीं लिया जाता। ऐसे राष्ट्र हितैषी कार्य में सबको यथा–शक्ति सहयोग देना चाहिए।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

स्वतन्त्र भारतके तीसरे वर्षलग्नका दिग्दर्शन

भारतमें आर्थिक असन्तोष, काश्मीरमें पुनः गड़बड़ी और विभाजन

शासन और औद्योगिक क्षेत्रोंमें गतिरोध, मन्त्रिमण्डलोंमें परिवर्तन

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

ता० १५ अगस्तको भारतीय स्वतन्त्रताका तीसरा जन्मोत्सव सारे देशमें सानन्द मनाया जायेगा। पाठकोंको स्मरण होगा कि स्वतन्त्रता प्राप्तिके समय ही ता० १५ अगस्त १९४७ के पत्रों और 'श्रीस्वाध्याय' में स्वतन्त्रभारतका जन्म लग्न देकर हम यह स्पष्ट लिख चुके थे कि—"आरम्भ के तीन वर्ष महान् कठिनाईके हैं" उस समय हमने जिन अनेक कठिनाइयां षड्यन्त्र अराजकता एवं गुप्त शत्रुओंके उत्पात तथा राजनैतिक उलटफेर, हैदराबाद काश्मीरमें भयानक गड़बड़ी अशान्ति आदिका जो भविष्य सूचन किया था वह सब पाठकोंके सम्मुख आ चुका है, अब १४ अगस्त १९४९ से प्रवेश होने वाला यह तीसरा वर्ष शासन सूत्र सञ्चालकोंके सामने गतवर्षकी अपेक्षा कहीं अधिक उलझनें और अनेक प्रकारका अशान्त वातावरण लेकर आ रहा है। यहाँ हम ज्योतिर्विज्ञानानुरागियोंके लिए स्वतन्त्रभारतका जन्मलग्न और तृतीयवर्षकी कुण्डली देकर ग्रहस्थिति पर कुछ प्रकाश डालेंगे—

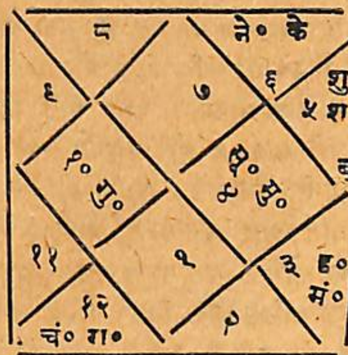
स्वतन्त्र भारतका जन्म लग्न

(ता० १५ अगस्त १९४७ इष्ट ४५।२०)



तृतीय वर्ष लग्न

(ता० १४ अगस्त सन् १९४९ ई०)



लग्नेश शुक्र ११ वें सिंह राशिके अन्तिम अंशमें नीचाभिलाषी होकर व्ययमें जानेकी तैयारीमें है, चतुर्थ भावमें नीचका गुरु वक्री है। राज्येश और सुखेश चन्द्रमा शत्रु भावमें राहुसे पीड़ित है ये सब योग हमें भारतके शासनमें आन्तरिक अशान्ति और जनताके लिए अनिष्ट फलकी सूचना दे रहे हैं। वैसे तो यह सारा वर्ष ही गड़बड़ीका है,परन्तु आरम्भिक ६ मास विशेष सावधानीके हैं। राज्येश मुन्थेश चन्द्रमा छठे राहुके साथ है और सुदर्शन-चक्र गणनासे भी तीसरे वर्षका राज्येश मङ्गल १२ वें चला गया है अतः इस वर्ष राष्ट्रीय सरकारके अनेक शत्रु उत्पन्न होंगे। सरकार अपने कार्योंसे जनताको प्रसन्न न कर सकेगी, भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी और चोर बाजारीसे जनता संत्रस्त होकर शासनका प्रत्यक्ष विरोध करने पर उतारू होगी। फलतः कई उच्चाधिकारी नया चुनाव कराने वा अपने पदसे स्तीफा देनेके लिए बाध्य होंगे। किन्तु सम्भावित

नवीन दल भी शासन शकटको सम्यकतया चलानेमें असफल सिद्ध होनेसे आगे अराजकता और बढ़ेगी और जैसा कि हम विगत ७वें वर्षके नववर्षाङ्कमें लिख चुके थे कि "सं० २००८ से २०१२ तक सारे देशमें अराजकता बढ़ेगी।" वही समय आगे आने वाला है।

काश्मीरमें सैनिक शासन

काश्मीर और पाकिस्तानके सम्बन्धमें हम अपने पञ्चाङ्ग और 'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कोंमें जो कुछ लिख चुके वह सब हस्तामलकवत् सामने आता जा रहा है। आगे कर्क संक्रान्तिसे (श्रावणमाससे) काश्मीरकी राशि पर मिथुनमें सेनापति मंगलका सूर्यसे द्विर्द्वादश योग तथा सूर्य शनिका द्विर्द्वादशयोग बन रहा है, अतः श्रावणमाससे ही काश्मीरमें सैनिक गतिविधि बढ़ेगी और उत्तरोत्तर सैनिक शासन प्रबल होता जायेगा। यहांसे आगे पाकिस्तानकी ओरसे छोटे मोटे आक्रमण और काश्मीर तथा सीमाप्रदेश में व्यापक अशान्ति फैलानेके प्रयत्न प्रारम्भ होंगे। काश्मीर विभाजनकी भविष्यवाणी हम दो वर्ष पहले ही कर चुके थे, वही अब होकर रहेगा। काश्मीर कमरान असफल होकर अपने घर लौट जायेगा और जितना प्रदेश पाकिस्तानियों के अधिकारमें आ चुका है उसे वे सुदृढ़ बनानेमें तत्पर रहेंगे।

भाद्रपद (अगस्त) मासमें सिंहराशिमें सूर्य शनिकी युति हो रही है और मंगल नीचराशिमें जाकर शनि सूर्यसे द्विर्द्वादश योग बनावेगा अतः भाद्रपदमास (अगस्तसे) आगे स्थिति अधिक गम्भीर बनती जायगी। हमारे देशमें ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रिय जगत्में भी नई अशान्ति और चिन्ता बढ़ेगी। इसके प्रभावसे दक्षिण पूर्व और उत्तरके प्रदेश विशेष सङ्कट ग्रस्त रहेंगे। यदि यह सारे एशियाकी अशान्ति बन जाये तो भी कोई आश्चर्य नहीं। क्योंकि आगामी कार्तिकमासमें नीचका सूर्य नीचस्थ गुरुसे केन्द्र योग करेगा तथा मंगल शनि सिंहराशिमें एकत्र हो रहे हैं अतः भाद्रपदसे मार्गशीर्ष (अगस्तसे नवम्बर) तक का समय भारत और संसारकी राजनीतिके लिए सङ्कटका द्योतक है। इसी अवधिमें पश्चिमी यूरोप और एशियाके आकाशमण्डलमें युद्धकी काली घटाएं मण्डराने लगेंगी। किसी भारतीय महापुरुष और सेनापतिके लिए अपघात योग भी बन रहा है सावधान रहें। राजस्थान, पंजाब, बंगाल और मध्यभारतके शासनमें गतिरोध उत्पन्न होकर पुनः मन्त्रिमण्डलमें परिवर्तन होगा। केन्द्रीय शासनमें भी कुछ परिवर्तन सम्भव है। हिमाचल प्रदेशके एक उच्चाधिकारी का स्थान परिवर्तन होगा।

लग्नेश शुक्र शनिके साथ नीचाभिलाषी है अतः इस तीसरे वर्षमें भारतीय प्रजाका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य उत्तम न रहेगा। शुक्र (वीर्य) सम्बन्धी रोग और व्यभिचारकी मात्रा बढ़ाने वाला है। सत्य और सदाचारसे हीन होकर प्रजा अनेक कष्ट भोगेगी।

आर्थिक सङ्कट

इस वर्ष धनेश मङ्गलका राज्येश चन्द्रमासे ईसराफ योग बन रहा है और मङ्गल नीचाभिलाषी भी है, तथा धनेश और धनभाव शनिसे दृष्ट है, अतः इस वर्षमें भारतकी आर्थिक स्थिति विशेष सङ्कटापन्न रहेगी। केन्द्रीय और प्रान्तीय शासन आर्थिक क्रांतिको रोकनेमें अपने आप को असमर्थ पायेंगे। पूंजीपतियों और श्रमिकवर्गमें भयङ्कर सङ्घर्ष छिड़ेगा, फलतः कई छोटे बड़े औद्योगिक स्रोत कुछ दिनोंके लिए बन्द रहेंगे। पंजाब राजस्थान बंगाल मद्रास हैदराबाद और काश्मीरमें शासनके विरुद्ध सामूहिक षड्यंत्र होंगे। विरोधीतत्त्व प्रजाको प्रलोभन देकर अराजकता पर उतारू होंगे। मंत्रीमण्डलोंमें उलटफेर होगा।

पराक्रमेश गुरु केन्द्रमें नीचका वक्री है अतः शासकोंके भरसक प्रयत्न और पुरुषार्थ करने पर भी देश की स्थिति सुधर न सकेगी। इस वर्षमें न्यायप्रिय देवगुरु ही चतुर्थ (हृदय) स्थानमें नीच घरमें बैठकर वक्री हो रहे हैं अतः प्रजाको न्याय प्राप्त करना दुर्लभ होगा। उच्चाधिकारी स्वार्थके वशीभूत होकर राष्ट्रघातक कार्य करनेमें तत्पर होंगे।

स्वतन्त्र भारतके तृतीय वर्षका लग्न और सं० २००६ का वर्षलग्न एक ही है, अतः अधिकांशमें १२ भावोंका फल लगभग वही होगा जो हम गताङ्कमें लिख चुके हैं। राज्येश मुन्थेश चन्द्रमाका राहुके साथ छठे जाना किसी प्रधान शासकको आकस्मिक आपत्तिमें फँसाने वाला य

(शेष पृष्ठ १३ पर)

नई देहली का जन्तर-मन्तर

[ले०- पं० केदारनाथ ज्यौतिषी जयपुर]

यह जन्तर घर ज्यौतिष विद्याके अनुसार महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय (जिन्होने जयपुर बसाया था) द्वारा अपने समय में बनवाया गया था। इसमें बने हुए यन्त्रोंकी सहयतासे सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध आदि ग्रहोंके स्थान-जहां पर कि वे आकाशमें होते हैं जाने जा सकते हैं। बहुतसे यन्त्र सूर्यके प्रकाशकी छायासे समय बताने वाले हैं।

यह यन्त्र-शाला वि० सं० १७६७ में बनवाई गई थी, इसके बननेके बाद जयपुर, उज्जैन, मथुरा और काशीकी यन्त्र-शालाएँ बनवाई गईं। इनके यन्त्रोंके द्वारा ७ वर्ष परिश्रम-पूर्वक आकाशके ज्यौतिष सम्बन्धी गणितका संशोधन करके पञ्चाङ्ग बनानेका गणित ठीक किया गया था।

वर्तमान कालमें जयपुरके महाराज सवाई मानसिंहजी द्वितीयने इस यन्त्र शालाका जीर्णोद्धारका कार्य आरम्भ किया है।

इस जन्तर-मन्तरमें कुल १७ यन्त्र हैं। कुछ समय बतलाते हैं, कुछ ज्योतिष-शास्त्र सम्बन्धी बातें जाननेके उपयोगी हैं। इस समय जिस यन्त्रको पाषाण (पत्थर) का बनवाया जा रहा है यह यन्त्र मिश्रयन्त्रके नामसे प्रसिद्ध है। यह पानके आकारका बना हुआ यन्त्र नियतचक्र नाम से प्रसिद्ध है।

नियतचक्र--यन्त्र

इस नियतचक्रमें ४ आधे २ वृत्त (सरकिल) हैं। सबसे पहिला पूर्वकी तरफ वाला अर्धवृत्त जगत् प्रसिद्ध ग्रीनिविच नामकी वेधशालाके दुपहरके समय जब कि हिन्दुस्तानमें स्टेण्डर्ड टाईमके ५ बजकर ३० मिनट होते हैं सूर्यका गणित करनेको अर्थात् उत्तर या दक्षिणको सूर्य पूर्व बिन्दुसे कितना इधर-उधर हटा हुआ है यह देखनेको बनाया गया है। इस अन्तरका नाम ज्योतिषकी पुस्तकोंमें क्रान्ति है हर एक ग्रहकी क्रान्ति जानी जाने पर उसके राशि, अंश, कला, विकला सब गणितसे जाने जाते हैं।

इससे अगला छोटा अ धा सर्किल ज्यूरिच नामकी वेधशालाका जोकि स्वीजर लैण्डमें है वहांके मध्याह्न के समयका है। इस ही तरह इस यन्त्रकी पश्चिम बाजू पर बने हुए छोटे और बड़े आधे सर्किल क्रमसे जापान देशकी नाटके तथा पैसेफिक समुद्रकी सेरेच्यू नामक स्थान पर बनी हुई वेधशालाओंके मध्याह्न समयके वेध करनेके हेतु बनाये हुए यन्त्र हैं।

इन चार वेधशालाओंके सूर्यसे छाया द्वारा जाने हुए स्पष्ट समय सूक्ष्मतासे ये हैं।

इन इन समयों पर प्रतिदिनकी सूयक्रान्ति इन यन्त्रोंके द्वारा जानी जा सकती है।

चारों वेधशालाओंमें मध्यम मध्याह्न जिस समय होता है उसका समय देहलीमें इस प्रकार है—

	सायंकाल
(१) ग्रीन्विच	५।८।१२।२०
(२) ज्यूरिक्	४।३४।४०।२
	प्रातःकाल
(३) नाटके	५।२७।४४।२०
(४) सेरेच्यू	६।५६।४।२०

जो समय इन चार वेधशालाओंमें मध्याह्न होनेके लिखे हैं ये सब ही देहलीमें धूप घड़ीसे जाने जाने वाले स्पष्ट समय हैं (इस ही वेधशालामें सूर्यसे जो समय यन्त्रों द्वारा जाना जा सकता है वह ही स्पष्ट समय कहलाता है)। मध्यम अन्तरमें वेलान्तर संस्कार देनेसे स्पष्ट समय हो जाता है

(२) छोटा सम्राट् यन्त्र

इस नियतचक्रयन्त्रके दोनों तरफ दो तिरछी दीवार हैं और हर एक दीवारसे जुड़े हुए दो आधे सर्किल हैं। इन दोनों आधे वृत्तों (सर्किलों) पर इन तिरछी दीवारोंकी छाया पड़ती है। प्रातःकालसे मध्याह्न समय तक पश्चिम भाग वाली तिरछी दीवारकी छाया आधे सर्किल पर जहां पड़ती है वहां जो समय लिखा है वह देहलीका स्पष्ट समय होता

है। इसी प्रकार मध्याह्न पीछे पूर्व वाली दीवारकी छाया जिस जगह पड़ती है वहां जो समय लिखा है वह ही स्पष्ट समय कहलाता है। इस यन्त्रकी २१ मार्चसे २२ सितम्बर तक वृत्तके दक्षिण किनारे पर, तिरछी दीवार पर रखी हुई कीलकी छायासे तथा २२ सितम्बरसे २२ मार्च तक उत्तरके किनारे पर रक्खी हुई कील की छाया वृत्तों के किनारे पर डालने से तिरछी दीवार पर क्रान्ति आ जाती है। इस मिश्र यन्त्रके पास ही दो बड़े खम्भे ऊंचे २ बने हुए हैं। इनमें एक यन्त्रराज—पीतलका ७ फुट घड़ावलके आकार का था। उसमें रातके समय ताराओंके द्वारा समय जाना जाता था। यन्त्रराजकारिका नामका महाराजा सवाई जयसिंह जी का स्वयं लिखा हुई पुस्तक है। उसमें यन्त्रराज बनानेका और उस परसे समय ज्ञान आदिका वर्णन जाना जा सकता है।

बड़ा सम्राट यन्त्र

जन्तर मन्तरके प्रधान द्वारकी सीधमें बना हुआ यह बहुत बड़ा यन्त्र है इसकी दीवारकी ऊंचाई ६४ फीट है। इसके पूर्व तथा पश्चिम भागमें वृत्तके चतुर्थांश पर प्रातःकाल ६ बजेसे दोपहरके १२ बजे तक देहलीका सूर्य का समय जाना जाता है। और दोपहरके १२ बजे सायङ्कालके ६ बजे तक पूर्व भागमें समयका ज्ञान होता है। इस पर दो-दो सेकण्डके चिन्ह बने हुए हैं। अर्थात् इस यन्त्र द्वारा सूक्ष्मसे सूक्ष्म दो सेकण्ड तकका समय जाना जाता है। इस यन्त्रमें तिरछी बहुत ऊंची दीवार बनी है इस दीवार पर सूर्यकी क्रान्तिके अर्थात् उत्तर दक्षिण जानेके अंशोंके चिन्ह बने हैं। जो दोनों तरफसे समयज्ञानके हेतु वृत्त चतुर्थांश बने हैं उनके उत्तर किनारे पर तिरछी दीवारकी पाली पर अर्थात् किनारे परसे एक कीलकी या अङ्गुलीकी ही छाया डाली जाए तो तिरछी दीवार पर जहाँसे छाया वृत्तके उत्तर किनारे पर पड़े वहाँ सूर्यकी दक्षिण क्रान्ति होगी यह दक्षिण क्रान्ति आश्विन से चैत्र तक रहती है। इस ही प्रकार तिरछी दीवारके किनारेसे वृत्तके दक्षिण किनारे पर कीलकी छाया डालनेसे उत्तर क्रान्ति जानी जाती है। उत्तर क्रान्ति चैत्रसे आश्विन मास तक होती है। इस यन्त्रसे रातके समय हर एक ग्रह चन्द्र मङ्गल बुध बृहस्पति शुक्र और सूर्य शनिकी भी उत्तर दक्षिण क्रान्ति जानी जाती है। क्रान्तिके सिवाय सूर्य आदि ग्रहोंके विषुवांश भी जो ज्योतिषियोंको गणितमें उपयोगी होते हैं जाने जाते हैं। इस यन्त्रमें ही पूर्वकी तरफ षष्ठांश यन्त्र नामका एक यन्त्र और है। इस षष्ठांश यन्त्रमें दोपहर के समयसूर्यका प्रकाश कुछ देरको आता है। उस पर सूर्यके चारों तरफ जो पृथ्वीकी गति है (प्राचीन मतसे) है वह तथा दैनिक गति जानी जाती है। मध्याह्नके समय एक स्वच्छ श्वेत कागज पर सूर्य बिम्बका प्रकाश इस यन्त्र में देखनेसे सूर्यके धब्बे भी दिखाई देते हैं। पानी भर जानेसे देहलीमेंयह यन्त्र निरुपयोगी हो चुका है भविष्यमें आशाकी जाती है कि जीर्णोद्धारके अवसर पर इसको भी पुरानी स्थितिमें ला दिया जायगा।

(३) कर्क राशि वलय

इस यन्त्रके पीछेकी तरफ एक बड़ा वृत्त बनाया हुआ है। यह सड़क परसे ही दीखता है ये कर्क राशि वलय नाम से प्रसिद्ध है। इस यन्त्रसे सूर्य आदि ग्रहोंके राशि अंश आदि जाने जाते हैं। उसका प्रकार यह है कि जिस समय कर्क राशिका आरम्भविन्दु देहलीमें आकाशमें पहुँचता है उस समय इस यन्त्रके (सेण्टर) में लगी हुई कीलमें एक डोर बांध कर उसकी सीधमें सूर्यका तथा रातके समय चन्द्र-मङ्गल आदि ग्रहोंका वेध करके आकाशमें किस राशि अंश पर है ये जाना जाता है (जयपुरकी वेधशालामें ऐसे राशि वलय अलग-अलग बारह बने हुए हैं। यहाँ केवल नमूनेके तौर पर एक ही बनवाया गया है। यह २४ घण्टों में सिर्फ एक ही बार काम दे सकता है। वह समय गणित द्वारा पहिलेसे जान लिया जाता है और उस ही समय पर यह काम देता है जबकि जयपुरके यन्त्र दो-दो घण्टोंके अन्तर पर ग्रहोंकी स्थिति बतलाते हैं यह कर्क राशि वलय कर्क जिस समय आकाशमें मध्याह्न पर हो उस ही समय उपयोगी हो सकता है।

(४) याम्योदग्भित्ति यन्त्र

इस यन्त्र में पूर्वकी दीवार पर एक यन्त्रसे ठीक दोपहरके समय देहलीके मध्यबिन्दुसे सूर्य कितना हटा हुआ है जाना जाता है। देहलीका अक्षांश २८।३७ है। उस अन्तरको

जो कि मध्याह्न के समय जाना जावे अक्षांशमें जोड़ने घटाने से सूर्यकी क्रान्तिका ज्ञान हो जाता है।

(५) अग्रा यन्त्र

इस यन्त्रमें पश्चिम भागमें एक चौथाई सर्किल बना है इसको पूर्वापर वृत्त कहना चाहिए इससे सूर्यका सम-मण्डल प्रवेश जान कर अग्रा लाई जाती है।

जयप्रकाश यन्त्र

यह यन्त्र महराजा जयसिंह जी जयपुराधिपति ने स्वयं बनवाया था ऐसी प्रसिद्धि है। इस पर खगोलका पूरा चित्र है। चित्र ही नहीं है इसके द्वारा आकाशमें सूर्यादि ग्रहोंकी स्थिति गति, समय, सूर्य तथा अन्य ग्रहोंका राशि आदि स्पष्ट जो पञ्चागोंमें लिखा रहता है सबकी स्थिति बहुत सहज में ज्ञात हो जाती है। ये यन्त्र २ भागोंमें बनवाया गया है। १ घण्टे तक एक काम देता है और बादमें दूसरा। एक एक घण्टेके अलग अलग विभाग बना दिये गये हैं। एक यन्त्रमें जहां बीचमें पैड़ियां बनी हैं उतने ही स्थानमें दूसरे में चिन्ह वाला भाग है। इन दोनोंको एक कर दिया जाय तो आधी गेंदके आकारका आधा गोल बन जायगा।

इस यन्त्रमें पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण दो तार बांध कर केन्द्रमें एक गोल पीतलका टुकड़ा जिसमें बीचमें कलदार पैसेकी बराबर छिद्र हो उसके द्वारा दिनमें उसकी छाया से और रातमें एक पोली पीतलकी नलीमें होकर केन्द्रके द्वारा किसी तारे या ग्रहका आँखसे देखने पर या दर्पण पर नलिका द्वारा ग्रहका प्रतिबिम्ब देखकर आकाशमें किस राशि अंश पर है ये बहुत शीघ्र ज्ञात हो जाता है। इसमें निम्नलिखत विषयोंका पृथक पृथक ज्ञान हो सकता है।

(१) समय (केन्द्रकी छाया जिस भाग पर हो उसको १ घण्टा मान कर।

(२–३) विषुवांश तथा सूर्यकी क्रान्ति

(४) राशि आदिमें ग्रहकी स्थिति

(५--६) उन्नतांश तथा दिगंश

इनके अतिरिक्त मध्याह्न वृत्त पर बारह राशियोंमें से कौन सी राशि है उसको दशम-लग्न कहा जाता है। उस का भी ज्ञान होता है टेडे सर्किलों पर केन्द्रकी फिरकीकी छाया जिस वृत्त पर पड़े उस पर जिस राशिका नाम लिखा है वही दशम पर मध्याह्न वृत्त पर होती है।

राम यन्त्र

ये भी यन्त्र २ बने हुए हैं एकके अनन्तर एक काम देता है। इस यन्त्र पर बीच वाले खम्भेकी छायासे जहां उन्नतांश पर दिगंश ज्ञात होता है ऊपरका वृत्त क्षितिज है। उदयकालमें खम्भेकी छाया उस पर पड़ती है फिर जैसे-जैसे सूर्य ऊपर आता है वैसे वैसे छाया छोटी होती जाती है उस छायामें खड़े सर्किलमें दिशाग और आड़े सर्किलसे उन्नतांश जाते जाते हैं।

उच्चमीमांसा

(ले० राजगुरु ज्यौतिषालङ्कार पं० तारादत्तजी राज ज्यौतिषी)

[हेमन्ताङ्क से आगे]

★

उच्च राशिदाग्रतो ग्रह उच्चांशदः प्रधान ग्रहात् ॥६॥

उच्च राशि देने वाले ग्रहसे आगेका ग्रह परमोच्चांश देता है। प्रथम प्रधान ग्रहको (सूर्यको) उससे आगेका ग्रह परमोच्चांश देता है। तदनन्तर कक्षा क्रमसे भौम, बृहस्पति आदि आगे के ग्रहों को उनसे आगेके ग्रहका परमोच्चांश देते हैं ॥६॥

असंभवेऽग्रतोऽग्रतः ॥१०॥

यदि उच्च राशि देने वाले ग्रहसे आगेका ग्रह परमोच्चांश देनेका अधिकारी नहीं हो तो उससे आगेका ग्रह परमोच्चांश देता है। उसके अधिकारी न होने पर उससे आगेका ग्रह परमोच्चांश देता है। इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिए ॥१०॥

अन्ते मिश्रग्रहः शेषाणाम् ॥११॥

अन्तमें मिश्र ग्रह (बुधसे) शेष ग्रहोंको परमोच्चांश देता है। ॥११॥

नान्यो दत्तोच्चांशः ॥१२॥

मिश्र ग्रहसे (बुधसे) और कोई ग्रह जिसने किसी ग्रहको परमोच्चांश दे दिया है, अन्य ग्रहको परमोच्चांश नहीं देता है ॥१२॥१२॥

ब्राह्मणौच ॥१३॥

ब्राह्मण ग्रह (बृ० शु०) भी परमोच्चांश नहीं देते हैं ॥१३॥

राशयः स्वसंख्यान्नामंशानामीशाः ॥१४॥

जिस राशिकी जितनी संख्या है, उतनी संख्या वाले अंशमें उसका आधिपत्य है। जैसे मेष राशिकी संख्या १ है। इसलिए पहले अंशमें मेष राशिका आधिपत्य है। वृष राशिकी संख्या २ है। इसलिए दूसरे अंशमें वृष राशिका आधिपत्य है। इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिए ॥१४॥

चक्र युक्ता राशि संख्या च राशि संख्या ॥१५॥

चक्र संख्यासे १२ युक्त राशि संख्या भी राशि संख्या जाननी चाहिए, मेष—राशिकी संख्या १ है। इसमें चक्र संख्या १२ जोड़नेसे १३ संख्या बनी। यह भी मेष राशिकी संख्या हुई। इसमें चक्र संख्या १२ जोड़नेसे २५ संख्या बनी। यह भी मेष राशिकी संख्या हुई। इसी प्रकार वृषादि राशियोंकी संख्याएँ जाननी चाहिए ॥१५॥

तेषा मीशाश्च मेषम् ॥१६॥

जिस राशि पर जिस ग्रहका आधिपत्य है, उस पर उसके स्वामी ग्रहका भी आधिपत्य होता है। जैसेः—मेष पहिले अंशका स्वामी है। इसलिए मेषका स्वामी मङ्गल भी पहिले अंशका स्वामी हुआ ॥१६॥

उच्चांशद उग्राय मृदो मृदव उग्रस्य राशेरंशददाति ।१७।

परमोच्चांश देने वाला ग्रह उग्र ग्रहको अपनी मृदु राशिका (शुभ राशिका) और मृदुग्रहको अपनी शुभ राशिका अंश देता है ॥१७॥

आद्याभ्यां क्रूराक्रूर ग्रहोच्चराशिभ्यामुत्तरोत्तर क्रूराक्रूर ग्रहोच्चराशीनामाधिक्यम् ॥१८॥

आद्य क्रूर ग्रहकी उच्च राशिसे क्रूर ग्रहोंकी उच्च राशियोंमें परमोच्चांश उत्तरोत्तर अधिक हैं। आद्य शुभ ग्रह की उच्च राशिसे शुभ ग्रहोंकी उच्च राशियोंमें परमोच्चांश उत्तरोत्तर अधिक हैं। मेषमें परमोच्चांशसे तुलामें परमोच्चांश अधिक और तुलामें परमोच्चांशसे मकरमें परमोच्चांश अधिक है। वृषमें परमोच्चांशसे कर्कमें परमोच्चांश अधिक कर्कमें परमोच्चांश से कन्यामें परमोच्चांश अधिक है ॥१८॥

मिश्रोऽत्र शुभः ॥१९॥

यहाँ मिश्र ग्रह (बुध) शुभ है ॥१९॥

प्रधान ग्रह सूर्य है, उसका उच्च राशि देने वाला ग्रह मङ्गल है। उससे आगेका ग्रह बृहस्पति है। इसलिए सूत्र ९ से बृहस्पतिको परमोच्चांश देनेका अधिकार प्राप्त हुआ। सूत्र १३ से बृहस्पतिका परमोच्चांश देनेका अधिकार निषिद्ध हो गया। सूत्र १० से बृहस्पतिसे आगे शनिको परमोच्चांश देनेका अधिकार मिला। सूत्र १६ से शनिकी राशियोंके अंश ही शनिके अंश हैं। शनि, मकर कुम्भ राशियोंका स्वामी है। इसलिए मकर-कुम्भ राशियोंके अंश ही शनिके अंश हैं। सूत्र १७ से परमोच्चांश देने वाला ग्रह उग्र ग्रह सूर्यको मृदु राशि मकरका अंश देता है। सूत्र १४, १५ से मकरके १०, २२ अंश हैं। इनमें छोटी संख्या १० है। अत एव सूत्र १८ से मेषका दशम अंश आद्यक्रूर ग्रह सूर्यका परमोच्चांश सिद्ध हुआ।

सूर्य से आगेका ग्रह मङ्गल है। मङ्गलका उच्चराशि देने वाला ग्रह शनि है। उससे आगेका ग्रह चन्द्रमा है। सूत्र ९ से चन्द्रमा मङ्गलका परमोच्चांश देने वाला ग्रह है। अतएव लिखित रीतिसे कर्कका अंश मङ्गलका परमोच्चांश सिद्ध हुआ।

मङ्गलसे आगेका ग्रह बृहस्पति है। बृहस्पतिका उच्च राशि देने वाला ग्रह चन्द्रमा है। उससे आगेका ग्रह बुध है। इसलिए सूत्र ९ से बुधको परमोच्चांश देनेका अधिकार प्राप्त हुआ। बुध मिश्र ग्रह है। अभी परमोच्चांश देनेके अधिकारी ग्रह शेष हैं। इसलिए सूत्र ११ से बुधका परमोच्चांश दानाधिकार निषिद्ध हो गया। बुधसे आगेका ग्रह शुक्र है। इसलिए सूत्र १० से शुक्रको परमोच्चांश दाना०

घिकार प्राप्त हुआ। शुक्र ब्राह्मण ग्रह है। इसलिए सूत्र १३ से शुक्रका परमोच्चांश दानाधिकार निषिद्ध हो गया। उससे आगेका ग्रह सूर्य है। इसलिए सूत्र १० से सूर्य को परमोच्चांश दानाधिकार मिला। अतएव लिखित रीतिसे सिंहका अंश बृहस्पतिका परमोच्चांश निश्चित हुआ। बृहस्पतिसे आगेका ग्रह शनि है। शनिका उच्च राशि देने वाला ग्रह शुक्र है उससे आगेका ग्रह सूर्य है। इसलिए सूत्र ६ से सूर्यको परमोच्चांश दानाधिकार प्राप्त हुआ। सूर्यने बृहस्पतिको परमोच्चांश दानाधिकार निषिद्ध हो गया। सूत्रसे आगेका ग्रह मङ्गल है। इसलिए सूत्र १० से मङ्गल है। इसलिए सूत्र १० से मङ्गलको परमोच्चांश दानाधिकार मिला। अतएव लिखित रीतिसे वृश्चिकका अंश शनिका परमोच्चांश निश्चित हुआ।

चन्द्रमाको उच्च राशि देने वाला ग्रह शुक्र है। शुक्र से आगे सब ग्रहोंका परमोच्चांश दानाधिकार सूत्रोंसे निषिद्ध है। इसलिए सूत्र ११ से मिथुनका अंश शुक्रका परमोच्चांश निश्चत हुआ।

इसी प्रकार बुध और शुक्रका भी परमोच्चांश दानाधिकार निषिद्ध है। इसलिये सूत्र ११ से उनका परमोच्चांश भी मिथुनका अंश ही निश्चित हुआ।

सूत्र १४, १५ से क्रूर और शुभ ग्रहोंकी परमोच्चांश देने वाली राशियोंके अंश —

क्रूर ग्रह—	सू०	श०	मं०
रा०	१०,	८,	४,
अं०	१०,२२।	८, २०।	४, १६, २८।

शुभ ग्रह—	च	बृ०	बु०	शु०
रा०	३,	५,	३,	३,
अं०	३,१५,२७।	५,१७,२६।	३,१५,२७।	३,१५,२७

इस गणनामें सूत्र १६ से बुध शुभ है।

इस राशि क्रममें शनिकी उच्च राशि ७ सूर्यकी उच्च राशि १ से आगे है। सूर्यकी परमोच्चांश संख्या १० है। शनिके लिए वृश्चिकका अंश निश्चित है। वृश्चिककी ८, २० अंश संख्याओंमें २० अंश संख्या १० से आगे है। इसलिए सूत्र १८ से तुलाका बीसवां अंश शनिका परमोच्चांश सिद्ध हुआ।

मङ्गलकी उच्च राशि १० शनिकी उच्च राशि ७ से आगे है। शनिकी परमोच्चांश संख्या २० है। मङ्गलके लिए कर्कका अंश निश्चित है। कर्ककी ४, १६, २८ अंश संख्याओंमें २८ अंश संख्या २० से आगे है। इसलिए सूत्र १८ से मकरका अट्ठाईसवां अंश मङ्गलका परमोच्चांश सिद्ध हुआ।

चन्द्रमा, बुध, शुक्र इन तीन शुभ ग्रहोंके परमोच्चांश मिथुनकी अंश संख्याओंमें निश्चित हैं। ३, १५, २७ मिथुनकी अंश संख्यायें हैं।

चन्द्रमा प्रथम शुभ ग्रह है। इसलिए मिथुनकी ३, १५, २७ अंश संख्याओंमें छोटी अंश संख्या ३ चन्द्रमाके लिए उचित है। अतएव वृषका तीसरा अंश चन्द्रमाका परमोच्चांश सिद्ध हुआ। सूत्र १६ से मिश्र ग्रह (बुध) यहाँ शुभ माना गया है।

बृहस्पतिकी उच्च राशि ४ चन्द्रमाकी उच्च राशि २ से आगे है। बृहस्पतिके लिए सिंहका अंश निश्चत है। चन्द्रमाकी परमोच्चांश संख्या ३ है। सिंहकी ५, १७, २६ अंश संख्याओंमें ५ अंश संख्या ३ से आगे है। इसलिए सूत्र १८ से कर्कका पांचवां अंश बृहस्पतिका परमोच्चांश सिद्ध हुआ।

शुभ ग्रह बुधकी उच्च राशि ६ शुभ ग्रह बृहस्पतिकी उच्च राशि ४ से आगे है। बृहस्पतिकी परमोच्चांश संख्या ५ है। मिथुनकी ३, १५, २७ अंश संख्याओंमें १५ अंश संख्या ५ से आगे है। इसलिए सूत्र १८ से कन्या का पन्द्रहवां अंश बुधका परमोच्चांश सिद्ध हुआ। शुभ ग्रह शुक्रकी उच्च राशि १२ शुभ ग्रह बुधकी उच्च राशि ६ से आगे है। बुधकी परमोच्चांश संख्या १५ है। मिथुनकी ३, १५, २७ अंश-संख्याओंमें २७ अंश-संख्या १५ से आगे है। इसलिए सूत्र १८ से मीनका सताईसवां अंश शुक्रका परमोच्चांश सिद्ध हुआ। (क्रमशः)

★

मेष लग्न जातक

(ले०---श्री नन्दकिशोर 'गर्ग' ज्योतिर्विशारद)

मेष भचक्रके द्वादश विभागोंमें सर्व प्रथम स्थान है। यह चर तथा अग्नि तत्त्व राशि है। स्वामि इसका मङ्गल है। इसका स्वरूप मेढ़ेके समान कहा गया है। वृहज्जातक के टीकाकार महीधरने एक दोहेमें इसका स्वरूप कहा है—

मेढ़े सूरत रक्त तनु, बनवासी है मेष।
रतनखान तस्करपति कहत महीधर वेष ॥

स्वामी मङ्गलके समान यह भी लाल रङ्ग धारण करती है तथा निवास इसका वनमें है। मेढ़ा पशु तथा चतुष्पद है इसी कारण इनका निवास भी वनमें ही है। इस लग्नमें उत्पन्न होने वाले जातकके शरीर,, रूप रङ्ग, स्वभाव तथा अन्य सभी बातों पर इस राशिका प्रभाव होता है। इसका स्वामी मङ्गल युद्ध, उत्पात साहस का ग्रह है। मानवीय कृत्योंमें यह राशि साहस का द्योतक है, जो अन्वेषणकी मनोवृत्ति उत्पादन करती है जिससे मनुष्य जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें नवीन मार्गोंकी खोज करता है। साथ ही उसमें वह साहस व उत्सुकता होती है जिसके बिना संसारकी कोई पदार्थ प्राप्त नहीं किये जा सकते। भचक्रकी सर्व प्रथम राशि होनेके कारण इसके जातक सभी कार्योंमें प्रथम रहना चाहते हैं, कभी भी पीछे अथवा निम्नपद रहनेकी इच्छा नहीं करते। दृढ़ एवं प्रभाव शाली व्यक्तित्व होनेसे स्वयं से बड़ा किसीको नहीं मानते। सैनिक ग्रहकी राशि होनेसे इसके जातक महत्त्वकांक्षी, प्रगतिप्रिय तथा सनकी स्वभावके होते हैं। सम्मान प्राप्तिकी इच्छा, आगे बढ़नेकी भावना, साहसिक मनोवृत्ति उनकी सफलता और यश प्राप्तिमें सहायक होती है। वे कोई भी काम, चाहे जो हो, करनेका नेतृत्व स्वीकार कर लेते हैं। परन्तु अहं भाव की अधिकताके ये अपनी राय को अधिकृत मानते हैं। अपनेसे इतर सभी कल्पनाओं तथा कारणोंको हेय एवं तुच्छ समझते हैं। इनकी बात चीतमें भी मैं, मेरा हमारा आदि शब्दोंका बाहुल्य होता है। अपने आगे वे किसीकी बातको नहीं मानते है। इस कारण वादविवाद भी अधिक करना पड़ता है। वह भी इतना अधिक कि अपने निश्चय व मतको दृढ़ एवं मान्य करनेके प्रिये विवाद करते करते झगड़ा तक मोल ले लेते हैं। यह राशि अग्नि-तत्त्व तथा पुरुष राशि होनेसे दृढ़ निश्चय, चरित्रका बल तथा कार्य करनेकी असीम क्षमता होती है। परन्तु उनके ये सब गुण तथा प्रभाव वहां प्रकट होते हैं जहां उनकी नेता-गिरी प्रतिद्वन्दी--रहित हो और कोई उनकेने तत्त्वमें शङ्का अथवा प्रश्न न करे। यदि किसी कारणसे कोई दल पलट जाता है और वे सहयोगीके स्थान पर उल्टी असहयोगी वृत्ति धारण कर लेते हैं। इसका एक कारण और भी है वह यह कि इनके स्वभावमें पूर्व सावधानी और किसी भी बातको यों ही छोड़ देनेकी वृत्ति नहीं होती। उनको अपने आगे समाज अथवा अन्य किसी भी बातका ध्यान नहीं होता। ये अपने स्वाभिमान्में एकान्तमें रहना ही अधिक अच्छा समझते हैं। कोई लेशमात्र छेड़ कर दे फिर उनकी अग्नितत्त्व-प्रवृत्ति देखिये। सहसा क्रोधित होकर विरोधमें संलग्न हो जाते हैं, तथा हठी इतने होते हैं कि उसे अन्त तक नहीं छोड़ते। कि अंग्रेजी लेखक ,महोदय श्री बिकफोर्ड ने इनके लिए लिखा है "War to death" अर्थात् "मृत्यु तक संग्राम" इनका हो जाता है। फिर भी मेष लग्नमें उत्पन्न जातक आदर्शवादी एवं भावुक होते हैं, उन का भले बुरेका अपना मापदण्ड अलग होता है। दूसरोंके दोष जानते हुए भी क्रोध नहीं करते न किसीके वाद-विवाद में पड़ते हैं। अग्नितत्वकी चर राशि होनेसे ऊष्माके कारण स्थिर नहीं रहते। इनके विचारोंमें निरन्तर परिवर्तन चला करता है। चञ्चल विचारोंके कारण समयकी गतिके साथ चल सकते हैं। सप्तममें शुक्रकी राशि होनेसे ये प्रेम सम्बन्धमें भी शीघ्रता करते हैं। साहसी होनेसे प्रवेश तो कर जाते हैं परन्तु पार उतरनेमें कठिनाई होती है पञ्चममें

राज-राशि सिंह व त्रिकोणोंकी अग्नितत्व राशियां भी क्रोधी एवं राजसि मनोवृत्तिकी द्योतक हैं। धर्मकार्यमें श्रद्धा तो रहती है परन्तु चञ्चलता अधिक रहनेसे विचारोंका परिवर्तन होता रहता है ये स्वरूप मान देखते हैं शीघ्रता वश गहराई तक पहुंचानेका प्रयत्न नहीं करते। प्रसिद्ध भी इनकी शीघ्र हो जाती है चाहे स्थाई न रहे जीवनमें उन्नति अवनतिके कई झोके सहना पड़ते हैं। कठिनाइयां झेल कर भी अपनी स्थिति पर अधिकार रखते हैं। विशेष विचारणीय बात तो यह है कि इनका हृदय बड़ा उदार होता है। चतुर्थ व नवम चन्द्र गुरु राशियां उदारता, दया, भावुकता आदि कोमल वृत्तियोंके संस्कारोंका लक्ष्य करती हैं। व्ययके विषयमें भी बड़ी उदारता दिखाई देती है जो बढ़ते-बढ़ते निरंकुशता अथवा निरर्थक व्यय तक पहुँचती है। परन्तु हृदय इनका भोला होता है। फिर भी कुटुम्बसे योग्य शान्ति प्राप्त नहीं होती। पञ्चममें बन्ध्या तथा अग्नितत्व राशि अल्प सन्तान बताती है, बचपनसे ही सांसारिक बन्धनोंमें फंस जाते हैं तथा वियोग, मरण आदिका दुःख भी भोगते हैं। प्रेम भी उनका इस कारणसे सफलतासे नहीं चलता मङ्गलका फल २८ वर्षकी आयुमें होना कहा गया, तदनुसार २८वें वर्षमें। इनका भाग्योदय होता है। सिंह तथा धन राशि वालोंसे भागीदारी, मित्रता अथवा प्रीति शुभ होती है। क्षत्रिय तथा ब्राह्मण वर्णसे लाभ होता है।

मार्गशीर्ष, फाल्गुण, चैत्र, श्रावण मास शुभ फल देते हैं, ज्येष्ठ आषाढ़ एवं भाद्रपद शुभ फल साधारण रूपसे देते हैं। बैशाख आश्विन (कुवांर पौष और माघ शुभ होते हैं, केवल कार्तिक मास विशेष पीड़ा कारक होता है।

शरीर पर प्रभाव व रोगादिक

मेष लग्नके जातक पतले शरीर वाले, मध्यम कदके होते हैं, शरीरके अवयव, हड्डियां दृढ़ होती हैं। आँखें क्वचित् छोटी-छोटी मुख तथा गर्दन लम्बी तथा सिर छोटा होता है। वर्ण राशिके वर्णके अनुसार ललाई लिए होता है चञ्चल प्रवृत्तिके कारण वन, पर्वत या विदेशोंमें घूमने वाले होते हैं, नवीन बातें जान कर प्रसन्न होते हैं। निरन्तर कार्यमें लीन रहनेकी भावना होनेसे मस्तिष्क काम करता रहता है जिनके कारण बराबर निद्रा भी नहीं लेते। मेष राशि काल पुरुषका सिर होनेसे अशुभ प्रभावके कारण इस लग्न वाले जातकको मस्तककी पीड़ा होती है। मस्तिष्कमें निर्बलता, ज्ञान तन्तुओंमें ढिलाई तथा सिर व मुखमें रोगादिकका भय होता है। चञ्चल प्रवृत्तिके कारण जीवन अनियमित होता है इससे ज्वर, वमन तथा अन्तड़ियोंमें भी पीड़ा होती है। राशिकी अग्नि तत्व गर्मीके उपद्रव, अग्नि भय, लोह, लकड़ी, शस्त्रादिकसे भय करते हैं क्योंकि चस्त्रोंका अधिपति मङ्गल ही है। रक्तमें ऊष्णता होनेसे चेचकका प्रकोप भी जोरसे होता है तथा सिर व मुंह पर चिह्न हो जाते हैं। सप्तममें शुक्रकी राशि है शुक्रकी अशुभ स्थिति गुह्य रोगों को उत्पन्न करती है।—श्री सत्यनारायण रावने अपनी "Text book of scientific Astrology" में मेष लग्न जातकके रोगोंका उल्लेख किया है:—

Diseases:—Tendency to inflamnatory diseases, Affections of brain. Insomnia—colic, Neuralgia—Coma—Trance etc.

धन्धा व प्रवृत्ति

आदर्शवादी, चञ्चल तथा राजसी वृत्ति होनेके कारण इस लग्नके जातक एक कार्य या स्थानमें स्थिर नहीं रहते बार २ विचारों तथा कर्तव्यमें परिवर्तन कर देते हैं। छोटी-छोटी बातें या कार्य नहीं रुचते। वे सदैव ऊँचे, तथा बड़े परिमाणोंके कामोंकी इच्छा रखते हैं। वे ही युक्तियां सोचते हैं जो महान् एवं विशद् हों। जीविकाके लिए लग्न, दशम चतुर्थ आदिको देखा जाता है। चतुर्थमें कर्क राशि तथा दशममें मकर राशि है। मङ्गलभूमिपुत्र होनेसे अपनी राशि के जातकको भूमि सम्बन्धी बातोंसे लाभ देता है इससे इस लग्न वाले कृषक, भूमिस्थित वस्तुओंको खोदने वाले तथा उनका व्यवसाय करने वाले होते हैं। मङ्गल व शनि मिलकर इनको इञ्जिन चलाने वाले बायलरकी देख रेख करने वाले, सुनारी, सुतारी अथवा लुहारीका काम करने वाला बनाता है। शनिका सम्बन्ध तेलसे होनेसे ये घानी (तेलकी मशीन) चलाने वाले भी होते हैं। पशुके (चतुष्पद) राशि तथा बनवासी होनेसे पशुके व्यवसायी, पशुओंसे प्राप्त वस्तु ऊन, चमड़ा

आदिके व्यवसायी होते हैं वनकी वस्तुओं वनस्पति, लकड़ी फल फूल आदिका व्यवसाय भी करते हैं। सैनिक ग्रहकी सैनिक ऊरुणतत्व राशि होनेसे इस लग्नमें अनेकों, अन्वेषक, नेता तथा योद्धा जन्म लेते हैं। तथा उत्तम व्यवस्थापक हुए हैं—

न्यूनताएं तथा हितवचन

इस लग्नके जातककी चञ्चलता तथा उष्णता अस्थिरता, झगड़ालू प्रवृत्ति, धार्मिक विषयमें मतभेद, पैतृक संपत्ति तथा पत्नीसे झगड़ा, असीम कोल्थ निरर्थक व्यय करनेका स्वभाव तथा असहन शीलता आदि निर्बलता होती हैं जो जीवनको अनियमित कर देती हैं तथा पर्याप्त सफलता इच्छानुसार नहीं मिलती। अतः इनको नियमित जीवन बिताना चाहिये। नींद पूरी लेना चाहिये। शरीर व मनमें दुविधा, अथवा अव्यवस्था उत्पन्न हो ऐसी प्रवृत्ति रखना चाहिये। शान्त तथा आनन्दित वातावरण में रहना अच्छा है ऊष्ण चिरपरे तथा मादक पदार्थो का सेवन थोड़ा करना चाहिए, जहां तक हो सार–पूर्ण तत्व वाले पदार्थ खाना चाहिये। सोने से दो घण्टे पहले हल्का भोज करें। इन भोगोंको कोई भी रोग हो तो तुरन्त उपाय करना चाहिये जिससे रोगकी जड़ न जमने पावे क्यों कि पीड़ा जमने पर प्रयत्न करना व्यर्थ है।—

शुभाशुभ ग्रहादि एवं मारक विचार

मेष लग्नमें उत्पन्न जातकके लिये मानसागरीमें मिलता है (पृष्ठ ५६)

मेष लग्ने समुत्पन्नश्चण्डोमानी धनी शुभाः
क्रोधी स्वजन हन्ता च विक्रमी परवत्सलः

अर्थात् जातक प्रचण्ड, अभिमानी, धनवान्, क्रोधी, स्वजन, को मारने वाला तथा पराक्रमी होता है, दूसरोंका भला करता है। अधिपतित्वके अनुसार पञ्चमेश सूर्य है तथा नवमेश गुरु है ये दोनों शुभ फल कारक हैं। केन्द्रका स्वामी चन्द्रमा कृषि, पैतृक सम्पत्ति आदिका प्रिय शुभ होता है। महर्षि पाराशर जीने लिखा है:—

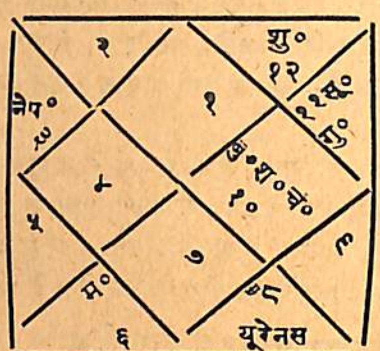
(मारक निर्णये विशेष)

"मन्द सौम्य सिताः पापाः शुभौ गुरू दिवाकरौ
न शुभं योग मात्रेण प्रभवेच्छनिजीवयोः ॥
परतन्त्रस्य जीवस्य पापकर्मादि निश्चतम्।
कविः साक्षान्निहन्ता स्यान्मारकत्वेनलक्षितः ॥
मन्दादयो नहंता ये भवेयुः पापिनो ग्रहाः।
शुभाशुभ फलान्येवं ज्ञातव्यानि क्रियोद्भवे ॥"

अर्थात् शनि, शुक्र व बुध पाप ग्रह होते हैं, गुरु व सूर्य शुभ ग्रह हैं। वैसे दशमेश नवमेशकी युति राजयोग कारक मानी गई हैं परन्तु यहां गुरु व शनिका संयोग अशुभ कहा गया है, कारण यह है कि परतंत्र होकर गुरु पाप प्रवृत्ति धारण कर देता है। शनिके साथ हो जानेसे गुरुका शुभत्व नहीं रहता है। पाराशर कहते हैं कि यह निश्चित है। दशमेशनवमेशकी युतिके साथ ही यह युक्ति लाभेश व्ययेशकी भी होती है। यदि शुक्र मारकेश हुआ तो स्वयं ही मारने वाला होता है शनि आदि पाप ग्रह नहीं मारते हैं।

पाप ग्रह होते हुए भी शुक्र आर्थिक सम्बन्धोंमें शनि (मित्र) का साथ पाकर शुभ स्थितिमें शुभ फल देता है। वाचक वृंद के अनुभवार्थ कुछ महत्वपूर्ण जन्मांगोंका उद्धरण देता हूँ जो मेष लग्नमें उत्पन्न हुए हैं।

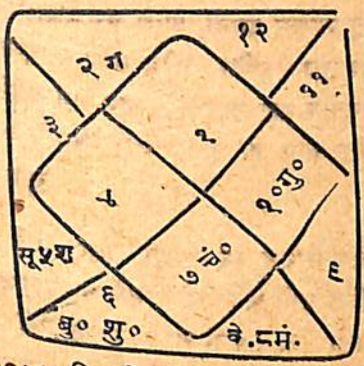
श्री० एच० एन० एंजीनियर इङ्गलैण्ड (रिटएर्ड)



जन्म श्री एच० एन० एंजीनियर इंग्लैंड (रिटर्न्ड) २४ फरवरी सन् १९०३ समय ३-२० (लगभग) (Tex Book of scientific Astrology से सादर उद्धृत) जातक एक इंजीनियर हैं तथा शैक्षणिक योग्यता बुद्धिमता परस्पर व्यवहार आदि के प्रिय २० ख्याति प्राप्त हैं। सूर्य गुरु शुभ कारकका योग है, कर्तृत्व शक्ति विद्युत्शक्ति योग्यता आदिमें महान् हैं, न हरे खोदना, पुल बनाना,

चित्रकारी आदिमें दक्ष हैं। सूर्य गुरुका योग ही बताता है कि आपने जीवनमें अनेकों सुअवसर प्राप्त किये तथा उनका काम लिया।

श्री हर्षचन्द्रजी सेठी छावनी आगरा—



सं० १९४७ विक्रमी प्रथम भाद्रपद सुदी ५ बुधवार इष्ट ४१--५२ सूर्य ४--५--७-६

आपमें इस लग्न जातककी अनेक वृत्तियां पाई जाती हैं। योगकारक सूर्यसे शनिका साथ, धनेश शुक्रका नीच गत षष्ठमें होना तथा मङ्गल केतु राहुके धन स्थान पर प्रभाव ने आपको एक लक्षाधीशसे निर्धन बना दिया है। फिर भी आपका साहस प्रशंसनीय है। बुध गुरुके कारण आपने हर प्रकारका शास्त्र अध्यन किया है तथा विद्या पाई है। पञ्चममें शनि तथा (द्वितीय) वाक्स्थानमें राहुका सहयोग म्लेच्छ भाषा (फारसी उर्दू) आदिके प्रयोगका कारण है। ध्यान देनेकी बात है इस लग्नके ६ ग्रह चलित में हैं। सूर्य शनि पिता पुत्रमें समय समय पर विरोध उत्पन्न करा देते हैं।

"तापस वेष विशेष उदासी"

[श्री पं० नन्दकुमारजी शर्मा कविरत्न]

गीताप्रेस गोरखपुरसे प्रकाशित होने वाली 'मानस-शङ्का समाधान' नामक पुस्तकमें उसके सुयोग्य और परम भागवत लेखक स्वर्गीय श्री जयरामदासजी 'दीन' ने अपने भाव-प्राण हृदयसे मानस पर उठने वाली शङ्काओं का निवारण खूब ही किया है। किन्तु एककी कही हुई बात समस्त संसारको ही मान्य हो यह सर्वथा असम्भव ही है। फलतः उनके समाधानों पर भी कहीं कहीं मुझ अल्पज्ञ को शङ्का रह ही गई है। उनमेंसे एक शङ्काको सहृदय पाठकोंके सम्मुख रक्खा जाता है।

स्वर्गीय 'दीन' जीने उक्त पुस्तकके १४वें पाठमें "श्रीरामको चौदह ही वर्षका बनवास क्यों" शीर्षक देकर उसका समाधान करते हुए लिखा है कि रावणकी आयु केवल १४ ही वर्ष शेष थी, और कैकेयीकी बुद्धिको 'गई गिरा मति फेर'के अनुसार दैवी प्रेरणा हुई थी। ठीक ही है, इसमें हमें भी कोई आपत्ति नहीं। आगे इसी प्रकरणमें 'तापस वेष विशेष उदासी'का समाधान करते हुए आप लिखते हैं—"तापस वेष और विशेष उदासी रहनेकी शर्त रखनेका उद्देश्य यह था कि मुनि और तपस्वियों पर ही घर्माघात करनेके लिए रावण तथा अन्य राक्षसोंका विशेष आक्रमण हुआ करता था" यह भी ठीक है, इसीलिए सरकारका तापस वेष ठीक ही हुआ।

×××××× अब रही विशेष उदासीकी बात। सो तापस वेष रखना तो बाह्य वृत्ति बनाना है। किन्तु केवल साधुका वेष बनाकर प्रपञ्च रत रहना उस वेष की भी निन्दा करना-कराना है"—उक्त वाक्योंकी पुष्टि दीनजीने "सोचिअ जती प्रपञ्चरत विगत विवेक बिराग" उद्धरण देकर की है। आगे भी लिखा है "इस तापस वेषके साथ साथ उदासीन वृत्ति अर्थात् प्रपञ्चसे उपेक्षा

भी होनी चाहिए तभी उसकी गिनती साधु समाजमें हो सकती है।"

हमारी अल्प बुद्धिमें दीनजीका विशेष उदासीका यह समाधान प्रातःस्मरणीय श्री गोस्वामीजीके ही महत्त्वको नहीं वरन उनके परमाराध्य तथा आदर्श भगवान् रामके महत्त्वको भी घटाने वाला है। कारण कि यों तो भगवान् श्रीराम जगदीश्वर घट-घट वासी हैं। किन्तु जब वह संसार के सम्मुख मर्यादा पुरुषोत्तम श्री दशरथनन्दनके रूपमें प्रकट होते हैं तो उनके चरित्र लौकिक एवं मानवोचित ही होते हैं और आलोचक भी उन चरित्रोंको उसी दृष्टिसे देखते हैं। तभी [भगवान्‌का वह वपु लोक-कल्याणकारी एवं उनके चरित्र "सुमिरि सुमिरि भव उतरहिं पारा" बनते हैं।

गोस्वामी श्री तुलसीदासजीने मानस जैसे बृहद् ग्रन्थमें इस बातका पूर्ण ध्यान रक्खा है कि किसी भी प्रकरण व कथ एवं शब्दका ऐसा उपयोग न हो जिसमें उसी ग्रन्थमें पूर्वापर विरोध प्रकट हो सके। उन्हें युगल सरकारको बनमें भेज निशिचर कुल निधन कराना था। फिर भला गोस्वामीजी जैसे विचारवान् जिन्होंने "सुमन पाय मुनि पूजा कीनी, पुनि अशीष दोउ भाइन दीन्हीं" में पुष्प पाकर पहिले पूजा करा विश्वामित्रजीसे 'पुनि अशीष' दिलाई है। धर्मके इस सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्वको भी निज दृक्-पथसे ओझल नहीं होने दिया है, वही गोस्वामी उपरोक्त अभिप्रायसे 'विशेष उदासी' का प्रयोग कर पुनः उन्हीं राम द्वारा सीताखोज, सुग्रीवमिताई, बालिवध, जटायुसंस्कार, सेतुबन्ध, तथा रावणादिका संहार कराते? हमारी दृष्टिमें तो ऐसी बड़ी भूलका आरोप पूज्यचरण श्री गोस्वामीजी पर लगवाना सर्वथा भ्रम मूलक ही प्रतीत होता है। क्या उक्त वनवास की अवधिमें श्रीराम द्वारा किये हुए कर्म दीनजीके समाधान के अनुसार प्रपञ्चसे परे और धर्म-सम्मत उदासी वृत्तिके द्योतक थे। किसी भी विचारवान् धर्म प्रेमीकी दृष्टिमें यह बात कभी भी नहीं आ सकती।

हमारी क्षुद्र बुद्धिमें तो इस 'विशेष उदासी'का अर्थ उसी नीतिसे सम्बन्ध रखता है जिसे आज कलका सभ्य समाज पौलीटिक्सके नामसे पुकारता है और इसी पौलीटिक्सकी झलक मानसमें पग पग पर पाई जाती है। जिस कैकेयीने तनिक भी विलम्ब सहन न कर—

'मुनि पट भूषण भाजनु आनी, आगे धर बोली मृदु बानी।
नृपहि प्रान प्रिय तुम रघुबीरा, शील सनेह न छांडहिं भीरा।
सुकृत सुयश परलोक नशाऊ, तुमहि जान वन कहहि न राऊ।
अस विचार सोइ करहु जो भावा, राम जननि सिख सुन-
सुख पावा ॥"

जैसा अप्रिय काण्ड कर डाला क्या 'गई गिरा मति छूत' से प्रभावित उसी कैकेयीको उनसे धनुषबाण परित्याग करनेको नहीं कहा जा सकता था? किन्तु नहीं यह एक दैवी प्रेरणा थी। भगवान्‌का तो निशिचरकुलका नाश करनेको अवतार ही हुआ था और देवोंको भी यही कराना था। फलतः तापस वेष तो सरकारका रहे ताकि निशिचर उनसे अवश्य छेड़ छाड़ करें, किन्तु वह वास्तवमें संसार त्यागी प्रपञ्च रहित उदासी नहीं, वरन निशिचर निधनकारी एवं लोककल्याणकारी उदासकी भांति रहें और इसी अभिप्रायसे गोस्वामीजीने 'विशेष' उदासी शब्दका प्रयोग 'तापस वेष'के साथ किया है, जिसका सीधा अर्थ विशेष प्रकारका उदासी ही हो सकता है। क्योंकि यदि इसके प्रतिकूल दीनजीका अर्थ ही गोस्वामीजीको अभिप्रेत होता हो तो उनकी कैकेयी जिस प्रकार मुनि वेष धारण करानेसे न चूकी उसी प्रकार धनुष बाण भी अवश्य परित्याग करा देती।

आशा है कि मानसके एक अल्प बुद्धि विद्यार्थीके नाते मैंने जो कुछ भी लिखा है मानस प्रेमी विज्ञ महानुभाव इन पंक्तियों पर अवश्य ध्यान देनेकी कृपा करेंगे। यदि इस समाधानसे पाठकोंका कुछ भी हित हुआ तो भविष्य में भी उक्त विषय पर कुछ प्रयास किया जायगा।

लुम्बिनी उपवनकी वर्तमान दशा

[लेखक—: श्री काशीप्रसादजी श्रीवास्तव एम० ए०]

नैपालका प्राचीन इतिहास बहुत ही भव्य एवं परम पुनीत है। लोगोंका चिरविश्वास है कि नैपाल राज्य सतयुग ही से स्थापित है और यही कारण भी है कि इस राज्यमें आज तक कई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। अब भी नैपाल अपना मस्तक ऊपर उठाए हुए है। नैपाल अन्नपूर्णाका राज्य है, यहां कभी अकाल नहीं पड़ता। लोग कहते हैं यहां तो अकाल पड़ ही नहीं सकता—क्योंकि 'नैपाल' शब्दके मूलमें ही एक धार्मिक कहानी तिरोहित है। वस्तुतः नैपाल को ऋषियों और मुनियोंका घर और जन्मस्थान कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। पहाड़ोंमें घूमनेसे अब भी इस कलियुगमें भी विचित्र विचित्र महात्माओंके दर्शन हो जाते हैं। यहां नाना प्रकारके धर्मस्थानोंका बाहुल्य है। हिन्दु-धर्मका मूल उद्गम नैपाल तो है ही, परन्तु बौद्ध धर्मका भी मूल केन्द्र माना जा सकता है। बुटवल जिलेमें अब भी बौद्ध धर्मके भग्नावशेष अपनी प्राचीनता और विशालता का महत्त्व प्रत्येक पुरातत्त्वानुरागी विद्वान्के समक्ष उद्घोषित करते हैं। इनमें लुम्बिनी उपवन जो आजकल 'रुम्मिनदेई' के नाम से सुप्रसिद्ध है अपना विशेष स्थान रखता है—जो लोग वहां तक नहीं जा सके हैं वे तो समझते होंगे कि सारनाथ की भाँति लुम्बिनी उपवन भी जगमगाता हुआ मिलेगा, क्योंकि लुम्बिनी उपवन तो भगवान् बुद्धका जन्म स्थान है पर जाने वाले तो यह देख ही चुके होंगे कि वहां की वर्तमान दशा कितनी दुःखप्रद है।

गन्दगी—

यों तो समस्त नैपाल राज्य गन्दगी और मूर्खता का गढ़ हो गया है। जिस देशके निवासी अक्षर नहीं पहचानते, जिस राज्यके नागरिक केवल अंगूठे को निशानी लगाकर शताब्दियोंसे काम चला रहे हैं, जिस प्रांतके बेचारे कृषक पत्र को पढ़ानेके लिए दिन दिन चक्कर काटते हैं—भला उनकी गंदगी और मूर्खताका लेखनीके द्वारा कहां तक वर्णन किया जा सकता है। 'नैपाली गंदे होते हैं' यह तो समस्त विश्व-जान गया है। ट्रेनों में नैपाली जिस डिब्बे में अधिक बैठ जाते हैं उस डिब्बेमें कोई भी सभ्य नागरिक बैठनेका साहस ही नहीं कर सकता। यदि कोई दैवात् बैठ भी जाय तो उनकी दुर्गन्ध ('झौंला हिनग्ना') तो कोई सह ही नहीं सकता। यद्यपि लुम्बिनी उपवनके आसपास थारुओं और मधेशियोंकी आबादी है, परन्तु—निर्धनता एवं निरक्षरताके कारण उस पर कोई विशेष ध्यान ही नहीं देता। नैपाल सरकार जब अपनी राजधानी काठमांडू को ही स्वच्छ और सुसज्जित नहीं रख सकती तो फिर एक दूसरे धमके दर्शनीय स्थान की उपेक्षा क्यों न करे? 'हिस्ट्री आफ नैपाल' के बारहवें पृष्ठमें श्री डेनियल राइटने लिखा है Kathmandu may be said to be built on a dunghill in the middle of latrines अर्थात् "काठमाण्डू लीद की पहाड़ी पर पाखानों के बीचमें बसा है। इस प्रतिका अनुवाद मुंशी शिवशंकर सिंह और पंडित गुणानन्द जी ने किया है।

कुछ दिनों पहले यहां बकरे खूब काटे जाते थे और देहातकी भोली जनता मन्दिरके सामने ही सिर मुड़वाती थी। पास ही में कोई नदी न होने के कारण लोगोंके स्नान करनेके लिए नैपाल सरकार ने वहां एक पक्का तालाब बनवा दिया है, परन्तु बंधा हुआ पानी और काई की अधिकतासे तालाब इतना गंदा हो गया है कि जो कोई भी स्नान कर ले तत्काल बीमार हो जावे। प्रायः देखा जाता है कि मेलोंके दिन प्याससे बेचैन प्राणी उसका पानी पी लेनेसे हैजे के शिकार हो जाते हैं। धर्मशालाके पास एक कुआँ बन जानेसे वहांके यात्रियों और अतिथियों को पानीका कष्ट नहीं उठाना पड़ता—परन्तु मन्दिर के पास कोई जलाशय न होनेसे वहाँ पानी की बहुत ही तकलीफ होती है।

और तो और; वहाँ की जमीन बहुत ही कंकड़ीली और ऊबड़ खाबड़ है। जिसका बहुत बड़ा ऐतिहासिक एवं

सांस्कृतिक महत्त्व भी है, परन्तु वहां की कटीली झाड़ियां तो पग-पग पर यात्रियोंको उलझाए रहती हैं। सूर्यास्तके पश्चात् तो कोई वहां रह ही नहीं सकता। बरसातके दिनों में विषैले सांपों की बहुलता हो जाती है और यही कारण है कि वहां का पुजारी रातमें किसी को रहने ही नहीं देता। फाल्गुन पूर्णमासी और चैत्र रामनवमीके अवसर पर यहां दो बहुत बड़े बड़े मेले लगते हैं; जिनमें अब बकरे तो नहीं कटने पाते परन्तु लोग सिर मुँड़वा कर कढ़ाई तो चढ़ा ही देते हैं। हो सका तो मंदिरके सामने सत्यनारायण की कथा भी सुन लेते हैं। मंदिर का पुजारी तो पाली बिल्कुल नहीं जानता। उसे सिर्फ सत्यनारायण कथा और दुर्गापाठ ही पूर्णरूपेण कंठस्थ है। इन्हीं दोनों ग्रन्थोंका पाठ प्रतिदिन नियमपूर्वक प्रातः काल में करता है। यदि कोई कहे कि यह तो गौतमबुद्ध का जन्म स्थान है यहां तो धम्म पदका पाठ होना चाहिए, हिन्दुओंके धार्मिक ग्रन्थोंका पाठ तो नहीं होना चाहिए तो इस शंका का समाधान करते हुए पुजारी यह कह उठता है कि गौतमबुद्ध जन्म कालमें हिन्दू ही थे; सारनाथमें भले ही धम्मपदका पाठ उचित माना जाए पर यहां तो सत्यनारायणकी ही कथा होनी चाहिए। जन्मकालमें गौतम बुद्ध तो हिन्दु ही थे बौद्ध तो जन्मके वर्षों पश्चात् हुए थे।

चार पांच वर्षोंसे मंदिरके पश्चिम सटकर ही गहन की खेती होने लगी है और डर लगता है कि ये खेती करने वाले धीरे धीरे मन्दिर और लाटको हानि पहुँचा कर भी खेती करना न प्रारम्भ करदें। खेतिहर देश में अपढ़ किसानोंकी दृष्टि में प्राचीन इतिहासका क्या महत्त्व? ये लोग ईंटें इसलिए नहीं उठा ले जाते कि डरते हैं—लोगों का विश्वास है कि जो एक भी ईंट उठा ले जाता है उसके गांवमें हैजेकी बीमारी तुरन्त ही पड़ जाती है अथवा वह आदमी ही मर जाता है।

खतरा—

लोग कहते हैं जंगलोंमें शेर और तराईमें डाकू बसते हैं। यह कथन बहुत अंशोंमें सत्य भी है। लुम्बिनीकी महत्ता एवं प्राचीनताको स्मरण कर बौद्ध-धर्मावलम्बी प्रतिवर्ष हजारोंकी संख्यामें यहां आते हैं। लंका चीन जापान बर्मा और आसामके लोग तो विशेषरूपसे आते हैं। ये लोग समय और रुपएकी कुछ परवाह न करके श्रद्धावश यहां आते और फूलपत्ती चढ़ाकर परिक्रमा करके वापस चले जाते हैं। यहां आने पर जब वे लोग यहां की दुर्दशा देखते हैं तो उनके उत्साह ठंडे पड़ जाते हैं। नैपाल सरकारने उन लोगोंके रहनेके लिए एक धर्मशाला भी बनवा दी है, परन्तु वहांका प्रबन्ध देखकर मन उचट जाता है। दुबारा वहां जानेकी हिम्मत नहीं होती। ये बौद्ध या तो पाली संस्कृत जानते हैं और या अंग्रेजी। भला ये भोजपुरी और थरुहट क्या जाने? इसीलिए ये लोग नौतनवा या नौगढ़ स्टेशन से उतरते ही दो एक ऐसे दुभाषियोंको साथ ले लेते हैं जो अंग्रेजी और वहांकी ग्रामीण भाषा भी जानता हो। यदि ऐसा न करें तो ये बेचारे खाने पीनेके बिना ही मर जाएं। धन्यवाद उस नैपाल सरकार को है जिसने अब विदेशियों के खाने-पीने एवं रहनेके लिए कुछ विशेष प्रबन्ध कर दिया है।

वह इन्तजाम भी उन बौद्धोंके लिए उपादेय सिद्ध नहीं हो पाता। लुम्बिनी उपवनसे डेढ़ मीलकी दूरी पर दक्षिण की तरफ खुनगाई ग्राम है। वहां एक प्रतिष्ठित जमींदार श्री सीताराम चौधरी हैं। उन्हींके द्वारा नैपाल सरकार उन यात्रियोंके खाने-पीनेकी सुविधा कराती है। परन्तु कुछ लोगोंके मुंहसे ऐसा भी सुननेमें आया है कि वहां उन्हें किसी भी प्रकार की सुविधा नहीं मिल पाती। इसका प्रमुख कारण नैपाल सरकारकी अनुदारता एवं असावधानी ही है। स्टेशनसे आनेमें इन्हें नाकों चने चबाने पड़ते हैं। नौतनवा और नौगढ़से आनेमें इन्हें दो तीन दिन लग जाते हैं। दस मीलका रास्ता ये लोग तीन दिनमें तय कर पाते हैं। रुपए अधिक देने पर भी बैलगाड़ी नहीं पाते। किसान इनसे न जाने क्यों डरते हैं और लारी इक्केका कोई इन्तजाम न देखकर पैदल ही बाल बच्चों को घसीटना पड़ता है। यहां का पानी भी खराब है। इसलिए ये लोग आते ही बीमार पड़ जाते हैं। उनको कोई अस्पताल न पाकर किसी प्रकार भागना ही पड़ जाता है।

नैपाल राज्य पाँचसौ मील लम्बा और एकसौ तीस मील चौड़ा है। यहाँ की जनसंख्या भी एक करोड़ है।

परन्तु नेपाल सरकारकी ओरसे पुलिसका कहीं भी नामो-निशान नहीं। गोरखे और पहाड़ी विशेष लड़ाकू होते हैं यह सबको विदित है। फौजी लड़ाईका काम करनेमें ये बहुत ही निर्भीक होते हैं। सिपाही बनना इनका जन्मजात पेशा है। लड़ाईके पैसे ही से इनका भरण-पोषण होता है। यही कारण है कि नैपाली दुनियाके कोने कोनेमें बिखर गए हैं। यों तो नैपाल सरकारकी अपनी बहुत ही सुदृढ़ फौज है प्रत्येक जिले और तहसीलमें भी कुछ फौजी सिपाही रख दिए गए हैं परन्तु सुदूर गांवोंकी रक्षाके लिए तो पुलिस नाम मात्रकी ही है। बुटवल जिलेमें कई तहसीलें हैं। लुम्बिनी उपवन भैरहवा तहसीलके अन्तर्गत है। भैरहवा और लुम्बिनीके बीचमें आठ मीलका अन्तर है इसलिए भैरहवा की पुलिस भी लुम्बिनीमें नहीं आ सकती। हां, भगवानपुर छावनीके सिपाही ही वहांके यात्रियोंके जानमालकी सुरक्षा कर सकते हैं। परन्तु वे लोग भी यात्रियोंकी ओर विशेष ध्यान नहीं देते। राज्य नैपालका कुछ माल भारतके अन्दर नहीं आने पाता और भारतका भी कुछ भी माल नैपालमें नहीं जाने पाता। इसलिए भगवानपुरके सिपाही भी वहां की जनता और यात्रियोंकी रक्षा न करके भारतका माल नैपालमें और नैपालका माल भारतमें चोरीसे जाने देने ही में लगे रहते हैं। इसलिए इस प्रांतमें डाकुओंकी संख्या बहुत ही अधिक होगई है। चैत्र और बैशाखमें तो इन पर भूत ही सवार हो जाते हैं। जब ये विदेशियोंके गिरोह देखते हैं तो रात्रिमें इन्हें लूटनेकी तैयारी करने लगते हैं। इनके कीमती सामानोंको देखकर मुंहमें पानी भर लाते हैं। कुछ दिनोंके पहले तो वहां कोई जाता ही नहीं था, परन्तु अब धीरे-धीरे लोग जाने भी लगे हैं। यदि दो एक आदमी रहे और उनके पास रुपए भी रहे तो लुटेरे उनका गला काट कर ही दम लेते थे और प्रातःकाल उनका सिर धड़से अलग ही मिलता था। वहांके लोगोंका विश्वास हो गया है कि यदि कोई आदमी उस स्थान पर रातमें रह जाए तो सुबह मरा ही मिलता है। इसलिए वहां कोई भी रातमें नहीं रहने पाता और विदेशियोंको भी रातमें नहीं रहने दिया जाता। यदि वे अधिक संख्यामें हुए तो दूर हट कर दक्षिणकी ओर बने हुए धर्मशालामें चले जाते हैं और यदि कम हुए तो पड़िरिया या खुना गई गांव चले जाते हैं। "रातमें प्रत्येक व्यक्ति वहां मर जाता है" इसका रहस्य कुछ समझमें नहीं आता। यह विश्वास सिर्फ साधारण जनता में नहीं है प्रत्युत वहांके बड़े बड़े पण्डितोंमें भी है। इसका कारण जो भी लोग मानें परन्तु इसमें लेखकका कुछ भी विश्वास नहीं है, लेखक भी वहींका निवासी है और उसे रातमें वहाँ रहने का अनेक बार सौभाग्य भी प्राप्त हो चुका है, परन्तु उसे न तो कभी डर ही हुआ और न कोई दैवी प्रकोप ही हुआ जो देवी अखिल सृष्टिके कल्याणके लिए है वही कैसे किसी का अहित कर सकती है? यह कृत्य तो उन नर पिशाचों का ही हो सकता है जो देवीके सिर पर अपने पापोंको मढ़ते रहते हैं। ईश्वरकी अनुकम्पासे अब इस प्रकारकी दुर्घटना सुननेमें नहीं आती।

सुधार —

लुम्बिनी उपवन तक पहुँचनेके लिए केवल दो ही मार्ग हैं। एक तो नौगढ़ स्टेशनसे और दूसरा नौतनवा स्टेशनसे। ये दोनों स्टेशन अवध तिरहुत रेलवेकी लूप लाइन पर हैं। परन्तु नौतनवां भारत और नैपालकी सीमा पर बसा होनेके कारण बहुत ही महत्वशाली स्टेशन माना जाता है। यहांसे लुम्बिनी उपवन भी नौगढ़की अपेक्षा बहुत ही कम दूर है। नौगढ़से लुम्बिनी उपवन चौदह मील है परन्तु नौतनवांसे ६ मील ही है। निम्न सुझावों पर अमल किया जाना चाहिए।

(क)— नौगढ़से ककरहवा बाजार होती हुई लुम्बिनी तक एक बहुत ही अच्छी सड़क जाती है परन्तु नौतनवांसे कोई भी अच्छी सड़क नहीं जाती। बरसातके दिनोंमें तो ६ मीलका रास्ता तीन दिनमें भी कोई पार नहीं कर सकता अतएव नौतनवांसे लुम्बिनी तक एक सड़क बन जानी चाहिए और यह काम तो स्टेटकी ओरसे ही हो सकता है।

(ख)— लुम्बिनी उपवनकी कोई अपनी सुनिर्धारित सुनिश्चित सीमा नहीं है। यही कारण है कि किसान लोग प्रतिवर्ष कुछ जमीन दबाते रहते हैं। उसकी चारों ओर सीमा बन जानेसे कोई भी किसी प्रकारकी अनधिकार चेष्टा नहीं कर सकता और देखनेमें भी सुन्दर लगता। क्या ही अच्छा हो यदि उसके चारों ओर तार भी लगा दिया जाय?

(ग)— थान (मन्दिर) और धर्मशालाके पासकी जमीन

की विशेष सफाई हो जानी चाहिए जिससे नंगे पैर परिक्रमा करने वाले बौद्धमतानुयायियों और दर्शनार्थियोंको नाक चने न चबाने पड़ें और अन्य स्थानोंकी भांति उसकी भी परिक्रमा सुगमतापूर्वक की जा सके। इस प्रकार उपवनकी उपवनता अक्षुण्ण बनी रहेगी।

(घ)—धर्मशालाके पास ही कुछ सिपाही तो सदैव ही रहने चाहिए जिससे यात्रियोंके जानमालकी रक्षा होती रहे।

(ङ)—यात्रियों और बौद्धोंके रहने और खानेका प्रबन्ध धर्मशाला ही में होना चाहिए। धर्मशालासे खुनगाई न तो कोई जा ही पाता है और न वहांसे कोई सुप्रबन्ध ही, हो पाता है।

(च)—वहां एक अस्पतालका होना नितान्त अपेक्षित है। अस्पताल बन जानेसे उस प्रान्तकी जनताका भी लाभ होगा और यात्रियोंकी भी चिकित्सा होती रहेगी।

(छ)—वहां एक पुजारी तो ऐसा होना चाहिए जो सदैव मन्दिर ही पर रहे और वही (गाइड) पथ-प्रदर्शकका भी काम करे। पुजारीको संस्कृत और अङ्गरेजीका भी थोड़ा बहुत परिज्ञान होना चाहिए।

(ज)—यात्रियोंके पानी पीने और नहानेके लिए एक सुन्दर तालाब और दो कुंए मन्दिरके पास ही बन जाने चाहिए, पुराना तालाब तो तोड़ ही दिया जाना चाहिए। घाटको चारों ओर पक्का बनवानेकी कोई आवश्यकता नहीं है, पानी बँध जानेसे प्रायः सड़ जाता है।

(झ)—लुम्बिनी उपवनको नन्दन-कानन बना देना चाहिए अभी तो वह उपवन न होकर उजाड़ ही बना हुआ है।

—

सृष्टि एवं प्रलय

[श्री सुदर्शनसिंह जी]

सभी धर्म अपना एक इतिहास रखते हैं और यह इतिहास सृष्टिका एक विवरण देता है। इस सृष्टिमें मनुष्यका क्या स्थान है? उसका उद्देश्य क्या है? यह जाने बिना धर्मका प्रयोजन ज्ञात नहीं हो सकता। अत एव सभी धर्मोंने तथा वैज्ञानिकोंने भी सृष्टिके सम्बन्धमें अपनी धारणायें स्पष्ट की हैं और उनके लिए प्रमाण दिये हैं। यह कहना न होगा कि धर्मके सिद्धान्तोंसे सृष्टिका कितना सम्बन्ध है। अत एव सृष्टिके सम्बन्धकी जिज्ञासा केवल कुतूहल नहीं है।

सृष्टि कब बनी, इसके सम्बन्धमें विभिन्न धर्मोंके उत्तर भिन्न भिन्न हैं। वैज्ञानिक अन्वेषण भी भिन्न भिन्न उत्तर देते हैं। ईसाई धर्मके अनुसार सृष्टिको उत्पन्न हुए लगभग सात हजार वर्ष हुए हैं। पदार्थ विज्ञानके विशेषज्ञ गर्मी प्रकाश आदिके तारतम्यकी गणना करके सृष्टिको चालीस लाख वर्ष पुरानी कहते हैं। वैसे इधर पचास लाख वर्ष पुराना एक जूतेका तला मिला है। भूगर्भ विद्याके पण्डित पृथ्वीके स्तरोंमे उसकी आयुका निर्णय करते हैं। पृथ्वीके एक स्तरको बननेमें कितने वर्ष लगे, यह वे गणित से निकालते हैं। वे मानते हैं कि यह आवश्यक नहीं कि सब कहीं पृथ्वीमें समान स्तर हों, यह भी मानते हैं कि दबावसे नीचेके स्तर टूटकर एक हो जाते हैं. अतः यह गणना पूर्णतः ठीक नहीं हो सकती। फिर भी वे एक अनुमान करते हैं कि पृथ्वीको बने दस करोड़ वर्ष हुए। समुद्रका जल इतने दिनोंमे ही खारा हुआ होगा, ऐसा प्रोफेसर जॉलीने सिद्ध किया है। रेडियमके द्वारा पृथ्वीकी आयुका अनुमान सात अरब पचास करोड़ वर्ष किया गया है। रेडियमकी किरणोंसे जो तत्व जिस क्रमसे बनते हैं, उनके आधार पर यह अनुमान किया गया है।

रेडियमकी जिस शक्ति पर गणना की गई है, वह अभी भ्रांतिहीन नहीं है। प्रत्येक पदार्थ सदा एक क्रमसे काम नहीं करता। तालाबका जल पहिले जिस गतिसे सूखता है, कम हो जाने पर भी उसी गतिसे नहीं सूखता। इसी प्रकार अग्निके शीतल होनेकी गतिमें भी अन्तर पड़ता है। रेडियमकी शक्ति भी एक ही गतिसे प्रारम्भसे काम करती है, यह नहीं कहा जा सकता। भारतीय ऋषियोंके लिए ऐसे अनुमान आवश्यक नहीं थे। जो संस्कृति सृष्टिके प्रारम्भसे चली आ रही है, उसके पास सृष्टिका जन्मपत्र होना स्वाभाविक है। प्रत्येक पंचाङ्ग पर सृष्टि सम्वत् होता है और वह प्रतिवर्ष एक एक सख्या क्रमसे बढ़ता ही आया है। इस समय सृष्टि सम्वत् १,९५,५८,८५,०५० है। इतने ही वर्ष सृष्टिको बने हुए हैं। ऋषियोंने सृष्टिकी पूरी आयु प्रथम ही जान ली थी। उन्होंने बताया है कि सृष्टि की कुल आयु २,१६,००,००,००० वर्ष है। अत एव हम असन्दिग्धरूपसे कह सकते हैं कि यह सृष्टि कुल २०,४१,१४,९५० वर्ष और रहेगी।

सृष्टिकी आयुके पश्चात् प्रश्न होता है कि सृष्टिका स्वरूप क्या है? हम आप बड़ी अच्छी तरह जानते हैं कि संसारमें चौरासी लक्ष योनियां हैं। इन योनियोंका विवरण शास्त्रोंके अनुसार निम्न है—

वनस्पति जातियां—	२० लक्ष
कृमि—	११ लक्ष
पक्षी (अंडज)—	१० लक्ष
जलचर—	९ लक्ष
चौपाये—	३० लक्ष
मनुष्य जातियां —	४ लक्ष
कुल —	८४ लक्ष

स्पेन्सरने लिखा है कि तीन लाख बीस हजार वनस्पति जातियां और बीस लाख प्राणी ज्ञात हुए हैं। उसके पश्चात् भी कई लाख प्राणियोंका पता लगा है। बहुतसे वनस्पति तथा जीव लुप्त हो गये होंगे और बहुतसे अभी

अज्ञात होंगे। इस प्रकार यह संख्या हमारे शास्त्रीय प्रमाण के निकट ही आ रही है।

सृष्टिकी आयु लिखते समय हमारा तात्पर्य केवल पृथ्वीकी वर्तमान सृष्टिकी आयुसे होता है, ऐसा समझ रखना चाहिये। पृथ्वीके विस्तारके सम्बन्धमें शास्त्रोंने बताया है कि पृथ्वीका विस्तार एक अरब मील है। इसमें ३४ कोटि मीलमें जल, २६ कोटि मीलमें पर्वत तथा ३२ करोड़ मीलमें मनुष्य बसते हैं। पृथ्वीसे सूर्यकी दूरी ७२ करोड़ मील है, और पृथ्वीका मणिभेद मण्डल २८ करोड़ मील है। ये विवरण इतने स्पष्ट हैं कि इन पर वर्तमान वैज्ञानिकोंके अन्वेषणोंका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उनके द्वारा इनका समर्थन ही होता है।

पृथ्वीके स्वरूपके सम्बन्धमें अनेक मतभेद हैं। पृथ्वी नारङ्गीके समान गोल ही है। इस सम्बन्धमें पाश्चात्य वैज्ञानिक एक मत नहीं हैं। पृथ्वी यदि अन्य नक्षत्रोंके समान ग्रह है तो उसे भी दूसरे नक्षत्रोंके समान होना चाहिये। वैज्ञानिक जानते हैं कि चन्द्रमा आदि प्रत्येक ग्रह का सदा एकही मुख पृथ्वीकी ओर रहता है। यदि वे गेंदके समान गोल होते और अपनी धुरी पर घूमते तो कभी न कभी उनका दूसरा मुख भी पृथ्वीकी ओर आता। अत एव चन्द्रमा आदि तश्तरीके समान माने जाते हैं। तब पृथ्वी भी तश्तरीके समान क्यों नहीं है? भूमध्य रेखासे उत्तर उत्तर ४० अक्षांश पर उषःकाल ६० मिनिटका होता है। भूमध्य रेखा पर १५ मिनिट और ४० अक्षांश दक्षिण पर केवल ५ मिनिट। यदि पृथ्वी गोल है तो उत्तर एवं दक्षिणका उषःकाल समान होना चाहिये। कर्क रेखा पर देशान्तर रेखाका एक अंश ४० मीलके लगभग है और वही एक अंश मकर रेखा पर ७५ मीलके लगभग है। इसका अर्थ हुआ कि पृथ्वीका मध्य भूमध्यरेखा नहीं है। क्योंकि भूमध्य रेखासे दक्षिण देशान्तर रेखायें बराबर चौड़ी होती जाती हैं। यदि आजके ग्लोबके अनुसार कोई यात्रा करना चाहे तो उसे अमेरिकामें दूरीके सम्बन्धमें बड़ा धोखा होगा। एक चन्द्र ग्रहण ३० अगस्त सन् १६०५को लगा था। यह उत्तरी अफ्रीका (मिश्र) ग्रीनलैण्ड, आइसलैण्ड, साइबेरिया और कनाडाके उत्तरी भागसे दिखाई पड़ता था। पृथ्वीका गोला हाथमें लेकर देखिये, समझमें आ जायगा कि पृथ्वी गोल होती तो यह ग्रहण एक साथ अमेरिका और एशियामें भी न दिखाई पड़ता। उत्तरी ध्रुवके यात्री बतलाते हैं कि उत्तरी ध्रुवमें ५०सेर भार कठिनतासे उठाया जा सकता है और बन्दूकका शब्द २० फीट तक कठिनतासे सुना जा सकता है, किन्तु दक्षिण ध्रुव में वायुके घनत्वमें इतना अन्तर है कि वहां २०० सेर भार सरलतासे उठाया जा सकता है और पिस्तौलका शब्द तोप के समान गूंजता है। पृथ्वी गोल होती तो ३० दक्षिणी अक्षांश तक ध्रुवतारा न दिखाई पड़ता। दक्षिणी अक्षांश ७० पर शेटलैण्ड टापूपर सबसे बड़ा दिन १६ घण्टे ५३ मिनिटका होता है और उत्तरी अक्षांश ७० पर नार्वेमें हेमरफास्ट स्थान पर सबसे बड़ा दिन पूरे तीन महीनेका होता है। पृथ्वी गोल हो तो ये अन्तर कैसे पड़े? सबसे बड़ी बात यहकि बहुत ऊपरसे हवाई जहाजसे देखने पर गोल पृथ्वी उन्नतोदर दीखनी चाहिये; किन्तु वह नतोदर दीखती है। ये पृथ्वीकी गोलाईके विरुद्ध बड़े-बड़े प्रमाण हैं जो सर्व साधारण भी समझ सकते हैं। इनके अतिरिक्त पर्वतोंकी ऊंचाई, हवाई यात्राके हिसाब, नहरोंकी गोलाई दोनों ध्रुव देशोंके हिमपातके अन्तर आदि बहुतसे सूक्ष्म गणित है। वे भी पृथ्वीकी गोलाईके विपरीत हैं।

कहा जाता है कि हम जहांसे जहाज पर चलते हैं घूम कर वहीं आ जाते हैं। यह बात यह तो सिद्ध करती हैकि पृथ्वी तश्तरीके समान एक गोलाई रखती है, परन्तु जब तक उत्तर और दक्षिण ध्रुवको पार करके सीधी यात्रा न हो सके, दूसरी ओरसे भी पृथ्वी गोल है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। कुयेंके भीतर मेढ़क भी बिना मुड़े पूरा चक्कर कर लेता है, पर कुआं गेंद सा गोल नहीं है। समुद्रमें आता जहाज क्रमशः दिखलाई पड़ता है, यह ठीक है, परन्तु समुद्र में पानी होनेसे दृष्टि किरणें प्रभावित होती हैं। समतल रेगिस्तानमें आता ऊंट सवार धुंधला भले ही दीखे, पर यह नहीं होता कि पहिले उसका सिर दीखे और पीछे आंख। वह तो पूरा ऊंट सहित ही दीखता है। कैप्टन जे. रोस दक्षिणी ध्रुवमें एगार कटिका तक गये। उन्होंने लिखा है कि उन्होंने एक हिम पर्वतकी दीवार सी देखी

इसका ऊपरी भाग चौरस था और उसमें दरारें नहीं थीं। गड्ढे भी नहीं थे। यहांसे पृथ्वीके चारों ओर घूमनेमें चालीस हजार मीलकी यात्रा हुई। इतने पर भी उस बर्फीली दीवार का अन्त नहीं मिला। यदि पृथ्वी गोल है तो वर्तमान खोजके अनुसार इस अक्षांश पर पृथ्वीकी परिधि केवल दस हजार आठ सौ मील होनी चाहिये थी।

इस वर्णनका यही अर्थ है कि पृथ्वीके स्वरूपके सम्बन्ध में वैज्ञानिक धारणायें अभी सत्यसे बहुत दूर हैं। पृथ्वी घूमती है, इस सम्बन्धमें भी हवाई यात्राके अनुभवोंने नवीन शङ्कायें उपस्थित कर दी हैं। पृथ्वी गोल हो और वैज्ञानिकोंकी बताई गतिसे घूमती हो तो न्यूयार्कसे शिकागो तककी एक हजार मीलकी यात्रा साधारण हवाईजहाज से एक घण्टे में मजेसे होनी चाहिये; परन्तु यह नितांत असम्भव है। अभी उत्तरी या दक्षिणी ध्रुवमें से कोई भी पार नहीं किया जा सका। वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं कि पृथ्वीका केन्द्र कहीं उत्तरी ध्रुवमें है और आगे पृथ्वीका फैलाव बढ़ता गया है; क्योंकि देशान्तर रेखायें यही प्रकट करती हैं। दक्षिणी गोलार्धमें देशान्तर रेखायें दक्षिणी ध्रुवकी ओर संकुचित करने पर स्थानोंकी प्रत्यक्ष दूरीसे उनमें भेद पड़ता है—बहुत अन्तर हो जाता है। चन्द्रमादि ग्रह सम्भवतः गेंदके समान नहीं घूमते, यह भी वैज्ञानिक कहने लगे हैं, क्योंकि चन्द्रमाका एक ही पृष्ठ सदा दिखलाई पड़ता है। ऐसी दशामें पुराणादि शास्त्रों में पृथ्वी तथा सृष्टिके स्वरूप, विस्तार, क्रियाके जो वर्णन हैं, उन्हें भ्रान्त नहीं कहा जा सकता। अभी तो विज्ञानके स्थिर किये सिद्धांत ही आये-दिन भ्रान्त सिद्ध हो रहे हैं।

हमारे शास्त्रोंने विश्वका (सौर जगतका) विस्तार १८ पद्म योजन बतलाया है। जर्मन वैज्ञानिक आइन्स्टीन ने विश्व गोलक (ब्रह्माण्ड) की त्रिज्याका अनुमान किया है, जिसमें प्रकाश चक्कर लगाकर लौट आता है। खगोलके व्यासके अतिरिक्त दूसरे ब्रह्माण्डके मध्यका अन्तदेश भी आइन्स्टीनके अनुमानमें आ गया है। उसने विश्व विस्तार १०४१ मीलके लगभग माना है। जीयन ने आकाशका विस्तार १०२८ मील माना है। इन अनुमानोंमें भी दोष हैं। सभी प्रकाश एक गतिसे चलते हैं, यह मान लिया गया है और कास्मिक किरणोंकी विशेष शक्तिका ध्यान नहीं रखा गया है।। इतने परभी ये अनुमान भारतीय मान्यताका प्रकारान्तरसे समर्थन ही करते हैं।

पाश्चात्य वैज्ञानिक अपने धर्मके प्रभावसे अछूते नहीं रह पाते। प्रत्यक्ष प्रबल प्रमाण होने पर भी यथासम्भव वे उसे अपने अनुकूल खींचना चाहते हैं। वे सदा प्रयत्न करते हैं कि इतिहासके कालको जहां तक सम्भव हो, अर्वाचीन बताया जाय। विवश होने पर प्राप्त प्रमाणका दूसरा अर्थ न कर सकने पर ही वह कालको पीछे हटाना पसन्द करते हैं। इसी प्रकार उनकी प्रत्यक्ष पर निर्भर खोजें भी भ्रमपूर्ण हैं। उन्होंने जहां प्रत्यक्ष कुछ देखकर कहा है, वहां उनके अनुमान भारतीय शास्त्रके पोषणकी ओर बढ़े हैं, परन्तु जहां उन्होंने कुछ अनुमान करना चाहा है, वहीं उनके प्रत्यक्षका आधार भ्रामक सिद्ध हुआ है। वे सत्यसे दूर हो गये हैं।

पृथ्वीकी आकृति, पृथ्वीकी गति सम्बन्धी पाश्चात्य सिद्धान्त ही जब भ्रमपूर्ण हैं तो सृष्टि एवं प्रलय जैसे सिद्धान्तकी तो क्या दशा होगी, क्योंकि ये तो सम्पूर्ण अप्रत्यक्ष कार्य हैं। न तो मनुष्य सृष्टि देख सकता है और न प्रलय। उस समयके चिह्न मिल सकेंगे यह भी दुराशा ही है। सृष्टिके विवरणके सम्बन्धमें वैज्ञानिक अधूरी खोजें शास्त्रोंकी सत्यताकी स्वीकृतिकी ओर बढ़ रही हैं, यह हम देख चुके हैं, अत एव सृष्टि प्रलयके सम्बन्धमें शास्त्रीय विवेचनके अतिरिक्त दूसरा कोई भ्रमहीन ज्ञान प्राप्त करनेका मार्ग अभी तक न तो है और न आगे होनेकी कोई आशा है।

★

वज्राभ्रककी भस्म विधि

स्व० श्री स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज की बतलाई हुई

[लेखक—श्री विद्याधर विद्यालंकार भिषगाचार्य]

काले वज्राभ्रकको शुद्ध करके पहले धान्याभ्रक बना लो। अब उसमें बथुएका ताजा रस डालो। कुछ दिन घोटकर टिकियां बना सम्पुट कर गजपुट में फूंक दो। फिर दूसरी बार बथुएके रसमें घोटकर इसी प्रकार पुट दो। फिर तीसरी बार बथुएके रसमें घोट कर पुट दो। इस बार निश्चन्द्र लालरंगकी सी भस्म होगी॥ आर्यसमाजके प्रवर्त्तक श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी इसे अनेक रोगों पर प्रयोग करते थे, तथा स्वयं भी सेवन किया करते थे।

नोट—मैंने (लेखकने) स्वयं धान्याभ्रकको बथुए के रसमें तीन दिन घोटकर टिकिया बना साधारण पुट दिया, तो प्रथमवारमें ही प्रायः निश्चन्द्र और लाल रंगकी भस्म हो गई थी। तीन बार देनेसे तो सर्वथा निश्चन्द्र हो गया था। मैं इसे जीर्णज्वर, यक्ष्मा, कास आदि पर प्रयोग करता हूं, अवश्य फल देता है। मलेरिया अर्थात् सरदी लगकर आने वाले ज्वर पर मैंने १ रत्ति प्रातः १ रत्ति सायंकाल देकर देखा है, प्रायः पहले दिन ही ज्वर नहीं चढ़ता। पर लगातार सेवन कराना चाहिये।

श्रीस्वामीदयानन्दजीके पास एक अमृतसरके पण्डित लेखकका काम करते थे। लोगोंके बहकानेसे जब स्वामीजीको उन्होंने छोड़ा तो स्वामीजीने उसके जाते समय बहुत प्रसन्न होकर उसे दो सौ रुपये दिये और पूछा कि "कुछ और चाहते हो तो कहो, हम तुम्हारे कार्यसे बहुत प्रसन्न रहे हैं।" तब उस पंडितने कुछ योगकी विधियां और अभ्रक मारनेकी रीति पूछी। श्रीस्वामीजीने तब अपने हाथसे एक पत्र पर वे सब क्रियाएं तथा अभ्रक भस्मकी रीति लिखकर नीचे अपने हस्ताक्षर करके वह पत्र पण्डित को दे दिया। उसी पंडितके भतीजेने जो अमृतसरमें रहते हैं, प्रसंगवश मुझे यह भेद पटियाले स्वर्गवासी वैद्य ध्वजाराम जी आर्यके सामने बतलाया और पत्र दिखानेका भी वचन दिया। वे फिर उसी गरमियोंमें सोलनमें भी मुझे मिले और फिर कहा कि हां, हमने आपको पत्र दिखानेका वचन दे रखा है। अमृतसरमें हमारे घर में लोहेकी अलमारीमें वह पत्र सुरक्षित रखा है। शोक है कि वे अब मुझे वर्षोंसे नहीं मिले न मुझे उनका नाम याद रहा। वे अंगूठी कानों के भूषण आदि लेकर सोलनमें बेचने आया करते थे।

मैंने इसको स्वयं अनुभवमें लेकर "सन्यासीकी सम्पत्ति सबकी होती है" इस विचारसे सबके सामने रखनेकी इच्छा की है।

प्रसवकाल ज्ञान

[लेखक—राजवैद्य श्री पं० अमरदत्तजी मिश्र]

सगर्भा स्त्रीको प्रसव कब होगा इसको जाननेकी महत्त्वपूर्ण आकांक्षा होती है। प्रसवकाल जाननेके लिये ऋतुकालका समय (ऋतुबेला) स्मरण होना अत्यन्त आवश्यक है। जिसके आधार पर ही सारी गणना की जाती है। ज्योतिष शास्त्रमें इस विषयको भली प्रकार समझाया है। निम्न कोष्ठक द्वारा भली प्रकार प्रसव काल जाना जा सकता है। 'श्रीस्वाध्याय' के पाठक आवश्यकता पड़ने पर इसके द्वारा प्रसवकाल जानकर सावधान रहें।

प्रसवकाल दर्शक कोष्ठक

ऋतु बेला	योगसंख्या	प्रसवकाल
जनवरी	७	अक्टोबर
फरवरी	७	नवम्बर
मार्च	५	दिसम्बर
अप्रेल	५	जनवरी
मई	४	फरवरी
जून	७	मार्च
जुलाई	६	अप्रेल

बुढ़ापा कैसे रुक सकता है ?

[ले०—श्री पं० अज्ञातमित्र]

कहावत है कि बुढ़ापा जिस समय आने लगता है तो दांत आंख या बाल तीनमें से एकको वाहन बना कर आता है। अर्थात् या तो दांत गिरते हैं, या आँखमें कोई विकार होता है या बाल सफेद हो जाते हैं। किसी किसी अभागे पुरुषको तो तीनों पर विकार आता है। बुढ़ापेके इन तीन उपकरणोंको दूर करनेके लिए निम्न उपाय अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होंगे।

आँख के लिए—

१—आंखोंको सदा साफ रखें।

२—प्रातःकाल बिस्तरसे उठते ही मुंहमें जितना भरा जा सके पानी भर कर २० चुल्लू ताजा पानी या रात्रिमें तांबेके पात्रमें रक्खा हुआ बासी जल आंखों पर छींटे।

३—रातको ताम्र पात्रमें त्रिफला अधकुटा आध छटांक १ सेर पानीमें चन्द्रज्योत्सना (चांदनी) में भिगा रखें, प्रातः मसल कर छान कर वह पानी आंखों पर छींटें व थोड़ा पी लें।

४—प्रत्येक बार पानी पीते समय पहले कुल्ला करे व आंख धोवे।

५—स्नान समय पानी गरम हो तो पहले पांव पर डाले, ठण्डा हो तो पहले सिर पर।

६—पांवकी उंगलियोंके बीचके भागको रगड़ कर साफ कर लिया करें।

७—स्नानके पहले पांवके अंगूठे अंगुलियोंके नाखूनमें तेल भर दें।

८—अत्यन्त तेज, अत्यन्त अन्धेरेमें देखनेका यत्न न करें।

९—आंखोंका व्यायाम ५-१० बार दांए बांए ऊपर नीचे कोणोंमें देखनेका अभ्यास करें।

१०—भोजनके बाद गीला हाथ आंख पर फिरावें व पानी छींटें।

११—जङ्गलमें की हरियाली जी भर देखें। उंगलियों की आड़से बिल्कुल प्रातःकालके सूर्यकी कोमल किरणोंको देखनेका अभ्यास करें।

१२—बहुत बारीक अक्षर न पढ़ें, झरोखोंसे न देखें, नग्न स्त्री न देखें।

१३—शीर्षासन पाव आध घण्टे विधि पूर्वक करें। [शीर्षासन सहसा पहलो बार ही १५-२० मिनट न करें। दो तीन मिनटसे क्रमशः बढ़ावें। यदि किसी योग्य गुरुके सामने इसका अभ्यास किया जावे तो अच्छा है। शीर्षासन करने वालेको घृत दुग्धादि स्निग्ध पदार्थका पर्याप्त सेवन परमावश्यक है। अन्यथा खुश्की बढ़कर हानि होगी।—सं०]

अगस्त	७	मई
सितम्बर	७	जून
अक्टोबर	७	जुलाई
नवम्बर	७	अगस्त
दिसम्बर	६	सितम्बर

उदाहरण

जिस स्त्रीको ता० ६ मार्चको ऋतुकाल हुआ है उसको यदि गर्भ रह गया तो प्रसव कब होगा? सर्व प्रथम कोष्ठक में से मार्चकी योग संख्या लेवें, पुनः मार्चकी ६ तारीख ऋतुकालकी है उसे लेकर दोनोंका योग करें और योग संख्याके सामने कोष्ठक में प्रसवकाल मास दिया है उसे मास जानें। यहां ६ मार्चकी योग संख्या ५ दोनोंका योग १४, मार्चको योग संख्याके सामने दिसम्बर है तो १४ दिसम्बर प्रसवकाल हुआ।

दांत—

दांतोंको सदा साफ रखें। कुछ भी खावें तो अच्छा कुल्ला कर दांतोंमें कुछ न रहने दें। सोते समय दांत और पांव धोकर सोना, शौच व पेशाबके समय दांतोंकी पंक्ति को भिड़ा कर रखें। सुगन्धित मञ्जनों या टूथ पाऊडर पर विश्वास न कर दतौन (नीम या बबूल) से दांत साफ करना चाहिए, पर इतना नहीं कि 'दांतोंमें सन्धियाँ पड़ जांय व मसूड़े छिल जांय। कड़ी चीजका नियमित प्रयोग (शुष्क-

९० प्रतिशत अनुभूत

चाँदी सोनेका तेजी-मन्दी दर्पण

[ले०—राजवैद्य श्री पं० अमरदत्तजी मिश्र एल. एम. ए. एण्ड एम. डी. एच. कोमर शीयल एस्ट्रालोजर]

[विद्वान् लेखक आयुर्वेदके मर्मज्ञ सिद्धहस्त वैद्यराज तो हैं ही, साथ ही नवीन सिद्धान्तानुसार महर्घसमर्घ (तेजी मन्दी) विज्ञान में भी आपने पर्याप्त परिश्रम और अन्वेषण किया है। ज्योतिषी लोग जो रहस्य अपने प्रियजनोंको भी नहीं बतलाते थे वही अनुभूतयोग आपने 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंको भेंट करनेका शुभ सङ्कल्प कर इस विज्ञानको समुन्नत करनेका स्तुत्य प्रयत्न किया है। 'श्रीस्वाध्याय' के आगामी अङ्कोंमें इसी प्रकारके अनेक अनुभूत योग और वस्तुकी तेजी मन्दीके अवसरों (चांसों) का परीक्षित समय प्रकाशित किया जायेगा, जो पाठकोंके लिए विशेष लाभ दायक सिद्ध होगा। —सम्पादक]

ज्योतिषशास्त्रमें ग्रहोंकी अन्योन्य दृष्टियां हैं, तथा केवल चन्द्रमाके साथ भी हैं। उन सबका प्रभाव भिन्न-भिन्न होता है और इस प्रभावको ९० प्रतिशत सही पाया है। जबकि ग्रह मार्गी हो और दृष्टियोंके समय ग्रह वक्री हो तो प्रभाव अति ही न्यून होता है। अन्योन्य दृष्टियां तथा लूनर एस्पेक्टस (चन्द्रमाके साथ होने वाली दृष्टियां) प्रति मास होती रहती हैं और उनका प्रभाव अवश्य ही राश्यनुसार वस्तु पर होता है, किन्तु वह प्रभाव दो तीन अंशसे पूर्व ही होना प्रारम्भ होता है और जब एक राशि अंशोंमें आते हैं तब तक होता है और पुनः १।२ अंशोंकी पृथकता तक पूर्व प्रभावसे विपरीत प्रभाव होता है। यदि तेजी हुई है तो मंदी और मंदी हुई है तो तेजी इस प्रकार समझें।

(१) जैसे चतुर्थ दृष्टि (Square) परस्पर अन्योन्य ग्रहोंकी होवे तब चांदी सोनामें तेजी आती है, जब वे चतुर्थ दृष्टि पातमें २।३ अंशोंका ही अन्तर रखते हों, जैसा कि ऊपर समझाया है तेजीका प्रभाव दृष्टि पातिक २।३ अंशोंसे प्रारम्भ होकर पूर्ण राश्यंशों तक जाने पर उत्तम तेजीका हो जाता है। किन्तु पुनः इसका प्रभाव विपरीत होने लगता है, जबकि वे चतुर्थ दृष्टिसे पृथक् होते हैं।

(२) एवं अर्धचतुर्थ दृष्टिका प्रभाव Semi Square होता हैं, किन्तु उसका प्रभाव दृष्टि पातांशोंमें नहीं अपितु जिस समय उसका योग होता है तब ही चांदी सोनेमें तेजी आती है, अर्थात् उस दिन ही।

(३) त्रिकोण दृष्टि (Trine) [यदा कदा मिथः ग्रहाणां तदा रौप्यसुवर्णेषु अमहर्घता भवति] अर्थात् —

वारको बालाजी का प्रसाद) चनेका व्यवहार (छिलके लगे व अधभुने) भी लाभ पहुँचाता है। पान तमाखू बीड़ी, गरम गरम पदार्थ खाना, गरम गरम पकौड़ी कढ़ी खाना, गरम खा कर एक दम ठण्डा जल पीना, चाय पीना, पान खाकर सो जाना, मल मूत्र त्यागके समय मुंह खुला रखना व दांत छुट्टे रखना वर्ज्य है।

बाल—

बाल काले रखनेके लिए स्वास्थ्यकी ओर ध्यान देना चाहिए। यों भांति-भांतिके सुगन्धित तेलोंका उपयोग, गरम जलका बालों पर डालना, और रक्त व वीर्यका विकार उसके मुख्य कारण हैं। बाल शीर्षासनके अभ्याससे भी बहुत दिनों तक काले बने रहते हैं। नियमित व विधि पूर्वक शीर्षासनका अभ्यास करनेसे सफेद हुए बाल काले होते देखे गये हैं। शीर्षासनके अतिरिक्त केवल खोपरे या तिल्लीका खालिस तेल लगाने और काली मिट्टीसे धोनेकी आदत रखना लाभदायक है। खिजाबसे काले रखनेकी आदत बुरी है, अपराध है।

त्रिकोण दृष्टि चांदी सोनेमें मन्दी करती है जबकि दो ग्रह परस्पर दृष्टि संपातांशोंमें आकर २।३ अंशोंका ही अन्तर रखते हों तब चांदी सोनेमें मंदी आती है। जब ग्रह पूर्ण राश्यंशोंमें आवें तब तक यह प्रभाव होता है, पुनः ज्यों-ज्यों ग्रह मिथःदूर हटते जाते हैं तबसे ही २।३ अंशों तक विपरीत फल होता है।

पूर्ण राश्यंश युति और सप्तम (Conjuction and Opposition) इनका प्रभाव प्रत्येक ग्रहका चतुर्थ दृष्टिके अनुसार ही होता है, किन्तु शुक्र और गुरुमें विपरीत फल समझें।

समान क्रांतिका फल (Parallel effect) चन्द्रमा और अन्य सूर्यादि ग्रहोंमें चांदी सोनेमें मन्दी कारक ही होता है, किन्तु चन्द्रमाके अतिरिक्त अन्य ग्रहोंकी क्रांतिमें भी मन्दी होती है, किन्तु वह मन्दी मर्यादित एवं सीमित Limited मंदी आती है।

उदाहरणार्थ—यथा ता० १४ जून स. १६४६ को चन्द्र मङ्गलकी त्रिकोण Trine aspect समय ८२१ पर होगी, और इसी प्रकार इस दिन बुध चन्द्रकी Trine aspect समय १६।२० पर होगी। एवं इसी दिन सूर्य चंद्रकी क्रांति समय १६।३० पर (Parallel) अब यह तीनों मंदी करने वाली हैं। अतः ता० १४ जून १६४६ को चांदीमें मंदी अवश्य ही आयगी, एवं सोनेमें भी। इस प्रकार सब योगायोगों का विचार करें।

स्पेशल चांस—

ता० २७ जुलाईको हर्शल और मङ्गलकी युति कर्कमें होगी १०।१२ दिन उक्त तारीखसे पूर्व प्रभाव चालू होकर उक्त तारीख तक या पुनः चांदी सोनामें विशेष तेजी आवेगी, वैसे तो प्रभाव सबमें ही होगा परचा कर लेवें।

(अ) मङ्गल अपने स्थानसे चौथे आठवें और सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टिसे देखता है और जब भी ऐसा होता है उस दिन चांदी सोनेमें अवश्य ही तेजी आती है। वैसे मङ्गल उग्र ग्रह है इसी कारण अच्छी तेजी लाता है, किन्तु वह अधिक टिकाऊ नहीं होती ऐसा कई आचार्योंका मत है। किन्तु मेरा तो अनुभव यह है कि यह अच्छी तेजी लाता है, परन्तु तेजी तब ही आती है जबकि दृष्टि राश्यंशोंमें पूर्णतया होवे और तेजीका प्रभाव दृष्टि संपादन पूर्णांशोंसे २ अंश पूर्व ही होना प्रारम्भ होकर पूर्णांशों तक होती है। किन्तु मङ्गल जब गुरुको ही चौथी आठवीं दृष्टिसे देखता है तब ही चांदी सोनेमें तेजी आती है अन्यथा नहीं। चन्द्रमा पर भी मङ्गलकी दृष्टिका प्रभाव होने पर तेजी आती है।

(इ) गुरु अपने स्थानसे पांचवें नौवें और सातवें स्थानको पूर्ण दृष्टिसे देखता है, जब गुरु मङ्गलको अपनी दृष्टियों से देखता है तब चांदी सोनेमें मंदी आती है। यह प्रभावपूर्ण राश्यंशोंमें होनेके दो अंश पूर्वसे प्रारम्भ होकर पूर्ण राश्यंशों तक होता है। एवं गुरु चन्द्रमा को भी अपनी दृष्टिसे देखता है तब भी चांदी सोनेमें मंदी आती है।

(उ) शनि अपने स्थानसे तीसरे दसवें और सातवें स्थान को देखता है, किन्तु विशेष तीसरा दशवां स्थान है। जब कभी चन्द्रमा शनिसे देखा जावे पूर्ण राश्यंशों द्वारा तब भी चांदी सोनेमें तेजी आवेगी। यदि शनि से मङ्गल देखा जावेगा तब भी चांदी सोनेमें तेजी आवेगी।

यह गोप्य विषय है, किन्तु 'अर्थ स्वध्याय'के पाठकों के लाभार्थ यहां स्पष्टरूपसे समझाकर सर्वोपयोगी बना कर भेंट किया है। पाठक इससे अवश्य ही लाभ उठावें।

(ए) लम्बी तेजी मंदी धीरे चलने वाले ग्रहों पर निर्भर करती है Leng bullesh or Bearesh यथा शनि, गुरु, यूरेनस और राहु, क्योंकि यह मन्दगति ग्रह हैं, इन्हें दृष्टिकी पूर्ण राश्यंशोंसे पूर्वके दृष्टि संपादनके २ अंश चलनेमें पर्याप्त समय लगता है। इसी कारण लम्बी तेजी मंदीका समय बन पाता है। गुरु १ अंश भोगनेमें लगभग १०।१२ दिन लेता है। २ अंशमें २० से २२ दिन ले लेता है और यह २०।२२ का समय तेजीका हो जाता है। इसी प्रकार शनि राहु यूरेनस आदिको समय लगता है। अपनी

त्रैमासिक भविष्यफल

राजनैतिक परिस्थिति और वाणिज्य व्यवसाय

रुई तिलहन गुड़ चांदी सोना शेयर अन्न वस्त्र आदि की तेजीमन्दी

[ले०--श्री पं० सङ्कर्षणजी व्यास ज्योतिषाचार्य]

श्रावण मास

[ता० ११ जुलाई से ८ अगस्त ४६ तक]

मासका आरम्भ तो उत्तम है किन्तु मध्यके योगोंसे फिर वातावरण उग्र हो जाता है, एकदम शान्ति भङ्ग हो जाना सम्भव है, भारत और 'पाक' शासन मन्त्रियोंमें तीव्र मतभेद होजाना है तथा सैनिक मन्त्रीके साथ गुप्त मन्त्रणाएं होने लगती हैं। जहां कहीं सेनाध्यक्ष सन्नद्ध होते हैं, प्रदर्शन होता है, फिर भी भारत एवं भारत मन्त्रियोंके योग उत्तम हैं, देश अपने उत्तम शासनमें अच्छे उन्नति पथ पर ही अग्रसर होता रहेगा। वृष्टिका सर्वत्र अच्छा उपयुक्त प्रभाव रहेगा। गुर्जर, मारवाड़, पाकिस्तानमें सूखा अतएव रोगोपद्रवकी सम्भावना रहेगी, बङ्गीय पाक भागमें वृष्टि अधिकसे हानि, बाढ़, कम्प विद्युत्पतनसे ग्रामोंमें उत्पात रहे, बिहारमें भी कुछ नदियोंके उत्पात सम्भव हैं। दक्षिण भाग—

गतिके अनुसार यह उदाहरण शनि गुरुकी दृष्टिसे संबन्धित है न कि अन्य ग्रहसे एवं सभीका उल्लिखित विषय द्वारा जानें।

(ऐ) यूरेनस पर किसी भी ग्रहकी दृष्टि हो तो शीघ्र ही तेजी मंदी विशेषरूपसे करता है, क्योंकि यूरेनस आशु परिवर्तनशील है।

यह संक्षेप चांदी सोनेका दर्पण वास्तवमें ही दर्पण है, यदि पाठक-गण इस दर्पणका उपयोग अपनी योग्य आंखोंसे करगे तो अवश्य इस दर्पणमें उन्हें लिखे अनुसार तेजी मंदी सही मिलेगी। किसी पाठकको शङ्का हो तो जवाबी टिकट भेजकर शङ्का निवारण कर लें।

मद्रास, हैदराबादकी ओर भी विनाशकारी वृष्टि सम्भव होगी। चतुष्पदोंमें रोग, रसादि पदार्थ तेज रहेंगे, घृतकी शुद्धताका आन्दोलन रहेगा, धातुमात्र तेजीके बाद मन्दीकी ओर रहेगी। भावी फसलमें रोगकी शङ्का रहेगी, वस्त्रकी कमी तथा निर्यात विशेष होगा, रेशमी मालकी बहुतायत रहेगी। अन्न राशिमें मन्दी किन्तु कण्ट्रोलसे कठिनाई रहे। गेहूँ, चना, तूवर, मूंग, मटर तेज। ज्वार, मक्का, तिल, अलसीमें मन्दी रहेगी।

केन्द्र शासनमें—परिवर्तन, कानून, शिक्षा-मन्त्रियों में से किसीका परिवर्तन सम्भव है, द्वीपान्तरीय तूफानोंसे भारतमें वाणिज्य विस्तार, अमेरिका द्वारा शस्त्रास्त्रोंके निर्माणके लिए भारतमें पूंजी लगाई जा सकेगी, भारतसे बहुतसे देश शस्त्र प्राप्त कर सकेंगे, ब्रिटेन अपनी तैयारी अफ्रीका कनाडामें करता रहेगा।

काश्मीर—निर्णय हो जायगा, नेपाल तूफानमें फंस कर शासनकी नवीन प्रणालीमें आ सकेगा। किन्तु यहांकी प्रजा अपनी सांस्कृतिक रक्षामें अन्तर न आने देगी।

'पाक'—भारतसे मतभेद बढ़ा सकेगा, तथा भारतेतर राष्ट्रोंसे सहयोग बढ़ा कर भारतकी स्थितिमें उलझन उपस्थिति कर सकेगा।

रुई बाजार

[ता० ११ जुलाईसे ८ अगस्त तक]

आरम्भमें घटबढ़ दोनों तरफ बाजार रहकर अन्त मन्दी वालोंके पक्षका होगा, अगले वर्षकी फसलकी उम्मेद रिपोर्ट का असर बाजार पर मन्दीका रहेगा। नीचे उछालेमें बेच कर मन्दीका लाभ लेना चाहिए। ता० ११ स्थिर, रातमें कुछ तेज किन्तु ता० १२ का खुलता बाजार नरम रहेगा

यहाँ लेकर शामको तेजीमें और पौते करना। १३-१४ दो रोजकी तेजीका लाभ उठा कर १४ रातमें बेचना, १५ के उछालेमें भी बेचना ता० १६ को मन्दीका लाभ मिल सकेगा, ता० १७-१८ में जोरदार मन्दी ता० १९ को कव्हर कर लेना चाहिये, ता० २०-२१ में उछाला तेजीका रहे इसमें बेचना ही जँचता है, ता० २२ की रातसे ही मन्दीके पक्षमें चलेगा। २६-२७ में जोरदार मन्दी गली वालोंके हाथ आ सकेगी। २८-२९ तेजी वालोंके कटने से कुछ स्थिर रहे, किन्तु बाहरी वातावरणसे मन्दीका जोर रहेगा, ता० ३० साधारण ३१ दिनमें मन्दी रातमें तेजीका उछाला किन्तु मन्दी वाले बाजार उठने न देंगे, ता० ३-४-५ स्थिर किन्तु मन्दी वालों के पक्षमें ही रहेगा।

स्वर्ण—हाजर लेवाल वालोंके कारण कुछ तेजी आ जाय किन्तु वैसे बाजार दबता ही जायगा। ता० ११-१६ तक साधारण १७-१९ मन्दी, २०-२१ में मन्दीका कुछ जोर २२-२४ में तेजी सामान्य २५ तेज, ता० २६-२९ मन्दी, ३१ तेज, १-२ में स्थिर, ३-८ स्थिर।

चाँदी में—ता० ११ मन्दी, १२-१४ तेजीका जोर, १५ को स्थिर १६-१८ मन्दीका प्रभाव जोरदार यहां गली पक सकेगी, १९ तेज, २०-२२ मन्दी २३ स्थिर २४-२६ तेज २७-३१ मन्दी, १-२ तेज, ३-४ सामान्य ५ मन्दी, ६ ७-८ तेज साधारण।

लोह, ताम्र, इस्पात, स्टील—तेज किन्तु संग्रह करना ठीक नहीं। तेजी कच्ची है बेच कर लाभ उठाना चाहिए। कथीर, पीतलमें कुछ तेजी टिकाऊ रहेगी।

तिलहन 'एरण्डा'—में लोग झुक कर अलसी सींगदाणाको भूल सकेंगे, ता० ११-१४ तेज विशेष। १५ २० सामान्य २१-२४ मन्दी, २५-२८ विशेष मन्दी, २९-८-४९ तक तेजी सामान्य, ६-८ मन्दीका ही जोर रहेगा, अलसी चांदीका साथ रहेगा।

पोस्ता—एरण्डामें तेजी मन्दी साथ रहेंगी, कपास्या सोनाके अनुसार चलेंगे।

शेअर—कोई खास तेज नहीं फिर भी उछालेमें बेच कर ही लाभ उठाना चाहिये।

वस्त्र समस्या—व्यापारी वर्गमें असन्तोष, सरकारी नीतिसे परेशानी रहे, फिर भी मन्दीका वातावरण रहेगा।

किराना—रसादि पदार्थके संग्रहमें लाभ हो, बहुत सा माल रेलवेकी असुविधासे अप्राप्तिके कारण तेज हो जाए।

अनाज मात्र वाले—द्विदल धान्य, चना सींगदाना, अलसी, रामदान, कपास्या, चावलमें लाभ ले सकेंगे।

कोलसा लकड़ी वाले—कमाईमें रहेंगे, फारेस्टरोंको घूस देकर ये आम, जामुन भी नहीं छोड़ेंगे, बचतका धन्दा इन्हींका रहेगा।

वृष्टि इस मासमें १८ दिन तक निरन्तर होना है। वैसे तो २५ दिन वृष्टि-अभ्रसे मिला कर आकाश मण्डल घिरा रहेगा। ता० ११, १२, १३, १४, जोरदार वृष्टि होगी, नदी नाले भरपूर, १५, १६ विनाशकारी वृष्टि रहे, २१, २५ २६, २८, लगातार, किन्तु साधारण ता० २, ८ तक लगातार सुबह शाम वृष्टिका क्रम बना रहेगा। शिप्रा, चम्बल, नर्बदा, गङ्गा, ताप्तीके बाढ़ोंसे कहीं-कहीं हानि सम्भव होगी।

भाद्रपद मास

ता० ९ अगस्तसे ७ सितम्बर ४९ तक

मासके प्रथम पक्षमें वृष्टि अधिक किंतु उत्तरार्धमें अल्प रहेगी। फसल उत्तमका अनुमान रहेगा, राजनैतिक वातावरण गरम गरम रहेगा, पार्टिबंदियोंसे प्रत्येक क्षेत्र गन्दा, उत्तम वक्ताके नेता प्रत्येक प्रांतकी दशा खास कर रियासती कार्यकर्त्ताओंकी फूटसे दुखी रहेंगे। जहाँ कहीं अपने विश्वस्तोंके हाथ बागडोर देना अनिवार्य होगा, देश में खासी जागृति रहेगी। संघर्ष रहेगा, क्रांति रहेगी, नवीन जलपोतके उद्घाटनका समारम्भ होगा। गवर्नर जनरलके चार्जकी आवश्यकता अनुभव होगी, पण्डितजी तथा पटेल के कार्यक्रमसे द्वीपान्तरमें प्रशंसा व इनके हाथों विश्व-सुरक्षा तथा विश्वके न्यायका भार इनकी ओर प्राप्त होगा। स्वातन्त्र्य प्राप्तिको इसी मासमें तीसरा वर्ष प्रवेश हो रहा है, ग्रहयोग इसमें भी प्रभावशाली होकर भी परिवर्तनशील है। दशमेशका राहुसे योग होरहा है यह अवश्य मन्त्रिगणों के साथ षडयन्त्रकी सूचना देता है, कुछ गुप्त शत्रु नेताओं के विरुद्ध रचनामें लगे रहेंगे, गुप्तचरोंसे ऐसे वर्गकी ओर सतर्क भावनासे देखा जाना आवश्यक है। रवि, मङ्गल शनि शुक्र तथा गुरुकी स्थिति देशमें क्रमशः उन्नतिकी ओर

ले जाने वाली है, आर्थिकस्तर बढ़ेगा अन्न वस्त्रकी सुविधा बढ़ेगी। भारत खण्ड भारतके मन्त्रियोंमें मिलन आवश्यक होंगे, परस्पर महान् संघर्षके बाद 'पाक' के शासक हताश होकर मैत्रीके लिए पुनर्वार उद्योगमें रहेंगे।

भारतके निकट किन्तु सीमावर्ती देशमें रक्तपात, तूफान रहेंगे। सैनिक दृष्ट्या यह समय देशकी सुरक्षाका प्रधान विषय होगा। धातुवर्ग, रुई, अन्न आदिमें काफी घटा बढ़ी (उथलपुथल) रहेगी, वृष्टि विशेष कई जगह विनाशकारी रहेगी, चांदी-स्वर्णमें तेजीके उछाले, जूट-पाटमें एरण्डा पोश्तामें मंदीके धक्के जोरदार होंगे, दक्षिण, पश्चिममें वृष्टि अधिक, सामुद्रिक-तटस्थ दक्षिण भागमें आंधी तूफानसे हानि, जो वस्तु कृष्णपक्षमें तेज रहे बेचकर लाभ लिया जा सकता है।

ता० ६ अगस्तसे ७ सितम्बर तक रुई बाजार

रुईमें दोनों तर्फा बाजार चलेगा, आरम्भमें तेजीका जोर तो अन्तमें मन्दी अतः दोनों तर्फा लाभ लेना चाहिए। लेकर बैठना या बेचकर कव्हर न करना जिद्दका परिणाम हानि है। ता० ६ से बाजार तेजी होकर १० में एक अच्छी सुर्खी आकर १० तक बाजार तेज ही होता जायगा, उछाला गली वालोंके लिए लाभका है, ११ दिनमें तेजी किन्तु यहां से टोन बदलने लगेगा, ता० १२-१५ तक मन्दीका प्रभाव रहेगा इनमें १३-१४ दो रोज अच्छी मन्दीके हैं, तेजी वाले कट जाएंगे। १६ सामान्य किन्तु १७ १८ में स्थिर रहकर भी मन्दी वालोंकी सहायता करेगा। ता० १६ २० दिन-दिनमें तेज रातमें मंदी किन्तु उछाला एक तेजीका लेवालों की सुध लेनेके लिए ईश्वरकी देन होगा। ता० २१ को खुलता तेज किन्तु शीघ्र ही मन्दी वाले बाजार तोड़ सकेंगे, २२-२३-२४ तीन रोज मन्दी वालेके पक्षके हैं, ता० २५ से पुनः छूट एक तेजीका उछाला है। २६-२७-२८-२६ चार रोज में साधारण तेजी-मन्दीका नतीजा तेज रहेगा, ३० ३१ घट-बध न होकर ता० १-४ मन्दी ही बाजारमें चमकेगी। ता० १से बेचना चाहिए। ता० ३ तक बेचकर ४ में कव्हर कर लेना जंचता है। ५में लेना ६-७ दो रोज टिककर ७ में कट जाना ठीक होगा।

स्वर्ण—उल्लेखनीय घट बध नहीं किन्तु माथे रखना ठीक है, रोजके लेवा बेची करने वालोंके लिए ता० ६-१५ मन्दी, १६-१६ तेज। २०-२४ सामान्य, २५-२८ तेज २६-३१ स्थिर किन्तु मन्दीका प्रभाव १-५ सामान्य, ६-७ तेज।

चांदी— प्रायः रुईके अनुकूल किंतु कहीं २ अन्तर हो गया है, अतएव मोटे हिसाबसे ता० ६-११ तेज, १२-१५ मन्दी, १६-१८तेज, १६-२० विशेष तेज, २१-२४सामान्य, २५-२८ मंदी, २६-३१ स्थिर, १-४ मंदी, ६-७ सामान्य तेज रहे।

तिलहन—एरण्डामें तेजी मंदी अच्छी होगी, प्रारम्भ में तेजी रहे किन्तु मंदीका जोरदार झटका रहेगा, एक अच्छा चांस है, ता० ६-१५ तेज, १६ से मन्दीका वातावरण बन जायगा टोन ही बदल जायगा, ता० १६-२० तक मन्दी, २१-२४ सामान्य, २५-३१ मन्दी, १-५ तेज, ६ ७ मंदी।

अलसी, सींगदाना, कपास्या—रुईके साथ चलेंगे।

पोश्तामें—चांदीके अनुसार तेजी मंदी रहेगी।

जूटमात्र—ता० १८-२३ में मन्दीका प्रभाव होगा। बंगालका जूट भारतमें बहुत मिलेगा। ता० ६-१७ तक तेज १८-२२ में जोरदार मंदी, २४-२६ स्थिर, ३०-५ तक तेज, ६-७ सामान्य।

शेअर—ता० ६-१८ मन्दी, १६-२१ तेज, २२-२५ विशेष तेज, ६-७ स्थिर।

अन्नमात्र—कण्ट्रोलमें जुवार, मूंग मटर, उड़द भाव मन्दा ये बाजारमें खुलकर बिकेंगे। मक्का पर्याप्त आ सकेगी, मक्कामें मन्दी लेना जँचता है।

वृष्टिके लिए—मासमें १६ वृष्टि होना है। वैसे अभ्र विद्युत आदिसे आकाश २६ रोज घिरा रहेगा, किन्तु मास के उत्तरार्धमें शीतका असर भी आरम्भ हो जायगा, ता० ८ ६, १०, ११, ११ सामान्य वृष्टि रहेगी, १६ विशेष (लगभग ४ इंच) १८-१६ छींटा छांटी, २२, २३, २४, जोरदार औत्पातिक वृष्टि होगी। २७, २६, ३१, १६-४६, ३ ७ लगातार किन्तु सामान्य वृष्टि होती रहेगी, विद्युत घनघटा, गड़गड़ाहट अधिक रहेंगे।

आश्विनमास

[ता० ८ सितम्बर से ७ अक्टूबर ४६ तक]

प्रावृट् कालकी समाप्ति और शरद्के प्रभावसे परिपूर्ण यह मास सबके लिये सुखद है, आरम्भके ग्रहयोगसे देशका वातावरण प्रभावशील रहेगा। देश-देशान्तरसे सम्बन्ध बढ़ेंगे, बाहरी पूंजीसे वाणिज्य विस्तार होगा, किसी बड़े नेताके लिए एक्सिडेण्टका वातावरण बनेगा, मासका उत्तरार्ध चिन्ताका है, देशमें एक अशान्तिकी लहर खिच जायेगी, शत्रुओंका साहस बढेंगा वृष्टि सामान्य रहेगी, द्वीपान्तरीय संघर्षका भी प्रभाव रहेगा, साम्यवादी प्रकरण देशमें उग्र रूप पकड़ सकेगा, किन्तु कुशल कर्णधारोंके हाथसे भारत अपने निश्चित सिद्धान्त पर आरूढ रहेगा। गांधी निधिका उपयोग होने लगेगा, सर्वोदयके उद्योग बढ़ेगें। 'हरिजनों' को उक्त निधिसे अधिक लाभ होगा। उत्तम जातिमें इसके विरुद्ध आन्दोलन सा बनेगा। निकट भविष्य की फसलमें नतीजा उत्तम अनुभव होने लगेगा, द्वितीय साखकी कृषिके आरम्भका प्रयत्न आरम्भ होने लगेगा, कृषक समाज प्रसन्न रहेगा।

'पाक'—भारतके सम्बन्धका कटु अनुभव देशमें दिखाई देगा। कुछ ५ वें कालमके लोग गिरफ्तार होंगे। राजस्थान में किसी वैज्ञानिक प्रयोगकी आनुसंधानिक शाला खोली जा सकेगी, उद्घाटनमें कुछ बड़े २ बाहरी व्यक्तियोंका भी सहयोग—समागम सम्भव होगा। वृष्टि प्रायः समाप्त रहेगी। फिर भी न्यूनाधिक रूप में ८ बार वृष्टि सम्भव होगी। ता० ८,१०,१३,१६,१७,२३,२७,२६ को साधारण, बादलगर्जन विद्युत विशेष सर्पदंश भय अधिक रहेगा, विषधरोंकी सृष्टि बढ़ेगी। पितरोंके तृप्त करनेके पक्षमें दुग्ध-घृतकी महर्घता रहेगी।

रुई-बाजार

ता० ८ बाजार तेज ६ को लेवालोंके जोरसे उछाला आकर १०—११ बाजार दब जाए किन्तु १२ को पुनः तेज होकर ता० १३ तक तेजीका सामान्य रूप रहे, ता० १४ स्थिर १५ को कुछ बाजार दबेगा। १६ में मन्दीका असर रहे, यहां लेकर ता० १७--१८ को जोरदार तेजीका लाभ उठाना चाहिए, ता० १६ को स्थिरमें बेचना जंचता है। २० मन्दीका विशेष प्रभाव, २१--२२ जोरदार मन्दी किन्तु लेवालोंके जोरसे बाजार स्थिरसा ही रहेगा। ता० २३ को उछाला आ सकता है, २४--२५ साधारण तेज, २६ में आखिर तेज है, २७ सामान्य, २८ दिन तेज रात मन्दी २६--३० सामान्य ता० १--२ स्थिर (१ दिन में मन्दी रातमें उछाला आकर तेजी) २ कोई चेन्जेस न होगी। ता० ३ साधारण तेज, ४ में कुछ अधिक तेज, ५ तेज अधिक, रातसे मन्दी ६-७ विशेष मन्दी रह जाना सम्भव है।

स्वर्णमें — घट बध सामान्य किन्तु १--८ चान्स गली वालोंके लिए है, वैसे तो आरम्भमें तेजी वाले लाभमें रहेंगे किन्तु बीचमें एक दम रियेक्शनसे बाजार दबा तो फिर बेचवाल उठने नहीं देंगे, ता० ८ से १६ तक तेज १७ से मन्दीका प्रभाव, ता० २० से अधिक मन्दी (गली वालोंके पक्ष में) २२ को उछाला तेजीका अस्थिर, २३--२७ मन्दी, २८-३० स्थिर, १--५ तेज सामान्य, ६—७ मन्द का प्रभाव रहे।

(१) ता० १६-२२ तक विशेष घट बढ़ होगी, बेचवाल के पक्ष में बाजार रहेगा।

चांदी—प्रायः रुईके साथ बाजार चलेगा, कहीं २ अन्तर है किन्तु एकाध दिनके आसरेसे तेजी मन्दीका साथ हो जाया करेगा, ता० ८। १० तेज ११-१३ स्थिर १४-१५ मंदी १६ तेज १७, १८-१६ साधारण २०-२२ जोरदार मन्दी, ३० तेज विशेष १-२ स्थिर, ३ तेज, ४-५ सामान्य ६-७ मन्दी विशेष होगी। ता० १६ रातसे मन्दीके पक्षमें रहना चाहिये, १८ से २२ में मन्दी जोरदार होगी।

लोहमात्र—आरम्भमें बाजार दबा हुआ रहेगा-किन्तु इसमें ता० २१-२४ तकमें एक जोरदार घट-बध है, व्यापारी वर्गकी निद्रा भंग हो सकेगी।

तिलहन—एरण्डा, अलसी वाले कमा सकेंगे, संग्रही को अच्छा लाभ होगा, आरम्भसे ही बाजार उठने लगेगा किन्तु अमावसके लगभग तो काफी परिवर्तन होनेको है ता० ८-६ तेज, १०-१५ सामान्य १६-१८ तेज १६ स्थिर २० मन्दी २१-२२ तेज २३-२६ जोरदार तेजी २७-३०

त्रैमासिक राशिफल

[श्री पं० सङ्कर्षणजी व्यास ज्यौतिषाचार्य]

मेष—(चू, चे, चो, ल, ली, लु, ले, लो, अ)

ता० १ से २५ जुलाई तक धंधे रोजगारमें बेचैनी, प्रत्येक कार्यमें उलझन, अयश, बेकार झगड़े फिसाद हो जायं, ऋण बढ़ने लगे, आमदनी घट जाय, बुद्धि काम न देने लगे, आपसमें कलह द्वन्द्व, चोरी हो जाय, कुमार्गमें, व्यसनोंमें प्रवेशकी इच्छा, द्यूत पसन्द हो। इतने समयमें १२ जुलाईसे साधारण राहत मिले, चिन्तामें कमी आ जाय मित्रोंकी मार्गदारोंको नेक सलाह सहायक हो जाय और झंझटसे मुक्ति मिल सकेगी, फिर भी इस राशिके व्लेक ४२०के भक्त जेलयात्रा करेंगे, भ्रष्टाचारसे बचकर रहनेमें ही लाभ है। ता० ६ से ६ जुलाई, २० से २४ जुलाई चिन्ता लेकर चलनेके दिन हैं।

ता० २५ जुलाईसे ३० सितम्बर तक समय उत्तम रहे, काम धन्देमें मन लगे, आमदनी होने लग जाय बीमारीसे छुटकारा हो, स्वाध्याय प्रवृत्ति हो, लेखन सुधरे, मान प्रतिष्ठा बढ़े, प्रत्येक क्षेत्रमें सफलताके आसार दीखे, भूमि, मकान, लेना आदिमें लाभ, व्यवसाय मात्र लाभके दिखने लगे। इस अवधिमें ७ अगस्तसे २४ अगस्त तक नवीन संतान, अथवा गर्भ योग संभव, कहीं २ गर्भ भ्रांति रहे, स्त्रियोंमें खास कर यह फल अनुभव होगा। २४ अगस्तसे आगे रोग, चर्म विकार दाद खाज खुजली संभव हो जाय, प्रसूतामें बाहरी बाधा पक्षाघात संभव हो सके, व्यापारी वर्गमें भी रुई वाले नुकसान उठायेंगे, दलाल सफल होंगे।

ता० २१ सितम्बरसे २१ अक्टूबर तक परेशानी रहे, व्यर्थ भय हो, स्वयं निराश दूसरोंको निराश करेंगे, लाभ अल्प, चिन्ता अधिक, व्यापारमें उल्टा सूझे, तेजी हो तो मंदीमें विश्वास, मंदीसे आप तेजी में आजाय, कुव्यसनोंमें प्रवेश, द्यूत, छल, प्रपञ्चमें मन अधिक सहयोग दे, ता० २१,२२ सितम्बर, १७ से २० अक्टूबर तक चिन्ताके दिन होंगे।

वृषभ—(इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वु, वे, वो)

ता० २७ जुलाई तक अस्थिर मनोवृत्ति, घर में जाए तो परेशान बाहर लेनदारों से तंग, प्रतिक्षण अपमान भय, आमदनी कागजी रह जाय, धातुमात्र से लाभ किन्तु चंचलता से हाथ में आया भी माल राखका ढेर होजाय, स्त्रियोंमें रोग, प्रदर, धातुस्राव अधिक, गर्भ स्राव, श्वास, पीलियासे तंग, हिस्टेरिया रहे, पुरुषोंमें बवासीर संग्रहणी, पक्षाघात संभव, रहेंगे, ता० ८-१० जुलाई चिन्ताके दिन हैं, रोगियों के लिए तो असाध्य समय होगा। व्यापारी वर्ग घाटे-नफेकी टक्करमें आजायेंगे।

ता० २७ जुलाईसे २५ अगस्त तक प्रत्येक व्यापार से बचनेकी आवश्यकता है, खासकर किराना, अनाज और कटलरी वाले नुकसानमें आजायेंगे, ऋण बढ़े, सूझमें फरक आजाये, लेनदारसे छिपना पड़े, वस्तु गुम हो जाय, राज भय उपस्थित हो जाय ईश्वरका सहारा ही काम देगा, सर्विस पेशा, दलाल

रियेक्शन १-२ स्थिर ३-६ मन्दी ७ तेज रहे।

सींगदाना, पोश्ता, तिल्ली—लगभग एरण्डाका साथ करेंगे, निकासीका रोला तिलहन मात्रमें तेजी ला सकेगा।

जूट-पाट—विशेष तो रुईका साथ करेंगे किन्तु इसमें ता० २१-२२ में जोरदार तेजीका चान्स है वैसे तो रोजाना घट-बध रुईका साथ करेंगे।

शेयर—लोह, स्टील टाटाके तेज हो जायेंगे वस्त्र मील, सीमेण्टमें मन्दीका प्रभाव रहेगा।

मजूर, ठेकेदार ही इसमें सुख पासकेंगे, जिद्के धन्धों से बचना चाहिए, स्त्रियोंमें गर्भपात विशेष, बच्चे अल्पायुषी संभव होंगे। २५ अगस्तसे २१ अक्टूबर तक सुख रहे व्यापारमें लाभ, प्रवास, नवीन संतान सुख हो, स्त्रियोंमें गर्भ रहे, रुई, कपास्य, अनाजमें पोश्तामें लाभ हो, सर्विस पेशा, लेखन व्यवसाय वाले कमा सकेंगे, बुद्धिजीवी वकील वर्ग सुखी रहेंगे, अध्ययनशील पत्रकार साहित्यिक वैद्य, डाक्टर मिस्त्रियोंकी कदर होगी, द्यूत जोखमी, हाजर आदिमें भी लाभके चान्स होंगे।

मिथुन—(क, कि, कु घ, ङ, छ, के, को, ह)

ता० ६ जुलाईसे २७ अगस्त तक स्वास्थ्य चिन्ता, स्त्री वियोग, स्त्रीके लिये व्यय, चञ्चलता बढ़े, प्रवास हो, लाभ-हानिके उतार चढ़ाव अधिक रहे। व्यर्थ चिन्ता उपस्थित हो, नौकर पेशामें इधरके उधर अदला बदली रहे, स्त्री वर्गमें मासिक दोष, प्रदर रोग संभव। श्वास-कास खुजली अधिक, धातुवर्गसे हानि हो। ता० १०, १३ जुलाई और ७, १० अगस्त ये दिन खास चिन्ता नुकसानके होंगे, वाहनसे भय, राजभय, वस्तु के जानेकी शंका, बीमारके लिये आयुष्यमें संदेह।

ता० २७ अगस्तसे २५ सितम्बर रोजगार-धन्दा बंद रखना उत्तम, प्रत्येक लाइनमें उलझन बढ़े, ऋणके आसार हो, तगादे सहन करना पड़े, बाजारमें मुंह छिपाना आवश्यक हो जाय, झगड़े फिसाद बढ़ जाय, बीमारको शस्त्र चिकित्सासे बचना चाहिये, डाक्टर वकील, दलाल, किराने वाले और व्याज खोर ही इस अवधिमें सुखी रहेंगे। बीमार बच्चे, गर्भवती स्त्रियोंके आयुष्यमें संदेह रहेगा।

कर्क—(ही, हू हे हो ड डी डू डे डो)

ता० ६ जुलाईसे ६ अगस्त तक चिन्ता रहे, भ्रमण हो, असफलतासे क्रोध जिद्द रहने लगे, म्यादी ज्वर रहे, वाहनसे टक्कर, चोट का सन्देह रहे, व्यापारमें हानि, जूआ, सत्तहनमें अल्प लाभ अधिकार में कोई चेन्जेज सम्भव नहीं, सर्विस लगे किन्तु सन्तोष प्रद नहीं, आय करसे अर्थहानि पश्चात्ताप रहे।

ता० ६ अगस्तसे २७ सितम्बर तक धन्धा रोजगार चलते भी मनोवृत्ति अस्थिर रहे, उद्वेग बढ़े, पत्नि से मतभेद, प्रत्येक बातों में जिद्द रहने लगे, जीवनमें असारता अनुभव हो, धातुमात्रमें लाभ हो किंतु एक-दो घाटे भी जोरदार लगकर हिम्मत तोड़ सकेंगे, इसे अवधिमें ६ अगस्तसे १२ अगस्त और ५ सितम्बरसे ६ सितम्बर ये दिन महान् चिन्ताके होंगे। लम्बे रोगी, असाध्य तो इन दिनों में आयुष्यसे छुटकारा पा सकेंगे, काश्तकारोंके लिए यह समय लाभका होगा, नदी नालोंमें तैरने या एकान्त सेवन करनेमें खतरा रहेगा।

सिंह—(मा मी मु मे मो ट टी टू टे)

ता० ४ जुलाईसे १७ अगस्त तक व्यापार व्यवसायमें लाभ रहे, सुख चैनसे समय कटे, उत्तम वस्तु का संग्रह प्रिय हो, काश्त, जायदाद पशु वृद्धि प्रिय रहे, अध्ययन प्रवृत्ति, धातु वर्गमें रसादि पदार्थ (घृत, शहद, तेल) चावल, साल, लवङ्ग, कालीमिर्चे, साबूदाना, दाना मात्र, शक्करमें लाभ रहे, लेखक, क्लर्क, गुमास्ते, साहित्यिक, कवि, अध्यापक, वकील पेशाके लोग कमाईमें रहेंगे, इन्हें सरकारसे सहायता रहेगी, व्यसनोंमें प्रवृत्ति, स्त्री समुदायमें जागृति, कानूनी अधिकार प्राप्त, स्वच्छन्दता फैलेगी। कन्या-सन्तान सम्भव हो, इस अवधिमें २० जुलाई तक एकाध व्यावसायिक हानि भी हो सकेगी, खर्च शुभ कार्यमें अधिक, सम्भव प्रवास अधिक, बीमे वाले, वकील, दलाल, किरानेके रोजगारी, कटलरी, मिस्त्री, इन्जीनीयर, वक्ता, प्रचारक फायदेमें रहेंगे। बच्चोंमें रोग, प्रमेह, शुगर, गिनोरियाके रोगी असाध्य होंगे, यकृत, टी० बी० की रोगिणी आयुष्यहीन होगी। २० जुलाईसे आगे समय पुनः उत्तम रहने लगेगा। प्रत्येक व्यवसायमें लाभ, वस्त्र, रेशमी, सनी माल में अच्छा लाभ हो सकेगा, तिलहन खास कर एरण्डा पोश्तामें उत्तम लाभ हो, लेन-देनमें यश,

जायदाद खरीद फरोख्तमें, व्याज बट्टामें लाभ रहे।

ता० १७ अगस्तसे ७ सितम्बर तक चिन्तामय स्थिति रहे, पित्तकी शिकायत हो, दौड़-धूप, श्रम अधिक, लाभ अल्प, परेशानी रहे, दिमागी हालत खराब रहे, खाया हजम न हो, सुस्ती बढ़े, नोकरोंमें अविश्वास, कोलसा, लकड़ी, चारा, चना, खल, तैल, कपस्यामें अल्प लाभ, डाक्टर, वैद्य, सर्जरी वाले, मेडिसनके उद्योगी लाभमें रहेंगे, स्त्रियोंमें गर्भपात बच्चे अल्पायु होंगे।

ता० ७ सितम्बरसे २१ अक्टूबर तक चंचलता बढ़े, स्त्री-पुरुषमें मत भेद, प्रवास प्रिय, प्रवास विशेष, आमदनीके उतार चढ़ावके झटके, लाभ अवश्य, नुकसानके धोके अधिक, स्त्रियोंका स्नेह, व्यसन विशेष, अपव्यय, रस पदार्थ (दूध, घृत, शहदमें) चावल, मोती, शङ्ख, बटन, चांदी, रुईमें उद्योग रहे, फलोंका व्यापार लाभका हो, इस अवधि में ८ सितम्बरसे ११ सितम्बर ५ अक्टूबरसे ८ अक्टूबर काफी चिन्ताके होंगे, बीमार असाध्योंके लिये यह समय आखीरका होगा।

कन्या—(टो प पी पु ष ण ठ पे पी)

ता० ६ जुलाईसे १७ सितम्बर तक यहां से कन्या राशिके दिन पलटते हैं, भाग्य साथ देने लगेगा, प्रत्येक उत्तम व्यापारमें लाभ, यश मिले, उत्तम वर्ग में स्नेह बढ़े, जयें लगे, भागीदार मिले, पूजींदार स्वयं सहयोग दें, वस्त्रमें रेशमी, रङ्गीनमें लाभ हो, अनाजमें सफेद, छिलकेदार, रसमें घृत, दूध, खोवा। नारियल, काजू, बदाम, तेलमें परण्डामें लाभ हो सकेगा। इस अवधिमें २० जुलाईसे १४ अगस्त तक खर्च, नुकसानका झूठा भय, हिसाबी भूल, गबन सम्भव हो जाय, आगे फिर १४ अगस्तसे १७ सितम्बर तक कन्याका सुख हो, शुभ खर्च शत्रु पर प्रभाव रहे, समाजमें यश, प्रतिष्ठा बढ़े, लाभ हो, अधिकार बढ़े, स्थानान्तर हो, अध्ययन प्रवृत्ति हो, फीस अच्छी मिले, लोग तारीफ करें, प्रसन्नतासे समय कटेगा। रोगी आराम होंगे, वैद्य, वकील, काश्तकार, लाभमें होंगे, नाविक-सैनिक वर्ग, मिस्त्री, शिल्पी, ड्राइव्हरोंकी कद्र होगी।

ता० १७ सितम्बरसे ७ अक्तूबर तक चिंता, उद्वेग व्यापारसे घृणा, रोग-अशांति, वस्तुके जानेका पश्चात्ताप, स्त्रीसे कलह, कुटुम्बमें कट-कट, नौकरीमें अविश्वास, बेकारी भय, पैत्तिक रोग सम्भव, व्यर्थ भ्रमण, लाभ अल्प, वस्तु अधिक लगाकर व्याजमें घाटा अनुभव हो। आकस्मिक परेशानी रहे, मेडिसन, ऊन, कम्बल, जङ्गली वस्तुमें लाभ रहे, पशुके क्रय-विक्रय से लाभ, वाहन एक्सचेंजमें लाभ रहेगा। सर्विस पेशा ग्रेन फूडके अधिकारी बेकार हो घूमेंगे, क्रोध बढ़ेगा। स्त्रियोंमें गर्भ सम्भव, बच्चोंमें, वृद्धोंमें रोग, म्यादि ज्वर वाले, पाली, आपरेशनके रोग, प्रमेह, प्रदर, पसली, वाले आखरीके दिन गिनेंगे।

तुला—(र री रु रे रो त ती तु ते)

ता० २३ जून से ६ अगस्त तक परेशानी रहे, विवाद बढ़े, मन्दाग्नि, संग्रहणीके शिकार रहना पड़े, खाज-खुजली अधिक हो सके, व्यापारमें नुकसान रहे, स्त्री चिन्ता रहे, वाहनसे भय, एक्सिडेंट सम्भव, 'प्लेन' से यात्रामें भय रहे, स्त्री जातिमें भूत बाधाकी शंका, हिस्टरिया, टी० बी० सम्भव, प्रसूतमें सेण्ट-पर सेण्ट नुकसान अनुभव हो, लोह वाले, किराने वाले, काश्तकार, कारखानेदार उलझन में आ जाएं, राजभय, फौजदारी केसके शिकार, जेल देखेंगे, हलके धंदे वाले, मजूर पेशा, श्रमिक वर्ग ही लाभमें रहेगा।

ता० ६ अगस्तसे १७ अक्टूबर तक प्रारम्भमें कुछ रोग द्रव्यकी खींचतान किंतु हुँडीकी अदला बदली से बात रह जाय और बिगड़ी लाइन सुधरने लग जाय, ईश्वरने हाथ पकड़ लिया यह अनुभव होने लगेगा, वस्त्रमें लाभ, दलालीमें, व्याज आढत, आढतियोंसे लाभ, परिचय बढ़े, अधिकार बढ़े, यश मिले। शक्कर, हल्दी, चावल, अलसी, गुड़, मिर्च, रेशमी, रंगीन, ऊनी मालमें लाभ रहे, लोह मात्रमें नुकसान होगा, नौकर पेशा, क्लर्क, मुनीम, गुमास्ते, रेलवे कर्मचारी, ड्राइव्हर लाभमें रहेंगे, वकील,

डॉक्टर, मास्टर, प्रोफेसरोंमें कई अपनी लाइन तब्दीलीमें रहेंगे।

वृश्चिक—(तो, न, नि, नु, ने नो, य, यि, यु,)

ता० २५ जूनसे २५ जुलाई तक कमाई काफी हो। किन्तु दुश्मनोंका षड़यन्त्र बढ़े, परेशानी रहे, घरके ही विरोधी बन जाय, कमाईका बड़ा हिस्सा बेकार में बर्बाद हो जाय, चिन्ता लेकर घूमना पड़े, शिकायतों का तांता लगा रहे, रेकर्ड बिगाड़नेका भय, व्यापार में लाभ, धातुमें लाभ रहे, सूत उत्तम रहे किन्तु समय पर दूसरी पार्टीका जोर देखकर धन्दा थोड़ा ही रह जाय और लाभसे वंचित रहना पड़े, किराने में लाभ, वस्त्रमें हानि, हलदी, दाल-मात्र शक्कर, गुड़ नारियल कथीर, पाट, ऊनी मालमें साधारण लाभ रहे, पशुके क्रय विक्रयसे, मकानोंकी दलालीसे साधारण लाभ हो, संगतिके जानकार, कलाकार, शिल्पी, मास्टर, प्रोफेसर, अध्ययनशील, बुकसेलर, पत्रकार लाभ उठा सकेंगे।

ता० २५ जुलाईसे ७ सितम्बर तक व्यापारमें लाभ, जूट, पाट, शेयर, लोह, इस्पात, स्टील, हल्दी कथीर, लौंग, जायपत्री, नागरमोथा तिलहनमें (एरण्डा सींगदाणा, अलसी) लाभ रहे, अधिकार वृद्धि, संतान सुख, स्त्री वर्गमें सन्तान किन्तु रुग्ण रहे, भूतबाधा भय, हिस्टेरिया, यकृत, ब्लड प्रेशर ट्रबलके रोग अधिक होंगे, वृद्धोंमें, बच्चोंमें रोग, कोलसा, चारा, लकड़ी वाले लाभ उठा सकेंगे, भ्रमण अधिक हो, सैनिक पुलिसवर्ग, जासूस, नीच जातिके लोग तरक्की पा सकेंगे।

ता० ७ सितम्बरसे २१ अक्टूबर तक कमाई अच्छी हो, वृक्षमें लाभ, रस पदार्थमें, चांदीमें, रुई, किराना उद्योग, पशुवर्गसे, कृषिसे, लेखन, अध्ययन तथा अध्यापनसे पत्रकारितासे, क्लेरिकलसे, लाभ रहे, बेकारी हटे, परिश्रम अधिक किन्तु उसका योग्य पुरस्कार प्राप्त हो सके, स्त्रियोंमें प्रसन्नता, संतान सुख, कन्या जन्म विशेष हो, वकील, डाक्टरोंकी चांदी है।

धनु:—(ये, यो, भा, भि, भू, ध, फ, ढ, भे)

ता० १८ जूनसे २५ अगस्त तक हानि लाभके चढ़ाव उतार अधिक रहे, लम्बे चौड़े नुकसान और वैसे ही लाभके भी चान्स रहें नतीजेमें जहांके तहां रहना पड़े, दिल कमजोर बन जाये, इधर उधर घर बदलते रहना पड़े, परेशानी हो, समाजसे पार्टीसे संघर्ष, व्यर्थ दलबन्दीमें फँसकर अपनी हानि उठानी पड़ जाय, अधिकार हीन हो पश्चाताप सम्मुख रहे, बेकारी बढ़े, व्यय भार हो जाय, केवल किराना ही लाभका मार्ग रहे, या देव-धर्म-पूजा पाठमें ही समय व्यतीत करना उचित है, वकील पेशा उपदेश, प्रचार संस्थाकी ओरसे भ्रमणमें लाभ रहे, वाहनसे भय पीलिया उदर विकार, गर्भस्राव स्त्रियोंकी आयुष्यमें संदेह रहे।

२५ अगस्तसे ८ अक्टूबर तक—उद्वेग, कलह, व्यापारमें हानि, वाहनसे भय, जायदाद बिगड़नेका सन्देह लेनदारके तगादे रहें, हाथ तङ्ग रहे, पदसे भ्रष्ट लोकापवाद भय, विरुद्ध प्रचार, ग्लानि, व्ययभारसे त्रस्त, अनेक पीड़ा स्त्री-सन्तानसे चिन्ता, दिमागी हालत खराब हो, पागल सी वृत्ति बन जाय, पीलिया एनीमिया मूत्ररोग, लंग्समें खराबी लीवर में शोथ, रक्त दबाव बढ़ जाय गर्भवतियोंके गर्भस्राव विशेष, प्रसूता प्रसूत रोगसे त्रस्त हो, बच्चे इस राशि के अतिसार आंवसे खलास हो जाय। जूट-पाट एरण्डामें अल्प लाभ हो, धातुमात्रमें हानि सूतमें लाभ, अन्नमें उड़द, मूंग मटर, ज्वारसे लाभ हो, सर्जरीके डॉक्टर, पुलिस, तगादेदार, मुख्त्यार, ठेकेदार फायदेमें रहेंगे।

मकर—(भो, ज, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खु, खे, खो, ग, गि)

ता० २६ जून से २७ जुलाई तक—व्यापारमें नवीन वस्तु फंसाना ठीक नहीं, लगाई हुई पूंजीको कम-ज्यादा करके निकालना ही बुद्धिमानी है, आलस्य रहे, उद्वेग बढ़े, चिन्ता रहे, अकारण मामले बन जांय, राजमें अयश, आपसी टंटे हो जांय, वादविवादसे झगड़े बढ़ कर फौजदारी बन जाय, समय

सोच कर चलनेका है। व्यापारमें अल्प लाभ, श्रम अधिक तिलहनमें सामान्य बचत रहे, एक्सिडेण्ट भय, मन्दाग्नि रहे, स्त्रियोंमें अपमृत्यु, विष—शस्त्रादि प्रयाग सम्भव, लकड़ी, कोयला, चारा, मजूरोंमें लाभ रहे।

ता० २७ जुलाईसे ३० सितम्बर तक—व्यापारमें लाभ रहे, काम बहुत मिले, मित्र जनोंके उद्योगसे अधिकाधिक सफलता रहे, राज सम्पर्क बढ़े, वरिष्ठ जनोंमें प्रवेश, मामले सुलझ जांय, अपना लेना पट जाय, लेनदारके झगड़े साफ हो जाँय, दिमागी कमजोरी रहेगी, मन्त्र-जन्त्रमें विश्वास रहे, स्थानान्तरकी अफवाह फैले, सोना, चाँदी, ताम्रमें लाभ, लोह, इस्पात, सीमेण्टमें हानि रहे, डाक्टर, वैद्य, महन्त, अध्यापक, उपदेशक, मिनिस्टर लाभ उठा सकेंगे।

कुम्भ—(गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, सो, द)

ता० २२ जूनसे ११ जुलाई तक—व्यापारमें लाभ किन्तु स्वास्थ्य साथ दे ता दमा, मन्दाग्नि, मल-विकार, हार्ट-ट्रबल, प्रेशर, एनिमियां, मूत्ररोग स्त्रियोंमें विशेष रहे। 'प्लेन' से भ्रमण योग्य न होगा, तिलहनमें लाभ। एरण्डा, सींगदाना, तिल, अलसीमें हानि। साबुन, तेल, मिल, फ़तार मिल, प्रेस, जीनके सम्पर्कसे लाभ रहे, पुलिस वर्ग फौजदारीके शिकार, अधिकारी जुर्ममें आकर जेल यात्री हो सकेंगे, नये बेकार बढ़ेंगे, मजूरी घट जायगी, ईंट, चूना, ईंधनमें लाभ हो, ट्रक वाले, लारी वाले, कमाईमें रहेंगे।

ता० २१ जुलाई से २७ अगस्त तक—चर्मरोग खाज, खुजली अधिक हो, बेकारीका अनुभव हो, उद्योग हानि हो, घर-घर चक्कर खाकर पेट पूर्तिमें घाटा दीखे, अधिकारसे पतन, अनिश्चित स्थान पर जाना सम्भव हो जाय, मालिकसे बेकार विवाद बन जाय, जो न अनुभव किया हो करना पड़े, लोहमें लाभ, टूट-फूट, रद्दी, ईन्धन, चारा, खण्डहरोंके बेचने लेनेमें लाभ रहे, बाग, पान, फल, फूल, के उद्योगमें लाभ साधारण रहे, हरिजन वर्गमें उन्नति रहेगी।

२७ अगस्त से २१ अक्टूबर तक—खर्च अधिक लाभ अल्प, शुभ कार्यमें मेहमानोंकी सेवामें, राष्ट्रीय कार्यमें समय व्यतीत हो, व्यवसायमें घृणा, धातु वर्गमें हानि, अधिकार परिवर्तन, अध्ययन अध्यापन, पसन्द रहे। धर्ममें श्रद्धा, कृपणता, बढ़ जाय, डाक्टर, वैद्य, गद्दीधर, उपदेशक, प्रचारक, पत्रकार लाभ उठा सकेंगे, राजपूतोंमें वैश्य वर्गमें काश्तकारोंमें असन्तोष रहे।

मीन—(दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, च, चि)

ता० २३ जूनसे २१ अगस्त तक—व्यापार लाभ, वस्त्र, रुई, रेशम, ऊन, कम्बल, साटन, जूट, बारदानेमें लाभ रहे, कटलरीमें होजियरीसे, सूत, अनाजमें दाल, तिलहनमें, अलसी, सींगदाणा, लाभके होंगे, ठेकेदार, कमीशन आढ़तके व्यापारी, स्टाकिस्ट, कारखानेदार सरकारके मेहमान होंगे, मामलोंमें उलझन, अपयश रहे, पदमें पीछे, रेवेन्यूके कर्मचारी, मीलके क्लर्क गुमास्ते काश्तकार और उनके सम्पर्कके अधिकारी रंगे पकड़े जा सकेंगे, सेल्समेन, जावरको सोच कर चलना चाहिए, रेलवेके पुलिस, गार्ड, मास्टर, गुड्स वाले जेब भर सकेंगे।

ता० २१ अगस्त से २७ सितम्बर तक—स्वास्थ्य चिन्ता रहे, मन्दाग्नि, लीव्हर, मूत्ररोग, मल रोग, गन्दी बीमारियाँ अधिक होंगी। आलस्य विशेष, कामसे घृणा, एकान्त पसन्द, ऋण बढ़ जाय, ब्याज बढ़ जाय, तगादे लगने लगे, अतएव छिप कर बाहर भ्रमण आवश्यक हो जाय, शत्रु बढ़े, धोखा होय, चोरी हो, चोरी स्वयं करनेकी इच्छासे ४२० के धन्धोंमें दिलचस्पी रहे, पदसे भ्रष्ट हो जाय, फौजदारी सम्भव रहे, इज्जत आबरू बचाना कठिन हो जाय, तिलहनमें साबुन, ईंधन, और काले मालमें लाभ रहे।

ता० ७ सितम्बर से २१ अक्टूबर तक—स्वास्थ्य सुख रहे, सन्तान चिन्ता, गर्भपातसे पत्नीकी चिन्ता रहे, भ्रमण हो, लाभ अल्प, धातुमें हानि, अनाजमें लाभ अल्प, वस्त्रमें साधारण लाभ, फलोंमें, कटलरीमें, दलालीमें, उपदेशक, प्रचारक, कथा आदिसे लाभ हो, मान प्रतिष्ठा यश बढ़े, काम काज अधिक रहे, किन्तु अशान्ति रहे, घृतमें लाभ सम्भव।

चांदी सोना रुई गुड़ आदिके जनरल चांस और दैनिक घट-बढ़

[लेखक—ज्योतिषाचार्य रमलाचार्य श्री गोरा विद्यासागर 'दैवज्ञ']

(आषाढ़ शुक्ल पक्ष (सुदी) की दैनिक रुख)

तिथि	बार	चांदी	सोना	रुई
१०	मं०	घटे भाव पोते करो	मंदी ।) तेजी ।।)	मंदी ३) ३।।) पर खरीदो
११	बु०	तेजी ३) ३।।) होगी	तेजी खेलना चाहिये,	पहिले तेज ५) ६) फिर मंदा
१२	गु०	उछाला १) १।।) बेचों	घटा बढ़ी चलेगी,	बम्बईमें खरीद चालू है
१३	शु०	मंदी २) २।।) होगी	तेजी ।) मंदी ।।।)	तेजीका मुनाफा ११ बजे लो
१४	श०	तेजी ३) २।।) अवश्य	तेजी ।।।) १) होगी,	तेजी ७) ८) होकर रहेगी

आषाढ़ मासका पोजीशन चांदी, सोना, रुई।

सुदी १० को रात्रिमें बुध दर्शलकी युति होगी, गत रिकार्डका अनुभव है कि इस योगमें ६) रु० की चांदीमें १।।) २) स्वर्णमें १५) १८) रुईमें तेजी होती है। तिथि ११ बुधवार तथा १४ शनिवार इन दोनों दिनोंकी तेजीको कोई नहीं रोक सकता यह सिद्धान्त चांस है, उपयोग करो।

शेयर, बारदाना, कालीमिर्च, सरसों, अलसी—

इन बाजारोंमें सुदी १० तक जिस वस्तुमें मंदी आ जाये उसको खरीदना, १५ से मंदी चालू हो जायेगी, घटे भावों खरीद उछालेमें बेचाण बोलना और नफा सुधारते रहना।

गुड़ गल्ला, चावल, जीरा, बाजरा, ग्वार—

सुदी १० से १५ तक गुड़ ।=) ।।) मंदा, अन्य वस्तुमें घटा बढ़ी ही चलेगी, हर उछाले बेचना बोल नफा बढ़ाना।

श्रावण कृष्णपक्ष (वदी) की दैनिक रुख—

तिथि	बार	चांदी	सोना	रुई
१	चं०	बेचो योग मंदे हैं १।।) २,	उछाला खाकर गिरे,	बेचदो मंदा ५) ६)
२	मं०	तेजीं होगी बेचो	तेजी ।।) मन्दी ।।।)	मुनाफा मन्दीमें मिलेगा
३	बु०	मन्दी २।।) ३)	मंदा ।।) ।=)	बेचो १२ बजे ३) ४) टूटे
४	गु०	मन्दी खेलो ।।।) १)	बाजार टूटेगा	बम्बईमें सटोरियें बेचेंगे।
५	शु०	घटे भाव खरीदों	तेजी ।) ।=) हो जायें	पहिले मंदा फिर तेज होगा
६	श०	नजराने लगादो	घटे खरीदो	तेजी ५) ६) टका बढ़े
८	चं०	मंदीका झटका १।) १।।)	ऊंचे में बेचों ।।) मन्दा	१२ बजेसे मन्दा चले ४) ५)
९	मं०	ओछी घटा बढ़ी चलें	नजराने खा जाओ	तारुणी द्वारा व्यापार करो।
१०	बु०	मन्दी में पोते करो ५ बजे	घटे भाव खरीदो	तेजी एक दो दिन में अच्छी हो
११	गु०	तेजींकी लाइन पकड़ेगा।	माल पोते रखना	तेजी आ लगने वाली है १०) १२)
१२	शु०	मन्दी ।।) तेजी १।।) २)	मन्दी =) तेजी ।।)	मंदी २) तेजी ५) होगी
१३	श०	एक बार मंदी ।।) ।=) होगी	मन्दी होने पर खरीदो	तेंजी २ बजे से चालू है
३०	चं०	प्रथम तेज ३ बजे से मन्दी	तेजी ।=) मन्दी ।।=)	तेजीके उछालेमें बेचना

श्रावण कृष्ण (बदी) पक्षका पोजिशन चांदी, सोना रुई इत्यादि।

श्रावण कृष्ण ३ बुधवारको मङ्गल हर्षल राशि युति होगी, यह बाजार को मन्दीकी तरफ ले जायेगी, जिसमें चांदी ४) ५) सोना १॥) २) रुई १५) २०) का झटका खाजायेगा, यह योग ४ दिनमें हो जाना चाहिये। फिर श्रावण कृष्ण ११ गुरुवारको इस प्रकारका योग आया है कि यह चांदी २) या ७) सोना ।॥) या ३) रुई १०) या ३०) टकोंकी तेजी बना दें। इस मांसमें शेयर, सरसों, गुड़ वारदाना कालीमिर्चमें भी घटा बढ़ी आये बगैर नहीं रहेगी, पुरानी फाइल द्वारा आपको सूचना दे दी है।

श्रावण शुक्ल (सुदी) की दैनिक रुख—

तिथि	वार	चांदी	सोना	रुई
१	मं०	नजराने लगादो	ओछी घटा बढ़ी	तारुणी द्वारा व्यापार करो
२	बु०	मन्दी ॥) हो सकती है	मन्दीमें ।) ।=) है	मन्दी ३) ४) रु० की आवें
३	गु०	योग तेजीके कम है	मन्दी अधिक होगी	मन्दीमें ओछा रुख रहेगा
४	शु०	योग तेजी १॥) २)	तेजी ।) ।=)	तेजी ६) ८) अवश्य होगी
५	श०	मन्दीमें खरीदना	प्रथम मन्दी आयेगी,	मंदीके झटकेमें माल ले लो
७	चं०	ओछी घटा बढ़ी होगी	मामूली तेजी मन्दी चले	आये उछालेमें बेचों
८	मं०	आजकी तेजीमें बेचो	तेजी ।=) ॥) हो जाय बेचो,	तेजी ३) ४) पर बेचना
१०	बु०	नजराने लगादो	ओछी घटा बढ़ी चलें	मामूली तेजी मन्दी है
११	गु०	मन्दी ॥) १) का योग,	मन्दी ।) तक हो खरीदो	आज ४ बजे खरीदो
१२	शु०	अचूक तेजी २) २॥)	तेजी १ बजे से चालू	तेजी ६) ७) अवश्य होगी
१३	श०	आज भी तेजी १) १॥)	तेजी खेलना सीखो	तेजी ५) ४) हो जायेगी।
१५	चं०	मन्दीका योग है	मंदी खेलना	मंदी होना चाहती है।

श्रावण शुक्ला (सुदी) का पोजीशन चांदी सोना रुई इत्यादि

श्रावण शु० ३ गुरुवारको बन्द बाजार खरीदना तथा ८ मङ्गलको बेचना चांदी ३॥) ४) सुवर्ण १।) २) रुई १५) १८) शेयर ३०) ३५) काली मिर्च ८) १०) वारदाना २।) ३) सरसों ।॥) १) गुड़ ।=) ।) तेज होगा फिर श्रावण शुदी १२ को आई हुई मन्दीमें खरीदना पूर्णमासी तक तेजीमें अच्छे पैसे मिलेगें।

भाद्रपद कृष्ण (बदी) पक्ष की दैनिक रुख—

तिथि	वार	चाँदी	सोना	रुई
१	मं०	तेजी १॥) २)	तेजी ।=) ।।)	तेजी ४) ५) हो जायगी
२	बु०	बाजार रुख देखना	अपने योग सम्भालो	तार फोन मिलाओ
३	गु०	प्रथम ।) मन्दा फिर तेज	११ बजे पीछे तेज ॥)	तेजी खेलना अच्छा है
४	शु०	आजके योग भी तेज हैं	तेजी वालोंकी जीत है	तेजी ३) ४) हो जायगी
५	श०	तेजी ॥) १) होना है	तेजी ।) ।=) करो	तेजी ४) ५) होगी
६	चं०	भारी तेजी चलेगी	तेजी अच्छी आयेगी	तेजीका माल पोते करो
७	मं०	घटे भाव खरीदो	मन्दीमें माल पोते करो	तेजी वाले जीतेंगे
८	बु०	ध्यान तेजीमें अधिक है	तेजी अवश्य आवेगी	घटे भाव खरीदो

तिथि	वार	चांदी	सोना	रुई
६	गु०	मन्दी ।।।) १) का झटका है	मन्दी ।।) हो जायगा	लेकिन मन्दीमें खरीदो
१०	शु०	प्रथम मन्दा फिर तेज	मन्दीके झटकेमें खरीदो	मामूली मन्दी आकर तेज
११	श०	मन्दी ।।) तेजी १)	मन्दी ≤) तेजी ।।।)	मन्दी प्रथम १२ बजेसे तेज
१३	चं०	मन्दीका झटका लगेगा	मन्दी खेलना	मन्दी अवश्य आयेगी
१४	मं०	मन्दीमें खरीदो २) २।।) तेज	तेजी अवश्य होगी	तेजी खेलना अच्छा है
३०	बु०	तेजी ३) ३।) हो सकती है	तेजी ।।) ।।) होना है	तेजी खेलो ३ दिन में १५) २०)

भाद्रपद कृष्णका पोजीशन चांदी सुवर्ण रुई इत्यादि

इस पक्षमें हर वस्तु मात्र तेजीमें चलेगी, आज जिस वस्तुके खिलाड़ी है उसीको घटे भावोंमें खरीदलो और तेजी होने पर मुनाफा तथा लाभ उठाते रहो, यहां तेजीके अच्छे उछाले लगेंगे।

भाद्रपद शुक्लपक्ष (शुदी) का दैनिक रुख—

तिथि	वार	चांदी	सुवर्ण	रुई
१	गु०	उछाले में बेचो	तेजी ।।) होकर मन्दा	आजके ऊंचे भाव बेचना २ बजे
३	शु०	नजराने लगा दो	मोटी घटा बढ़ी हैं	बाजार रुख देखना
४	श०	तेजी बताता है	तेजी ।।) ।।=) हो जाये	रुख तेजीका चलेगा
६	चं०	ऊंचे भावोंमें बेचो	घटे भाव खरीदो	दोनों तरफ बाजार झुलता रहेगा
७	मं०	मोटी तेजी मन्दी है	नजराने लगाना	तार फौनकी खबर अवश्य लें
८	बु०	आजकी अच्छी मंदी	तेजीमें बेचो	आज ६) ७) टूट जायेंगे
९	गु०	सुबह खरीदो ३) ४) तेज	तेजी वालोंको ।।।) १)	अब तेजी नहीं रुकेगी १०) १२)
१०	शु०	योग घटे भावोंसे तेज	तेजी वाला कमा लेगा	तेजीमें आज नफा लेना ४ बजे
११	श०	मंदी १।।) २) होगी	मंदीको कोई नहीं रोकेगा	मंदी खेलना ३) ४) मिलेंगे
१३	चं०	आखिरी मन्दी है	मन्दीमें खरीदना	माल किसी भी भावमें लेलो
१४	मं०	तेजी ।।।) १)	तेजी ।) ।=)	तेजी २) ३) अवश्य होगा
१५	बु०	घटे भाव खरीदो	ग्रह गणना तेजीमें हैं	तेजी वाले मुनाफा ले लेंगे

भाद्रपद सुदीका पोजीशन चांदी, सोना, रुई, गुड़ इत्यादि

इस पक्षमें हर वस्तुमें अच्छी घटा बढ़ी होना चाहती है, टाईमवार खरीद बेच करते नफा बढ़ाते रहना, दोनों और बाजार चक्कर लगा दें, ऐसी चक्करकी वार्ता अच्छे भले मनुष्योंका काम नहीं है, लेकिन समय सावधानीका है।

आश्विन कृष्णपक्ष (बदी) की चांदी सुवर्ण रुईकी दैनिक रुख—

तिथि	वार	चांदी	सुवर्ण	रुई
१	गु०	संयोग मंदे है खरीदो	आजकी मंदामें लेना	खरीद करना ४ बजे
२	शु०	रुख तेजी ।।।) १)	तेजी ।) ।=)	तेजी ४) ५)
३	श०	तेजी चलेगी २) २।)	तेजी ।।) ।।=)	तेजी ३) ४)
५	चं०	उछालेमें बेचो	योग मन्दीके हैं	उछाला देकर टूटेगा
६	मं०	प्रथम मन्दा ३ बजेसे तेज	मन्दीमें खरीदो तेज	नजराने गल जायेंगे

७	बु०	तेजीमें बेचो २ बजे	फिर मन्दा आया है	ऊंचे भावोंमें बेचो
८	गु०	तेजी ३) ३॥)	तेजी नहीं रुकेगी ॥) ।॥-)	तेजी ७) ८) हो जाये
९	शु०	तेजी ।॥) १) फिर मन्दा	आजकी तेजीमें बेचो	तेजीका अन्त समझना
१०	श०	मन्दी चलेगा १॥) २)	मन्दी खेलो चांस है,	देर भले ही हो जायें रुख मन्दा
१२	चं०	योग मन्दीमें गया है	मन्दी ।॥) १) हो जाये	मन्दी खेलना सीख लो
१३	मं०	मन्दीमें ।॥) १) टूटेगा	आज की मन्दीमें नफा लो	नफा खाना ही अच्छा है
१४	बु०	दोनों तरफ घटा बढ़ी	नजराने लगादो	दुतर्फा योग अच्छा नहीं
३०	गु०	तेजी १) १।) होगी	तेजी खेलो ॥) बढ़ेंगे	खुलते बाजार से तेज ३) ४)

आश्विन कृष्णका पोजीशन चांदी सुवर्ण रुई गुड़ इत्यादिका

आश्विन कृष्ण १ से बाजार दोनों तरफ चलता हुआ तेजी पकड़ेगा, तिथि ७ से अच्छी तेजी शेयर सरवों बारदाना में चलेगी। चादी ४) ५) सुवर्ण ६॥) २) रुई १५) १८) लगभग ६ दिनमें बढ़ जायेगी। तिथि १० से भारी मन्दीके झटके लगेंगे।

आश्विन शुक्लपक्ष (सुदी) में चांदी सुवर्ण रुईकी दैनिक रुख—

तिथि	वार	चांदी	सुवर्ण	रुई
१	शु०	तेजी ।॥) १)	तेजी ।) =)	तेजी २) ३)
२	श०	तेजी चलेगी	आज तेजीका नफा लो	बन्द बाजार डबल बेचो
४	चं०	मन्दीमें २) २॥)	टूटता बाजार है	मन्दी ४) ५) की होगी
५	मं०	दोनों तरफ घटा बढ़ी	नजराने लगादो	बाजार रुख देखना
७	बु०	दोनों तरफके योग हैं	आज ॥) की घटाबढ़ी	तारुणी द्वारा खेलो
८	गु०	आज अच्छी तेजी २) २॥)	तेजी नहीं रुकेगी	तेजी खेलो ७) ८)
९	शु०	बाजार ओछी लाईनका है	दुतर्फा लगादो	तारुणी करते रहो

इस समय ६ दिनमें प्रथम तेजी चलेगी और ति० ४ चन्द्रवारसे मन्दी चालू हो जायेगी। खास पाईण्ट हमारा चांदी सुवर्ण पर है, अन्य वस्तु तो चांदकी बांदी हैं।

रुई चांदी सोना गुड़ आदिको अनुभूत रिपोर्ट

[ले०—ज्यो०भू०दै०र० श्री पं० गिरिधारीलालजी शर्मा]

प्रथम सप्ताह—

ता० ५ जुलाईसे १० जुलाई तक-प्रायः प्रत्येक वस्तु तेजीमें रहेगी। रुईमें साधारण घटबढ़ रहेगी। ता० ५ को प्रत्येक वस्तुमें घटबढ़ रहेगी। मंदी हो उसको अवश्य खरीदो। तेजीवालोंको दूसरे दिन २ बजे तक देखके खरीदो, यहां वर्षाका प्रादुर्भाव पूर्णरूपसे है।

दूसरा सप्ताह—

ता० ११ जुलाईसे १८ जुलाई तक-४ दिन रुईके अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु समधारणामें रहेगी। चांदी सोना समभाव, रुईमें अच्छी तेजी। ता० ११-१२ में प्रत्येक वस्तु मंदी। दोनों दिन नहीं तो भी एक दिन तो अवश्य मंदी।

ता० १३-१४ में गुड़ खांड रुईमें अच्छी तेजी या सम भाव रहेगा। ता० १४ को सायंकाल बाजार बंद होते समय जो वस्तु तेज हो उसको खरीदो। ता० १५ १६ में चांदीमें तेजी अवश्य होगी। ता० १७ १८को प्रत्येक वस्तुमें तेजी। ता० १८ से युद्धका पूर्ण योग बनता है।

तीसरा सप्ताह—

ता० १९ से ५ जुलाई तक रुई चांदी खांड तेज होके पीछे ३।४ दिनमें मंदा रहेगा। गुड़ यहां पर तेज ही रहेगा, मंदा नहीं है। ता० १९ को रुईमें तेजी चांदी मंदी। ता० २० को प्रत्येक वस्तु तेज। ता० २१ को दो तरफा लगावें। ता० २२-२३ में फीचर दोनों दिन मंदा, नहीं तो एक दिन अवश्य मंदा, उसे कोई नहीं रोक सकता। ता० २२-२३ में रुई मंदी, ता० २५ को विशेष घटबढ़ दो तरफा लगावें निश्चय लाभ होगा।

चौथा सप्ताह—

ता० २६ से ३१ जुलाई तक—रुई चांदी गुड़ खांड मंदीमें रहेगा, या साधारण घटबढ़में पड़ा रहेगा। ता० २६ को मंदी अवश्य होगी, चाहे कभी होवे। ता० २७ को रुई मंदी, चांदी गुड़ तेज। तमाखू मंदी। ता० २७ को रुईके फीचर २ या ४ अवश्य मंदा आवेगा। ता० २८ २९ को दोतरफा लगाओ। ता० ३० के २ बजेसे गुड़में तेजी, ता० ३१ को मंदी या साधारण बाजार रहेगा। ता० २९ को रुईकी तेजी कोई नहीं रोक सकता।

पाँचवां सप्ताह—

ता० १ से ८ अगस्त तक—घटबढ़से तेजी रहेगी। ता० १ को तेजी होके मंदी होगी। ता० २ को प्रत्येक वस्तु तेज। ता० ३ को और ४ को दोतरफा लगावें। ता० ४ को पूर्ण मंदीका योग है ४ बजेसे। ता० ५ को दिन भर घटबढ़ रहेगा, पहले घटेगा फिर बढ़ेगा। ता० ६-७ को रुईके अतिरिक्त और वस्तु तेज। ता० ८ को १ बजे तक तेजी पीछे मंदी। अरंडा तीसी गुड़ तेज, तीसी अवश्य तेज।

छठा सप्ताह—

ता० ९ से १६ अगस्त तक रुईके अतिरिक्त और सब वस्तु तेज, रुई मंदा। ता० ७-९ को प्रत्येक वस्तु घटबढ़में रहेगी। ता० १० को प्रत्येक वस्तु तेज। रुईके फीचर तेज, १२ या २ बजे बाद अच्छी तेजी। ता० ११ को तेजी होके पीछे मंदी, सायंकाल बन्द बाजार मंदा। ता० १२ १३ दोनों मंदी नहीं तो एक अवश्य मंदी। ता० १५ को रुई अवश्य मंदा। ता० १६को घटबढ़ अच्छी दोतरफा लगावें। चांदी मंदी रुईमें घटबढ़। ता० १६को वर्षा अनिवार्य है।

सातवाँ सप्ताह—

ता० १७ से २४ अगस्त तक—पहले ३-४ दिन तेजी के हैं, पीछे मंदी है। ता० १७ को रुई मंदी होगी, वहां खरीदो। ता० १८ को दो तरफा लगाओ। ता० १९ को घटे तो खरीदो, बढ़े तो बेचो। ता० १७-१८ को वर्षा। ता० २१ को रुई बंद बाजारमें भी तेजी। ता० २२ को २ बजे तक या २ बजेसे अवश्य तेजी। ता० २३ को प्रत्येक वस्तु मंदी। ता० २४ को तीसी एरण्डा गुड़ तेज और वस्तु मन्दी।

आठवाँ सप्ताह—

ता० २५ से ३१ अगस्त तक—गुड़ चांदी साधारण या तेजी, रुई मंदी। जनरलमें ऐसा विचार है कि चांदी घटे भाव खरीदो। ता० २५ को दोतरफा लगावें लाभ है। ता० २६ को तेजी। ता० २७ को मंदी, ता० २८ कों सामान्य, ता० २९ को यदि चांदी तेज रहे तो आगेको निश्चय तेजी समझो। हमारा ध्यान तेजीमें है। ता० ३० को तेजी होके मंदी। ता० ३१ को तेज।

नौवाँ सप्ताह—

ता० १ से ७ सितम्बर तक—तेजी वालोंके और मंदी वालोंके भाव आते रहेंगे। एक तरफा कार्य नहीं है, तेजीसे मंदी, मंदीसे तेजी होती रहेगी। सोने चांदीमें घटबढ़ रहेगी। रुईमें भी एक तरफा नहीं है, बढ़े भाव बेचो। ता० १ को तेजी खुलके बाजार मंदा होगा। ता० २ को घटबढ़. ता० ३ को १ बजेसे तेजी। ता० ४ को साधारण भाव रहेगा ता० ५ को तेजी। ता० ६ को मंदी। ता० ७. को तेजी रहेगी।

१०वाँ सप्ताह—

ता० ८ से १५ सितम्बर तक—साधारण घटबढ़से तेजी रहेगी। गुड़ खांडके अतिरिक्त सब बाजार तेजीमें रहेगा। ता० ८ को सायंकाल बाद बाजार जहां तेजी होवे वहां लेना अच्छा है। ता० ९-१०-११ प्रायः तेज रहेगा। ता० १२ को रुई चांदी अवश्य तेजी। ता० १३ को रुई अवश्य मंदी। ता० १४ को तेजी होके मंदी होगी। ता० १५ को रुई अवश्य मंदी और वस्तुओंकी नहीं कह सकते ता० १५ को गुड़ खांड तेज।

११वाँ सप्ताह—

ता० १६ से २२ सितम्बर तक—रुईमें तेजी। चांदीमें घटबढ़ होके ता० २० से मंदी रहेगी। रुईमें भी घटबढ़ अवश्य होगा, घबराके मंदीमें कहीं बेच नहीं देना। ता० १६-१७ को अच्छी घटबढ़ रहेगी। ता० १९ को रुई चांदी मे तेजी होगी, वहां बेचो। ता० २२ तक अवश्य लाभ होगा। ता० २१-२२ अवश्य मंदी, दोनों नहीं तो भी एक की मंदी कोई नहीं रोक सकता। ता० २१ से अन्नादिककी तेजी और जगत्में उत्पात रहेगा। स्वल्परूपसे वर्षा भी होगी।

१२वाँ सप्ताह—

ता० २३ से ३० सितम्बर तक—पहले मंदी होके तेजी होगी। ता० २३ से २६ तक रुई चांदी निश्चय मंदी। गुड़ और लोह लकड़ी, काला पदार्थ मात्र तेज। रुई चांदी बढ़े तो बेचो, घटे तो भी बेचो ता० २६ तक। ता० २५-२६ में अच्छी मन्दी। ता० २७को अच्छी तेजी निश्चयसे होगी। ता० २८ को ४ बजे तक तेजी। ता० २९-३० कों दोतरफा लगाना अच्छा है। ता० २९ को एक तरफी चाल है। ता० ३० को घटबढ़ रहेगी। आगे करने वाला ईश्वर है।

—❀×❀—

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग' से]

आषाढ़ शुक्ला	१० मङ्गलवार	ता० ५ जुलाई	श्रीस्वाध्यायसदन स्थापना दिवस
	११ बुधवार	ता० ६ ,,	देवशयनी एकादशी व्रत, चतुर्मासारम्भ
	१२ गुरुवार	ता० ७ ,,	प्रदोषव्रत
	१४ शनिवार	ता० ९ ,,	सत्यव्रत, वायुपरीक्षा ध्वजारोपण
	१५ रविवार	ता० १० ,,	श्रीगुरु पूजा व्यास १५ पूजा
श्रावण कृष्ण	३ बुधवार	ता० १३ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ९।५१
	६ शनिवार	ता० १६ ,,	कर्क संक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल मध्याह्न पर्यन्त
	११ गुरुवार	ता० २१ ,,	कामिका एकादशी व्रत
	१३ शनिवार	ता० २३ ,,	शनि प्रदोष व्रत
	३० सोमवार	ता० २५ ,,	सोमवती अमावस्या हरियाली ३०
श्रावण शुक्ला	१ मङ्गलवार	ता० २६ ,,	नक्तव्रतारम्भ
	२ बुधवार	ता० २७ ,,	चन्द्र दर्शन
	३ गुरुवार	ता० २८ ,,	मधुश्रवा ३ सिंधारा तीज
	५ शनिवार	ता० ३० ,,	नाग पञ्चमी
	७ सोमवार	ता० १ अगस्त	श्रीतुलसी जयन्ती
	९ मङ्गलवार	ता० २ ,,	मेला श्रीनयनादेवी व चिन्तपूर्णी
	११ गुरुवार	ता० ४ ,,	पवित्रा एकादशी व्रत
	१३ शनिवार	ता० ६ ,,	शनिप्रदोष व्रत
	१५ सोमवार	ता० ८ ,,	उपाकर्म ऋषितर्पण रक्षाबन्धन (रक्खड़ी) सत्यव्रत श्री अमरनाथ (काश्मीर) यात्रा
भाद्रपद कृष्ण	३ गुरुवार	ता० ११ ,,	कजली ३
	४ शुक्रवार	ता० १२ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ९।१३
	६ सोमवार	ता० १५ ,,	भारतीय स्वतन्त्रता दिवस
	७ मङ्गलवार	ता० १६ ,,	सिंह संक्रान्ति मु० १५ पुण्यकाल स्टे० टा० प्रातः ७।१० [उपरान्त श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त गृहस्थोंके लिए चन्द्रोदय स्टे० टा० ११।४
	८ बुधवार	ता० १७ अगस्त	जन्माष्टमी व्रत वैष्णवोंका चन्द्रोदय स्टे० टा० ११।४०
	९ गुरुवार	ता० १८ ,,	गुग्गा ९ श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती
	११ शनिवार	ता० २० ,,	अजा एकादशी व्रत
	१२ रविवार	ता० २१ ,,	प्रदोषव्रत गोवत्सा १२
	३० बुधवार	ता० २४ ,,	कुशोत्पाटिनी ३० सती कुलदेवी पूजा
भाद्रपद शुक्ल	१ गुरुवार	ता० २५ ,,	चन्द्रदर्शन
	३ शुक्रवार	ता० २६ ,,	हरतालिका ३ मङ्गला गौरी व्रत वराह जयन्ती

भाद्रपद शुक्ल	४ शनिवार	ता० २७ अगस्त	पत्थर (कलङ्क) चौथ चन्द्रदर्शन निषिद्ध चन्द्रास्त स्टे० टा० ८।४२, जैन सम्वत्सरी
	५ रविवार	ता० २८ ,,	ऋषि पञ्चमी
	८ बुधवार	ता० ३१ ,,	श्रीदधीचि जयन्ती श्रीराधाष्टमी दूर्वा ८
	९ गुरुवार	ता० १ सितम्बर	श्रीचन्द्र ९ (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)
	११ शनिवार	ता० ३ ,,	पद्मा (जलझूलनी) एकादशी व्रत
	१२ रविवार	ता० ४ ,,	प्रदोषव्रत वामन १२ मेला अम्बाला पटियाला
	१४ मङ्गलवार	ता० ६ ,,	अनन्त १४ व्रत, सत्यव्रत
	१५ बुधवार	ता० ७ ,,	प्रौष्ठपदी श्राद्ध
आश्विन कृष्ण	१ गुरुवार	ता० ८ ,,	महालय (पितृपक्ष) प्रारम्भ
	४ रविवार	ता० ११ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ८।३७
	७ गुरुवार	ता० १५ ,,	धर्ममातण्ड राजर्षि श्री १०५ र जासाहब सोलन जन्मोत्सव
	८ शुक्रवार	ता० १६ ,,	कन्या संक्रान्ति मु० १५ पुण्यकाल अपराह्णे
	११ रविवार	ता० १८ ,,	इन्दिरा एकादशी व्रत स्मार्त गृहस्थोंके लिए
	१२ सोमवार	ता० १९ ,,	वैष्णवोंका ११ व्रत, सन्यासी श्राद्ध
	१३ मङ्गलवार	ता० २० ,,	भौमप्रदोष व्रत
	३० गुरुवार	ता० २२ ,,	महालय समाप्ति सर्व पितृश्राद्ध और विसर्जन
आश्विन शुक्ल	१ शुक्रवार	ता० २३ ,,	शारदीय नवरात्रारम्भ घटस्थापन मातामह श्राद्ध
	२ शनिवार	ता० २४ ,,	चन्द्रदर्शन
	५ सोमवार	ता० २६ ,,	ललिता ५ शान्ति ५
	७ बुधवार	ता० २८ ,,	श्रीसरस्वत्याऽऽवाहन
	८ गुरुवार	ता० २९ ,,	श्री दुर्गा ८ महाष्टमी मेला श्रीज्वालामुखी
	९ शुक्रवार	ता० ३० ,,	महा ९ श्रीसरस्वती पूजन महानिशामें बलिदान
	१० शनिवार	ता० १ अक्टूबर	विजया १० दशहरा श्रीसरस्वती विसर्जन

पूनाका ज्योतिष-सम्मेलन

ता० ७ मई १९४६ को सायंकाल ५॥ बजे पूना भावे-स्कूलके असेंम्बली हॉलमें जयपुरकी वेधशालाके अध्यक्ष सिद्धान्तपंचानन श्री पं० केदारनाथजी राजज्योतिषीके सभापतित्वमें ज्योतिषसम्मेलन प्रारम्भ हुआ।

प्रारम्भमें सम्मेलनके स्वागताध्यक्ष श्री ज०स० करंदीकरजीका भाषण हुआ। तदनन्तर पुरीमठके जगद्गुरु श्री शंकराचार्यजी महाराजने आशीर्वादात्मक भाषणमें कहा कि "आज हमारे हिंदुसमाजमें धार्मिक सामाजिक आदि विषयका निर्णय कालदर्शक पञ्चाङ्गोंसे किया जाता है, जिस प्रकार समाज वर्तमान स्थितिमें विभिन्न मतवादियोंके रूपमें पाया जाता है, वैसे ही मतभेद पञ्चाङ्गोंमें भी पाये जाते हैं। कालनिर्णयात्मक पञ्चाङ्गोंमें मतभेद होना महान् दोष है। उपस्थित विद्वानोंको हठ और दुराग्रह छोड़कर जो शास्त्रोक्त हैं, जो मान्य हैं जो परम्परासे युक्त होते हुए दृक्तुल्यताके सांचेमें बैठता हो—ऐसे निर्णयको स्वीकार करना परम आवश्यक है। पञ्चाङ्गोंमें मतभेदके कारण धार्मिक श्रद्धावान् जनताका विश्वास धार्मिक विषयोंसे हटता जा रहा है और इससे धर्म-ह्रास होनेके चिन्ह दिखाई देते हैं, इन सब मतभेदोंको मिटाकर जनताको शास्त्र शुद्ध, गणित शुद्ध पञ्चाङ्ग देना यह पञ्चाङ्गकर्ताओंका कर्तव्य है अतः मैं आशा रखते हुए आशीर्वाद देता हूं कि निरभिमान वृत्तिको रखते हुए पक्षपातको छोड़कर पञ्चाङ्गमें ऐक्यताको आप प्रस्थापित करें। ईश्वर आपको उसमें सफलता देगा।"

सभापतिका प्रारम्भिक भाषण

माननीय सभापति महोदयने भाषणको प्रारम्भ करते हुए कहा कि—"महाराष्ट्रसे मैं अपरिचित नहीं हूं, महाराष्ट्रमें पञ्चाङ्ग-संशोधन विषयमें बहुत प्रयत्न हुआ है और हो रहा है इस कारण मुझे हर्ष है। प्रथम प्रयास शके १८२६ में बम्बई परिषद्में प्रारम्भ हुआ, उस समय गुरुजीके साथ मैं भी सम्मेलनमें उपस्थित था। अनेक प्रयत्न करने पर भी एकवाक्यता नहीं होते देख स्व० तिलक महोदयने महाप्रयाससे उपस्थित विद्वानोंसे परामर्श कर निर्णय किया। किंतु उस सम्मेलनकी आगेकी कार्यवाही स्थगित सी हो गई, इसके बाद भी कई प्रयत्न हुए हैं। एकवाक्यता तो दूर रही उसमें अनेकों मत भेद पड़ गये हैं, और एकवाक्यतासे हम काफी दूर जा रहे हैं। ज्योतिषशास्त्र की उन्नति महाराजा जयसिंहजीने अनेक मार्गोंसे की है, जिसमें आपने भारतवर्षमें जयपुर, उज्जैन, दिल्ली, आदि नगरोंमें विशाल वेधशालायें बनवाई, उन वेधशालाओं से लिये गये वेध अर्वाचीन वेधोंसे ठीक ठीक मिलते हैं जिसका हम भारतवासियोंको अभिमान है कि भारत भी वेध-विज्ञानमें न्यून नहीं है, फिर भी पाश्चात्योंके किये प्रयत्न, उनकी बुद्धिमत्ता, उनकी कार्यप्रणाली और शास्त्र संशोधनके दृढ़ निश्चयको जब हम देखते हैं तो भारतीय विद्वानोंकी और पञ्चाङ्गोंकी हमें दया आती है।, मैं मानता हूं कि महाराष्ट्रमें पर्याप्त संशोधन अवश्य हुआ है, परन्तु उतना ही मतभेद पाया जाता है, जो कि अन्यत्र कहीं देखने में नहीं आता, जिसमें रैवतपक्ष, केतकीपक्ष, ग्रहलाघव पक्ष वा सूर्यसिद्धांत पक्ष ऐसे तीन प्रमुख पक्ष है, केतकी पक्ष अयनांशमें ग्रहलाघव तथा सूर्यसिद्धांतके सान्निध्यमें है, परन्तु रैवतपक्ष सबसे ही पृथक् पक्ष है। महाराष्ट्र के स्व० केतकरजीने तथा छत्रेजीने जो संशोधनात्मक कार्य किये हैं वे प्रशंसनीय हैं। इसी प्रकार कार्य प्रचलित रहना ही ज्योतिष शास्त्रका मूल तत्त्व है। भारतवर्षमें २०० के लगभग पंचाङ्ग प्रकाशित होते होंगे परन्तु उनकी ग्रहस्थिति ग्रहण अधिकांशमें ठीक दिखाई नहीं देते हैं। पंचाङ्गोंमें जिस ग्रन्थसे ग्रह बनाये हैं उसी ग्रन्थके अनुसार आये हुए अयनांश मिलाने पर वह ग्रह वेधतुल्य होने चाहिए, परन्तु उनमें बहुत अन्तर आता है। उदाहरणार्थ बनारस का 'विश्वपंचाङ्ग' लीजिये उसीके ग्रह और उसीके अयनांश युक्त करने पर ग्रहोंमें १० से १२ अंशों तक का अन्तर आता है, यह अक्षम्य बातें भारतके लिये शोभा नहीं देती। यह मैंने अनेक बार स्व. महामना पं० मालवीयजीको बताया

उनको भी यह बात खटकती थी, अब उसमें ग्रहण वेध-तुल्य गणितसे दिया जाता है, किन्तु अन्य सब गणित स्थूलप्राय होनेसे वह पंचाङ्ग ज्योतिष शास्त्र प्रणाली देखते आधुनिक युगमें कालनियामक शुद्ध नहीं गिना जायगा। गुरुवर्य श्रीबापूदेवजीका पञ्चाङ्ग सर्वाङ्गशुद्ध है। तात्पर्य यह कि पञ्चाङ्ग दृक्तुल्य होना परम आवश्यक है। हमारे यहां जयपुर राज्यमें भी प्राचीन (पुराने) गणितसे पञ्चाङ्ग प्रकाशित हुआ करता था। एक समय पञ्चाङ्गमें ग्रहणका जो समय दिया हुआ था उस समयमें ग्रहणका स्पर्श नहीं होते देख स्व० महाराज माधवसिंह जी ने पण्डितोंको बुलाया, परन्तु किसी पण्डितने ठीक तौर पर उत्तर नहीं दिया, जयपुरके लालचन्द्रजी ने 'केतकी' करण-ग्रन्थसे ग्रहणकी गणित बनाई थी, किसीने उनका नाम अर्ज किया, और महाराजाने बुलाकर प्रश्न किया कि 'ग्रहण स्पर्श अभी तक क्यों नहीं हुआ?' उन्होंने घड़ी और गणित देख कर कहा कि—"हजूर अब ६ मिनिटमें ग्रहणका स्पर्श होगा।" ठीक ६ मिनिट होते ही ग्रहणका स्पर्श हुआ, दान विधि आदि होने पर महाराजा साहबने प्रश्न किया कि— "यह गणित कैसे बनाया?" लालचन्द्रजी ने कहा—'केतकी नामक करणग्रन्थ (नूतन ग्रहलाघव) महाराष्ट्रके विद्वान् केतकरजी ने बनाया है, उसी ग्रन्थसे मैंने गणित बनाई है।' यह सुन कर हजूरको बड़ी प्रसन्नता हुई, आपने आज्ञा दी कि 'इसी केतकीसे मेरे राज्यमें ग्रह, ग्रहण, उदयास्त, जन्मपत्र आदि बनाये जांय।' आज तक जयपुर राज्यमें इसी केतकीके गणितसे सब गणित होता है। तदनन्तर संशोधनात्मक कार्य जयपुरमें बहुत हुआ है। जिन सारणियोंसे 'नाटिकल अल्मानक' बनाया जाता है उन सारणियोंको मँगवा कर भारतीय पद्धतिमें रूपान्तर कर लिया गया है, जिससे अति स्वल्प श्रमसे आप दैनिक ग्रह बना सकेंगे। और मैंने "मानकल्पलता" नामकी सारणी बनाई है, जिससे भी बहुत थोड़े श्रमसे ग्रहसाधन होते हैं वे केतकीसे एवं प्रत्यक्ष वेधसे ठीक२ मिलते हैं। उस सारणाके परीक्षक श्री द० वें० केतकरजी को राज्यने नियुक्त किये हैं, उनके परीक्षणके अनन्तर सारणी छपवा कर विद्वानोंको दूँगा। सारणीके मूलाङ्क मैंने श्री छत्रेके ग्रहसाधन कोष्ठकसे लिए हैं, इसी प्रकार संशोधनात्मक कार्य क्रमशः चलते रहना चाहिये, तभी ज्योतिषशास्त्र जीवित रह सकता है। प्राचीन सिद्धान्तोंका देखनेसे एक बात अवश्य सिद्ध होती है कि ग्रह-स्थिति प्रत्यक्ष वेधसिद्ध लेनी चाहिए। इसका समर्थन प्रत्येक ग्रन्थोंमें पाया जाता है, जिस पञ्चाङ्गके ग्रह ग्रहण आदि प्रत्यक्ष दिखाई नहीं दे वह पञ्चाङ्ग ही किस कामका। उत्तरीय भारतमें गुरुवर्य बापूदेवजीके पञ्चाङ्गका सर्वाङ्ग शुद्ध पञ्चाङ्गके रूपमें प्रादुर्भाव हुआ। अब कुछ वर्षोंसे 'अखिविश्व-विजय-पञ्चाङ्ग' प्रकाशित होता है— इसकी सम्पूर्ण गणित और तिथ्यादि पञ्चाङ्ग सर्वाङ्ग शुद्ध है। वैसे ग्रह, ग्रहण, उदयास्त, सूक्ष्मवेधसिद्ध केतकीसे कुछ पञ्चाङ्ग देने लगे हैं, जिसमें मेरे शिष्य पं० मुकुन्द-वल्लभजीने 'मार्तण्डपञ्चाङ्ग' में भी इस प्रकार देना प्रारम्भ कर दिया है, इसीप्रकार सरस्वती पञ्चाङ्ग भी प्रकाशित होता है, किंतु अन्य गणित (तिथ्यादि) अभी तक इन पंचांगों में प्राचीन ही रहती हैं, क्रमशः इनमें भी सुधार हो जायगा। मुझे इस विषय पर हर्ष है कि सर्वप्रथम प्रयास शुद्ध गणित देनेका महाराष्ट्रमें ही प्रारम्भ हुआ है, साथ ही खेद भी है कि यहां पञ्चाङ्गोंमें भारी मतभेद है, इस मतभेद को मिटाना चाहिए। लो० मा० तिलक महोदय आज उपस्थित होते तो इस मतभेदको वह चलने नहीं देते, और ऐक्यता निर्माण कभीकी हो जाती, उन्हींके दृष्टिकोणको देखते हुए उनके अनुयायियोंको भी हठ छोड़कर शास्त्र संशोधन द्वारा ऐक्यताके मार्गकी ओर आगे बढ़ना चाहिए। धर्मशास्त्रकी और फलित शास्त्रकी ग्रहस्थिति प्रत्यक्ष दृक्तुल्य होगी तभी धर्मनिर्णय तथा फलित निर्णय यथार्थ होगा। अस्तु।"

इस प्रकार सारगर्भित विद्वता पूर्ण भाषण होनेके बाद प्रथम दिनकी कार्यवाही पूर्ण हुई। दूसरे तीसरे दिनकी कार्यवाही प्रस्ताव और विद्वान् ज्योतिषियोंके भाषणोंका सारांश आगामी अङ्क में देंगे।

—कृष्णचन्द्र शर्मा ओझा